प्रस्तावना।

हमारे सभी सिद्धक्षेत्रोंकी पूजाएं प्रकट न होनेसे प्रत्येक सिद्धक्षेत्रकी पूजा करनेके लिये बड़ी तकलीफ थी जिसको दूर करनेके लिये देवरी-निवासी श्री० कुन्दनलालजी जैन परवारने १२ वर्ष हुए अनेक जगहसे परिश्रमपूर्वक संग्रह करके यह पूजा-संग्रह प्रथमवार छपाया था जिसमें २० पूजाओंका संग्रह था जो शीघ्रतापूर्वक बिक जानेपर इसके पुनर्मुद्रणका अधिकार श्री० कुन्दनलालजीसे लेकर हमने इसकी दूसरी आवृत्ति ७ वर्ष हुए प्रकट की थी, जिसमें तीन विशेष सिद्धक्षेत्र पूजाओंके अतिरिक्त देव-शास्त्र-गुरु पूजा, शांति-विसर्जन स्तुति व निर्वाणकांड और बढ़ा दिया गया था। यह दूसरी आवृत्ति भी एक वर्ष हुए बिक जानेसे हमने इसकी तीसरी आवृत्ति निकालनेका जिससमय निश्चय किया उसी समय यह विचार भी उपस्थित हुआ कि इसके साथ २ सभी अतिशयक्षेत्रोंकी पूजाएं भी संग्रह करके प्रकट करदी जावें तो यात्रियोंको प्रत्येक अतिशयक्षेत्रकी पूजा करनेका लाभ भी सुलभतासे मिल सके इसलिये जैनमित्र व दिगम्बर जैन द्वारा इसकी सूचना कई दफे निकाली व सभी अतिशयक्षेत्रके मुनीमों आदिसे पत्रव्यवहार किया जिससे हमें २१ अतिशयक्षेत्रोंकी पूजाएं प्राप्त होसकीं उनको संशोधनपूर्वक सम्मिलित करके यह तीसरी आवृत्ति कुल ४४ पूजाओं सहित प्रकट की जाती हैं। इन पूजाओंको भेजनेवाले भाइयोंका उपकार हम नहीं भूल सकते जिनमें अंकलेश्वर (सूरत) के भाई मोहनलाल रतनचंद परेखने अपने यहांके प्राचीन हस्तलिखित शास्त्रसे केशरियाजी, चूलगिरि पार्श्वनाथ, संकटभंजन पार्श्वनाथ, स्तवनिधि पार्श्वनाथ, अंतरीक्ष पार्श्वनाथ व कुलपाक तीर्थ (माणिकस्वामी) की पूजाएं परिश्रम पूर्वक भेजी थीं, उनके हम विशेष आभारी हैं। आशा है इस पूजा-संग्रहसे यात्रियोंको जहां २ यात्रार्थ जावें वहांकी पूजा पढ़नेमें बहुत सुभीता होगा।

सूरत	निवेदक—
वीर नि० सं० २४५४	मूलचन्द किसनदास कापड़िया
अषाढ़ वदी १	प्रकाशक।

पूजन-सूची

सूचना-प्रत्येक पूजन करनेके प्रारंभमें देव-शास्त्र-गुरुपूजा करें व अंतमें शांति-विसर्जन पाठ तथा स्तुतिपाठ अवश्य पढ़ें। प्रकाशक।

देव-शास्त्र-गुरुकी पूजा।

अडिल्ल छन्द ।

प्रथम देव अरहन्त सु श्रुतसिद्धांत जू ।
गुरु निरग्रंथ महंत मुकतिपुर पंथ जू ॥
तीन रतन जगमाहिं सो ये भवि ध्याइये ।
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये ॥ १ ॥

दोहा ।

पूजों पद अरहंतके, पूजों गुरुपद सार ।
पूजौं देवी सरस्वती, नितप्रति अष्टप्रकार ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर ! संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

गीता छन्द ।

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर, वंदनीक सुपदप्रभा ।
अति शोभनीक सुवर्ण उज्वल, देख छवि मोहित सभा ॥
वर नीर क्षीरसमुद्रघट भरि, अग्र तसु बहुविधि नचूं ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु, निरग्रंथ नित पूजा रचूं ॥१॥

दोहा ।

मलिनवस्तु हरलेत सब, जलस्वभाव मलछीन ।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

जे त्रिजग उदरमंझार प्रानी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे॥
तसु भ्रमरलोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घसि सचूं।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रंथ नितपूजा रचूं॥२॥

दोहा।

चन्दन शीतलता करै, तपतवस्तु परवीन।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥ २॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०।

यह भवसमुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परमपावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही॥
उज्वल अखंडित सालि तंदुल-पुंज धरि त्रयगुण जचूं।
अरहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रंथ नितपूजा रचूं॥३॥

दोहा।

तंदुल सालि सुगंधि अति, परम अखंडित बीन।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥३॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०।

(यहांपर अक्षतोंके चढ़ानेमें तीन पुंज करने चाहिये, अधिक नहीं)

जे विनयवंत सुभव्य-उरअंबुज-प्रकाशन भान हैं।
जे एकमुख चारित्र भाषत, त्रिजगमाहिं प्रधान हैं॥
लहि कुंदकमलादिक पहुप, भव भव कुवेदनसौं बचूं।
अरहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रंथ नितपूजा रचूं॥४॥

दोहा ।

विविधभांति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन ।
तासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥४॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

अति सबल मदकंदर्प जाको, क्षुधा उरग अमान है ।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सु गरुड़समान है ॥
उत्तम छहों रसयुक्त नित नैवेद्यकरि घृतमें पचूं ।
अरहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥५॥

दोहा ।

नानाविध संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन ।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय चरुं नि० ।

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने, मोहतिमिर महाबली ।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीपप्रकाशजोति प्रभावली ॥
इहभांति दीप प्रजाल कञ्चनके सुभाजनमें खचूं ।
अरहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥ ६ ॥

दोहा ।

स्वपर प्रकाशक जोति अति, दीपक तमकरि हीन ।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि० ।

जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै ।
वर धूप तासु सुगन्धताकरि सकलपरिमलता हंसै ॥

इहभांति धूप चढ़ाय नित, भवज्वलनमाहिं नहीं पचूं।
अरहंत श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥ ७ ॥

दोहा ।

अग्निमाहिं परिमल दहन, चंदनादि गुणलीन ।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि० ।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साहके करतार हैं ।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुण सार हैं ॥
सो फल चढ़ावत अर्थ पूरन, सकल अमृतरस सचूं।
अरहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥ ८ ॥

दोहा ।

जे प्रधान फल फलविषैं, पंचकरण–रसलीन ।
जासौं पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति० ।

जल परम उज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं ।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनमके पातक हरूं ॥
इहभांति अर्घ्य चढ़ाय नित भवि, करत शिव पंकति मचूं ।
अरहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥९॥

दोहा ।

वसुविधि अर्घ संजोयकै, अति उछाह मन कीन ।
जासौं पूजौं परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ।

जयमाला ।

देव शास्त्र गुरु रतनशुभ, तीनरतनकरतार ।
भिन्न भिन्न कहूं आरती, अल्प सुगुणविस्तार ॥ १ ॥

पद्धडी छन्द ।

चउकर्मकी त्रेसठ प्रकृति नाशि । जीते अष्टादशदोषराशि ।
जे परम सुगुण हैं अनँत धीर । कहवतके छयालिस गुण गंभीर ॥२
शुभ समवशरणशोभा अपार । शत इन्द्र नमत कर शीसधार ॥
देवाधिदेव अरहन्त देव । वंदौं मन वच तनकरि सु सेव ॥३॥
जिनकी धुनि है ओंकाररूप । निरअक्षरमय महिमा अनूप ॥
दश अष्ट महाभाषा समेत । लघुभाषा सात शतक सुचेत ॥४॥
सो स्याद्वादमय सप्तभंग । गणधर गूंथे बारह सु अंग ।
रवि शशि न हरैं सो तम हराय । सो शास्त्र नमौं बहु प्रीति ल्याय ॥
गुरु आचारज उवझाय साध । तन नगन रतनत्रयनिधि अगाध ।
संसार-देह वैराग धार । निरवांछि तपैं शिवपद निहार ॥६॥
गुण छत्तिस पच्चिस आठवीस । भवतारनतरनजिहाज ईस ॥
गुरुकी महिमा वरनी न जाय । गुरुनाम जपौं मनवचनकाय ॥७॥

सोरठा ।

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति विना सरधा धरै ।
'द्यानत' सरधावान, अजर अमरपद भोगवै ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

नमः सिद्धेभ्यः ।

श्रीसिद्धक्षेत्र-पूजासंग्रह ।

स्व० कवि बिहारीदासजी कृत-

श्री सम्मेदशिखर-विधान ।

सवैया ३१ सा ।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित तप चार ही की,
एकतामें लीन होय परम ऋषिराज जी ।
करम गण नाश स्वातमोपलब्धि कर प्रकाश,
तीन लोक चूडामणि भए शिरताज जी ॥
चरम शरीरतें कछुक ऊन पुरुषाकार,
ज्ञानमय शरीर धरें लसत शिवसमाज जी ।
ते ही सिद्धमहाराज मेरे उर भासो आज,
ताते मोह जावे भाज सिद्ध होय काज जी ॥१॥

अडिल्ल ।

सम्मेदाचल ऊपर प्रथमहिं जायके ।
करे सिद्ध इमि ध्यान सु मन वच कायके ॥

पुनि अजितादिक जिनवरा भू थुति उचरे।

पृथक् पृथक् तिन कूट निकट पूजा करे ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि सिद्ध-पद प्राप्ताय अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

छंद कुसुमलता।

गंगादिक निर्मल जल प्रासुक,
कनक कलशमें भरके ल्याय।
जन्म जरा मृत नाशन कारण,
धारा तीन देत हर्षाय ॥
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि,
असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें,
पूजत तिनको ध्यान लगाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

बावन चन्दन घिस जल निर्मल,
कैशर सरस सुगंध अपार।
सो ले भव-आताप हरनको,
अर्चत सिद्धसमूह चितार ॥ श्री० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

सरस अखंडित उज्वल अक्षत,
कनक रकेबीमें भर आन।
अक्षयपदके हेत चढ़ावत,
चतुर्गति अथिर दुखद पहिचान ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये ऽक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

नानाविधिके पुष्प मनोहर,
फैली सुरभि दसों दिशि सार।
लेकर जजों शिवाचलको,
सो काम शत्रु नाशे दुखकार ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

व्यंजन विविध प्रकार मनोहर, रसना नैन घ्राण सुखदाय।
क्षुधावेदनी नाशनकों, नैवेद्य चढ़ावत हर्ष बढ़ाय ॥ श्री० ॥

ॐह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीप रतनमय परम अमोलक, तातें पूजत हों शिवराय।
मोहमहातम नाश करो मम, स्वपर प्रकाशक जोत जगाय ॥श्री०

ॐह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि० ६

हरिचंदन आदिक सुगंध दस, अगन माहिं खेवत हों डार।
आठ करम मम दुष्ट जरें जिमि, आठों गुण प्रगटें निज सार ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

श्रीफल वर बादाम सुपारी, एला पिस्ता आदि अपार।
फलसों पूजत हौं शिवभूधर, दीजे मोक्ष महाफल सार ॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ८

जल सुगंध तंदुल सु पुष्प चरु, दीप धूप फल अर्घ बनाय।
पद अनर्घके हेत जजत हौं, सिद्ध समूह सदा उर लाय ॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ९
तोय गंध अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप अर्घादिक ल्याय।
पूरन अर्घ बनाय सम रचौं, पूरण काज सिद्ध मम थाय ॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं नि० स्वाहा ॥१०॥

प्रत्येक पूजा।

छंद गीतिका।

रागादि शत्रुनकर अजित, तातैं अजित जिन नाम है।
जिन चरन रज हीं परसतें, भव होत उज्जवल धाम है॥
ते अजितप्रभु निज ध्यान धर, जहँ ते लहो शिवठाम है
तिहि शैलराज पवित्रको, सो बार बार प्रणाम है॥
ॐ ह्रीं श्रीअजितजिन निशद्याभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा।

श्रीअजितादि मुनीश जे, इस भूतें शिव पाय।
ते पूजों वसु द्रव्यसों, सर्व विभाव पलाय॥
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सिद्धवरकूटसे अजितनाथजिनेन्द्रादि मुनि एक अरब अस्सी कोटि चौवन लाख सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥१॥

जिनके निमतकर सकल जीवनको, परम सुख होत है।
ते सकल संभव दुःखहरता, परम केवल जोत है॥
तिन अत्र भूधरतें वरी, शिव-इंदिरा वर वाम है॥ति०॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवजिन निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तीन भुवन जन सुख करन, श्रीसंभव तीर्थेश।
अर्घ लेय पूजत प्रभो, मेटो भ्रमण कलेश॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके धवलकूटसे श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौ कोड़ाकोडी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पांचसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घ नि० ॥२॥

ज्ञानादि निर्मल गुनन कर हैं, वर्धमान जिनेश जी।
तातैंजु अभिनन्दन सु सार्थक, नाम धर परमेश जी॥
जहँ अनिल मुकटानल सु शक्र कृत भयो तन
जिन स्वामि है॥ तिहि० ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अभिनन्दन जिन आदि ऋषि, इह थलतें शिवपाय।
ते पूजों मैं अर्घतें, विघन सघन नश जाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके आनंदकूटसे श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्रादि मुनि बहत्तर कोड़ाकोड़ी सत्तर कोटि छत्तीस लाख ब्यालीस हजार सातसै सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घ नि० ॥३॥

स्याद्वाद परम प्रकाशकर, परमत तिमिर सब नाशकैं।
वर्ताय जिनवृष सुमति जिनवर, मोक्षमार्ग प्रकाशकैं॥
जहँतें सुजोग निरोधकर, निज अचल थलवासी भए॥ति

ॐ ह्रीं श्रीसुमतितीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

मुक्ति भए इस अवनितें, सुमतिनाथ जिन आदि।
ते पूजों वसु दरवसों, छूटें कर्म अनादि॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके अविचलकूटसे श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ाकोड़ी चौरासी बहत्तरलाख इक्यासी हजार सातस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥४॥

हैं कमलपत्र समान तन, जिन पद्मप्रभु जिनदेवजी।
गुण अमितमूर्ति सु अटल, पद्माकर लसत स्वयमेवजी
जहाँ तिष्ठ कर कर कर्म नष्ट, सु अष्टमी भूपर थये। तिं०॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

या भूतें अष्टमधरा, वसे पद्मप्रभु आदि।
ते पूजों अति भक्तितें, मेटो मम रागादि।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके मोहनकूटसे पद्मप्रभुजिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोटि सतासी लाख तेतालीस हजार सातस सत्तर सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥५॥

गीतिका छंद।

शोभायमान सुपार्श्व जिनके, श्री सुपार्श्वनाथजी।
जे निकटवर्त्ती भवनको, कर लेत हैं निज साथजी॥
त्याग परमोत्तम सुतन, निज अटल मूरति परणये॥तिं०

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीसुपार्श्व आदिक ऋषी, जहँते भये शिवभूप।
सो थल पूजों भावसों, प्रगट होय चिद्रूप॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके प्रभासकूटसे श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रादि मुनि उनचास कोड़ाकोड़ी चौरासी कोटि बहत्तर लाख सात हजार सातसे ब्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

आनँद करत सकल जगतको, तथा मो तिमिर हरैं।
पै दोपरूप कलंक वर्जित, अमल चन्द्र-प्रभा धरें॥
ते चन्द्रनाथ जिनेश जहँते शिवरमा-नायक भए। ति०

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सुन्दरी छन्द।

चन्द्रप्रभु आदिक मुनिराजजी।
लहो या भूतें शिवराजजी।
मैं जजत हूँ वसु द्रव्य चढ़ायके।
वसु गुणनकी आश लगायके

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके ललितकूटसे चन्द्रप्रभुजिनेन्द्रादि मुनि चौरासी कोड़ाकोड़ी बहत्तर कोटि अस्सी लाख चौरासी हजार पांचसौ पचवन सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

जे कुंद पुष्प समान दंतन, कांतिकर राजत प्रभो।
ते पुष्पदंत सु दिव्यध्वनि, कर भव्य भव तारत विभो।
उत पुष्पवन जहँते करम हनि, लोकशिखर विषैं थये। ति०

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंततीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

पुष्पदंत प्रभु आदिक मुनी।
यहाँ थिर होय भवबाधा हुनी॥

अर्घ लेय जजों शिवराजजी।
मोहि निज निधि दीजे आजजी ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुप्रभकूटसे श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ाकोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चारसै सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

नहि करत शीतल चंद किरनन, चंदनादिक सार है।
भव-तप बुझावन वचन तिनके, परम अमृत धार हैं॥
निज देह कर गिरि सो शीतल, भए जगतललाम हैं॥ ति०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

सोरठा।

शीतल आदि जिनेन्द्र, इह अवनीतें शिव गए।
पूजों तज परमाद, मोह तपन शीतल करो॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके विद्युतकूटसे शीतलनाथजिनेन्द्रादि मुनि अठारह कोड़ाकोड़ी ब्यालीसकोटि बत्तीसलाख ब्यालिस हजार नौ सै पांच सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥९॥

श्रेयसस्वरूपी[1] आप हैं, पुनि सकलजिय श्रेयस करें।
तातें श्रेयांस सु सार्थ संज्ञा, श्रेयांसप्रभु श्रेयस धरें॥
ऊरध गमनकर इसइला[2]तें, शिवशिलापर थिर भए॥ ति०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्रेयांश जिनराज, मुनि असंख्य शिवभूमिके।
मैं पूजत हों आज, मेरो ही श्रेयस करो॥

---

१ कल्याण। २ पृथ्वी।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके संकुलकूटसे श्रीश्रेयांशनाथजिनेन्द्रादि, मुनि छ्यानवे कोड़ाकोड़ी छ्यानवे कोटि छ्यानवे लाख नौ हजार पांचसें ब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

रागादि दुस्त्यज¹ मल हरन, जिन वचन सलिल समान हैं।
श्रीविमल २ करत, भविकजन विमलसौख्यनिधान हैं॥
इस क्षेत्रको ही विमल कीनी, यहांतें शिव जायकें॥
तिहि शैलराज प्रशस्तकों, मैं नमों मन वच कायकें॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

विमल जिनेश्वर मुक्त्य, मुनि असंख्य इस अवनितें।
पायो अविचल सुक्ख, अर्घ जजों ताहीं निमित्त॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुवीरकुलकूटसे श्रीविमलनाथजिनेन्द्रादि मुनि सत्तर कोटि सात लाख छह हजार सातसौ ब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥११॥

जिनके सु स्वगुन अनंत कथ, गनधर लहत नाहिं अंत हैं।
सु अनंत संसृत दुःख नाशन, श्रीअनंत महंत हैं॥
सुअनंतधाम लह्यो जहांतें, अचल अमल सुथिर भए। इति०

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

शांत करो संसार, सादि अनंत कियो मुकति।
ते पूजों जगतार, सुख अनन्त दातार लख॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके स्वयंभूकूटसे श्रीअनन्त-

१ कठिनतासे नष्ट होनेवाले।

नाथजिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवे कोड़ाकोड़ी सत्तर कोटि सत्तर लाख सत्तर हजार सातसौ सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ नि० ॥१२॥

संसार-दुःख समुद्र डूबत, भव्य जीव उबारकें।
सुख-धाम धारत धर्मप्रभू, सुधर्म विधि विस्तारकें॥
ते धर्मनायक इस धरातें, शिवरमानायक भए। ति०

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

चाल छंद।

श्रीधर्मनाथ जगनामी। पुनि मुनि असंख्य शिवगामी।
या भू ऊपर थिर राजे। ते पूजों निज हित काजे॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुदत्तकूटसे श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रादि मुनि उन्नीस कोड़ाकोड़ी उन्नीस कोटि नौ लाख नौ हजार सातसै पंचानवे सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥१३॥

जे शांत करत समस्त पातक, एक छिनमें नाथजी।
जिन नाम मंत्र प्रभावतें, इन्द्रादि भए सनाथजी॥
ते शांतिनाथ अपार भवदधि, पार या भूतें थये। ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्रीशांतिनाथादि रिखीस। जहँतें गए त्रिभुवन सीस।
ते जजत हूँ अर्घ धारी। नाशो भवव्याधि हमारी॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके शान्तिप्रभकूटसे श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्रादि मुनि नौ कोड़ाकोड़ी नौ लाख नौ हजार, नौसौ निन्यानवे सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥१४॥

कुंथादि जीवनमें दया जुत, ह्वै परम विराग जी।
श्रीकुंथुस्वामी चक्र लक्ष्मी, जीर्ण तृणवत् त्याग जी॥

जहँते विमल तप धार सकल, विकार तज निरमल
भए। तिहि शै० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सोरठ।

कुन्थुनाथ जिनपाल, बहु मुनिगण जहँते मुकति।
सो थल जजों विशाल, उज्ज्वल द्रव्य संजोयके ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके ज्ञानधरकूटसे श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छयानवे कोड़ाकोड़ी बत्तीस लाख छयानवे हजार सातसै ब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥१५॥

सब द्रव्य गुण पर्याय जानत, राग द्वेष न पाइये।
सो तीनलोक प्रसिद्ध अर जिन, चरन नितप्रति ध्याइये॥
तहँ समोशरण विभूति मध, सु तिष्ठ पुनि निजथल गये।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अरहनाथ भगवान, आदि ऋषी इस अवनितें।
पायो पद निर्वाण, अर्घ चढ़ावत हर्ष धर ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके नाटककूटसे श्रीअरहनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोटि निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥११॥

जिनमल्ल दुर्जय कामभट, जीतन सुमल्ल प्रधान हैं।
सतमल्लिका सर सुरभित तन, जुत मोह तम हनि भान हैं।
जिहि थानतें निर्वाण पहुँचे, अचल अविनाशी भए। ति०

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मल्लिनाथ तीर्थेश, अविचल सुख यहँते लयो।
पूजों ते परमेश, मोह निसल्ल करो प्रभू॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सम्बलकूटसे श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि छ्यानवे कोटि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१७॥

जिनके सुव्रत जयवंत जगमें, सुगुण रत्ननिधान हैं।
चिर लगे पाप पहार चूरन, को सु वज्र समान हैं॥
ते धार मुनिसुव्रतजिनेश्वर, जहाँतें निज थल गए। ति०

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रततीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमुनिसुव्रतनाथ, पार भए इस क्षेत्रतें।
जजों जोर जुग हाथ, मेरे सुव्रत काज ये॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके निर्जरकूटसे श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोड़ाकोड़ी सत्तानवे कोटि नौ लाख नौ सौ निन्यानवे सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥१८॥

इन्द्रादि देवनिकर नमंति, तातें सुनमि जिन नाम हैं।
मिथ्याततमतमय तिमिर नाशन, कर विहार सुस्वामि हैं
धर तुर्ज ध्यान सु अंतमें, जहँते सुलोक शिखर थए। ति.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पांजलि क्षिपेत्।

नमि जिनवर सुखकर, आदि यतीं या भूमितें।
भए भवोदधि पार, ते पुजों वसु द्रव्यसों॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके मित्रधरकूटसे श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रादि मुनि नौ सौ कोड़ाकोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सै ब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१९॥

छंद गीतिका ।

ज्ञानी जननकर सदा जिनके. पार्श्व अनुभवरूप हैं।
ते पार्श्वस्वामी भव्य भवफांसी, निवारन भूप हैं॥
जहँते विमल तन त्याज सिद्धसमाजमें चिर थिर थए।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरादि निर्वाणभूमये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अडिल्ल ।

पार्श्वनाथको आदि, असंख्य ऋषीश जी।
या भूधरतें भये, शिवालय ईश जी॥
ते ही सिद्ध जजों, मैं मन वच कायकें;
जन्म सुफल भयो आज, सु इह थल पायकें॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुवर्णभद्रकूटसे श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥२०॥

गीतिका ।

इत्यादि जे ऋषिपाल, भव-दुख जालको छेदत भए।
इहि शैलते गति ऊर्ध्व करकें, अचल सौख्यमई थए॥
सो आर्यक्षेत्र सुमौल गिरिपति, तीर्थराज महान है।
मैं जजत अर्घ चढ़ायके, मो करहु परम कल्यान है॥

ॐ ह्रीं विंशति तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२१॥

छंद कुसुमलता ।

प्रथमहि बोध प्रजाहित स्वामी,
पुनि ऋषि ह्वै मुनि-मग विस्तार।

तप धर शुक्लध्यान दूजे कर,
चारों घाति कर्म निरवार ॥
केवल लह कैलाश शैलतें,
पुनि अघाति हनि उतरे पार ।
सो कैलाश शिवाचल पूजों,
इतही मनतें चित्त सु सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथजिनेन्द्रादि मुनि श्रीकैलाशगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥१२॥

इन्द्रादि देवन कर पूजत, श्रीजिन वाँसुपूज्य भगवान ।
जिनके पंचकल्याणक कर, सो नगरी भई पवित्र महान ॥
चम्पापुरी भगवती ताकों, यह भूधरपै कर आव्हान ।
पूजत हो वसु द्रव्य लेयके, कर्म निर्जरा हेतु महान ॥

ॐ ह्रीं श्रीवाँसुपूज्य सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीचम्पापुरीसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥१३॥

राजमती गुणमती त्याजकें, ब्रह्मलीन श्रीनेमिकुमार ।
जहँ सेसावनमें तप धरके, घातीकर्म हने दुठ चार ॥
पंचमगति जास गिरितें, भए अनंत सुगुण भंडार ।
सो गिरनार जजत मैं इत ही मनहितें वसुद्रव्य सुधार ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥ १४ ॥

श्रीतीर्थेश वीरके वचनामृत, पीकर जे हैं बलवान ।
ते अब ही इस काल विषै ही, जीतत मदन मल्ल परधान ।

पावापुरके निकट पद्मसर, तहँते पहुँचे निश्चल थान।
सो शिवधरा जजत मैं इतही, धरके चम तीर्थंकर ध्यान।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीपावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥२६॥

अडिल्ल ॥

'भागचन्द्र' के उदय होत, सुखकार जी।
पावत है जिन तीरथ, दरशनसार जी॥
ताके परमप्रसाद भव्य, भव-सर तरें।
नरक आदि दुख कूप विषै नाहीं परे॥

दोहा।

अथ विशेष पूजन करन, चाह होय उर माहिं।
तो इन अष्टक पद सुधी, पूजा विशद कराहिं॥

अडिल्ल।

गंगादिक निर्मल शीतल जलकर जजों।
पर भावनकी तृष्णा कबहूँ नहिं भजों॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों नीर धर॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद-प्राप्तेभ्यः जलं नि० ॥१॥

ल्यायो परम सुगंध सुरभि दश दिशि करे।
श्रीजिन वचन समान ताप सब परहरे॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों गंध धर॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः चन्दनं नि० ॥ २ ॥

धवल अखंडित तंदुल शाल सु ल्यायकें।
अक्षयपदके हेत सु मन वच कायकें॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों पुंज धर॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अक्षतं नि० ॥३॥

सुमन सु भव्य समूह पूज्य गिरिवर है महा।
ल्यायो उत्तम पुष्प काम नाशन तहाँ॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों पुष्प धर॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः पुष्पं नि० ॥४॥

मोदक आदि नैवेद्य कनक थारी धरों।
क्षुधा वेदनी दहन वेद्य विथा हरों।
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों चरु सु धर॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः नैवेद्यं नि० ॥५॥

स्वपर बोधमय मणिमय दीपक कर जजों।
संशय विभ्रम मोह भाव ततूक्षन तजों॥

श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर ।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों दीप धर ॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्याते मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः दीपं नि० ॥ ६ ॥

हरिचन्दन आदिक दस गंध मिलायके ।
खेवत विधि[1] गण उड़त धूम मिस पायके ॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर ।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों धूप धर ॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः धूपं नि० ॥ ७ ॥

श्रीफल आदि सुरभि फल ले हितकार जी ।
जजत सु अविनाशी फलदायक सार जी ॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर ।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों विघ्न हर ॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः फलं नि० ॥ ८ ॥

जल आदिक फल अंत सु द्रव्य संजोयके ।
पद अनर्घके हेतु जजों मद खोयके ॥
श्रीतीर्थेश्वर शिव-भूधर पावन शिखर ।
श्रीसम्मेद नाम गिरि पूजों अर्घ धर ॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थंकर असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घ्यं नि० ॥ ९ ॥

---

१ कर्म ।
२

जयमाला ।

अडिल्ल ।

तीरथ सम्मेदाचल नाम प्रसिद्ध है ।
भाव भक्तिकर पूजत देत सु ऋद्धि है ॥
वचनरूप पुष्पनकी माल बनायके ।
पूजत हों मैं बार बार शिरनायके ।

पद्धरी छंद ।

जय जय सम्मेदशिखर सुनाम ।
पूरत भविजनके सकल काम ॥
जय कुगति भीतजन आर्त हर्न ।
पुनि पुनि आयो जहँ समोशर्न ॥१॥
सुर इन्द्र सु पूजत नित्य आन ।
अहमिन्द्र सु थल ही धरत ध्यान ।
वंदित चारणऋषि कलिल हरन ।
जिनविंशति तीर्थ सु भूमि धरन ॥२॥
सो ध्यान अध्ययन परम थान ।
गंधर्व करत जिनगुण सु गान ॥
जय जय यात्री जहँ करत एव ।
खेचर भूचर नित करत सेव ॥३॥
ऋतु छैकर सन्तत राजमान ।
जहँ मुनिजन नित ही धरत ध्यान ॥
वर बोध-सुधामृत देन दक्ष ।
परनाम सहज तहँ होय स्वच्छ ॥४॥

तुमको जजहों भजहों सदीव।
नहिं मिथ्यातीर्थ गमो कदीव ॥
दीजे हमको सो समाधिधान।
तुम भक्त सर्व सुख गुणनिधान ॥५॥

घत्ता।

मैं क्रोधी मानी माया खानी,
लोभ अनलकर जलत सदा।
गति गति भटकायो बहु दुख पायो,
सौख न पायो रंच कदा ॥
हे शिव-भूधर अब शरण लयो,
तब मो दुरगति दुख दूर करो।
तुम तीरथराजा हो महाराजा,
'दास बिहारी' शरम भरो ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छंद कुसुमलता।

'भागचन्दजी' महा सुधी,
तिन करे संस्कृत काव्य महान।
तिनहीके अनुसार 'बिहारी'
भाषा रचो सो 'शिखर-विधान' ॥
संवत् शत उन्नीस अधिक,
ब्यालीस जेठ सुदि षष्ठी जान।
अमिल होय अक्षर मिलाय,
जो सोधो सज्जन धीमान ॥ ७ ॥

श्रीसम्मेद शिखरके वंदत,
पुत्रार्थी लह पुत्र प्रधान ।
धनअर्थी अक्षय धन पावे,
मोक्षार्थी शिव सौख्य महान ॥
एकहि बार बंदना करतें,
नरक पशू गति टरे निदान ।
इमि लख तीर्थराज वर वंदों,
भक्ति भावधर श्रद्धावान ॥८॥

स्वर्गीय कविवर बाबू वृन्दावनजीकृत

श्रीवासुपूज्य जिनपूजा ।

छंद रूप कवित्त ।

श्रीमतवासुपूज्य जिनवरपद,
पूजन हेत हिये उमगाय ।
थापों मन वच तन शुचि करकें,
जिनकी पाटलदेव्या माय ॥
महिष चिन्ह पद लसे मनोहर,
लाल वरन तन समता दाय ।
सो करुनानिधि कृपादृष्टि करि,
तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यहँ आय ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक।

छंद जोगीरासा। आंचलीबंध। "जिनपद पूजों लवलाई।"

गंगाजल भरि कनककुंभमें, प्रासुक गंध मिलाई।
करम कलंक विनाशन कारन, धार देत हरषाई। जिन०।
वासुपूज वसुपूजतनुजपद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

कृष्णागरु मलयागिरचन्दन,
केशर संग वसाई।
भवआताप विनाशन कारन,
पूजों पद चित लाई॥ जि० वा०॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि०॥२॥

देवजीर सुखदास शुद्ध वर,
सुवरन थार भराई।
पुंज धरत तुम चरनन आगे,
तुरित अखयपद पाई॥ जि० वा०॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि०॥३॥

पारिजात संतानकल्पतरु,
जनित सुमन बहु लाई।
मीनकेतु मदभंजन कारन,
तुम पदपद्म चढ़ाई॥ जि० वा०॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० ॥४॥

नव्य गव्य आदिक रसपूरित,
नेवज तुरित उपाई।
क्षुधा रोग निरवारन कारन,
तुम्हें जजों शिरनाई॥ जि० वा०॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥५॥

दीपक जोत उदोत होत वर,
दश दिशिमें छवि छाई।
तिमिर-मोहनाशक तुमको लखि,
जजों चरन हरषाई॥ जि० वा०॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ॥६॥

दशविध गंध मनोहर लेकर,
वातहोत्रमें डाई।
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं,
धूम सु धूम उड़ाई॥ जि० वा०॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि ॥७॥

सुरस सुपक सुपावन फल ले, कंचन थार भराई।
मोच्छ महाफलदायक लखि प्रभु, भेंट धरों गुनगाई॥
जि० वा०॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥८॥

जल फल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति, निकट धरों यह लाई॥
जिनपद० वासु०॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥९॥

पंचकल्याणक-

छंद परिता (मात्रा १४)

कलि छट्ट अषाढ़ सुहायो। गरभागम मंगल पायो।
दशमें दिवितें इत आये। शत इन्द्र जजें सिर नाये ॥१॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठयां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥१॥

कलि चौदश फागुन जानों। जनमें जगदीश महानो॥
हरि मेरु जजे तब जाई। हम पूजत हैं चितलाई ॥२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्मङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ २ ॥

तिथि चौदस फागुन श्यामा। धरियो तप श्रीअभिरामा
नृप सुन्दरके पय पायो। हम पूजत अतिसुख थायो ॥३॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपमङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ३ ॥

वदि भादव दोइज सोहै। लहि केवल आतम जो है।
अन अंत गुणाकर स्वामी। नित वंदों त्रिभुवन नामी।४।

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णद्वितीयायां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ४ ॥

सित भादव चौदश लीनो। निरवान सुथान प्रवीनों॥
पुरचंपा थानकसेती। हम पूजत निजहित हेती ॥५॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ५ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

चंपापुरमें पंचवर, कल्यानक तुम पाय ।
सत्तर धनु तनु शोभनो, जै जै जै जिनराय ॥१॥

छन्द मोतियदाम (वर्ण १२)

महासुखसागर आगर ज्ञान ।
अनंत सुखामृत मुक्त महान ॥
महाबलमंडित खंडित काम ।
रमाशिव संग सदा विसराम ॥२॥
सुरिंद फनिंद खगिंद नरिंद ।
मुनिंद जजैं नित पादरविंद ॥
प्रभू तुव अंतर भाव विराग ।
सुबालहिं तें व्रतशीलसों राग ॥३॥
कियो नहिं राज उदाससरूप ॥
सुभावन भावत आतमरूप ॥
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त ।
चिदातम नित्य सुखाश्रित वस्त ॥४॥
अशर्न नहीं कोउ शर्न सहाय ।
जहाँ जिय भोगत कर्मविपाय ॥
निजातम कै परमेसुर शर्न ।
नहीं इनके विन आपद हर्न ॥५॥

जगत्त जथा जलबुद्बुद येव।
सदा जिय एव लहै फलमेव॥
अनेक प्रकार धरी यह देह।
भमैं भवकानन आन न नेह॥६॥
अपावन सात कुधात भरीय।
चिदातम शुद्ध सुभाव धरीय॥
धरे इनसों जब नेह तबेव।
सुआवत कर्म तबै वसुभेव॥ ७॥
जबै तन भोग जगत्त उदास।
धरे तब संवर निर्जर आस॥
करै जब कर्म कलंक विनाश।
लहै तब मोक्ष महासुखराश॥८॥
तथा यह लोक नराकृत नित्त।
विलोकिये ते पर द्रव्य विचित्त॥
सुआतम जानन बोध विहीन।
धरै किन तत्वप्रतीत प्रवीन॥९॥
जिनागम ज्ञान रु संजमभाव।
सबै निजज्ञान विना विरसाव॥
सुदुर्लभ द्रव्य, सुक्षेत्र, सुकाल।
सुभाव सबै जिहितें शिव हाल॥१०॥
लयो सब जोग सुपुन्य वशाय।
कहो किमि दीजिये ताहि गँवाय॥

विचारत यों लवकान्तिक आय ।
नमें पदपंकज पुष्प चढ़ाय ॥११॥
कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार ।
प्रबोध सु येम कियो जु विहार ॥
तबै सबधर्म तनों हरि आय ।
रच्यौ शिविका चढ़ि आप जिनाय ॥१२॥
धरे तप पाय सुकेवल बोध ।
दियो उपदेश सुभव्य संबोध ॥
लियो फिर मोच्छ महासुखराश ।
नमैं नित भक्त सोई सुखआश ॥१३॥

घत्तानंद ।

नित वासव वन्दत, पाप निकंदत,
वासपूज्य व्रत ब्रह्मपती ।
भवसकलविखंडित, आनँदमंडित,
जै जै जै जैवंत जती ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा ।

वासपूजपद सार, जजै दरवविधि भावसों ।
सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्तिको जो परम ॥१५॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

काशीनिवासी स्व० बाबू वृंदावनजीकृत-

श्रीवर्द्धमानजिन (पावापुर) पूजा ।

मत्तगयंद ।

श्रीमत वीर हरैं भवपीर, भरैं सुखसीर अनाकुलताई ।
केहरि अंक अरीकरदंक, नयें हरिपंकतमौलि सुहाई ॥
मैं तुमकौं इत थापतु हौं प्रभु, भक्तिसमेत हिये हरखाई ।
हे करुणागनधारक देव इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

अष्टक ।

छंद अष्टपदी ।

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचनभृंग भरौं । प्रभु वेग हरौ भवपीर, यातैं धार करौं ॥ श्रीवीर महा अतिवीर, सनमतिनायक हो । जय वर्द्धमान गुणधीर सनमतिदायक हो ।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपमिति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरचंदन सार, केसर संग घसौं । प्रभु भवआताप निवार, पूजत हिय हुलसौं ॥ श्रीवीर० ॥ जयवर्द्धमान० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि० ॥

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीने थार भरी।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पाऊं शिवनगरी ॥ श्री०
॥ जयवर्द्ध० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०॥३॥

सुरतरुके सुमनसमेत, सुमन सुमनप्यारे।
सो मनमथभंजन हेत, पूजूं पद थारे॥ श्रीवीर० ॥
जयवर्द्ध० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥४॥

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी। पद
जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ॥ श्रीवीर०
॥ जयवर्द्ध० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०॥५॥

तमखंडित मंडितनेह, दीपक जोवत हूं। तुम
पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हूं। श्री० ॥जय०॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०॥६॥

हरिचंदन अगर कपूर, चूरि सुगन्ध करें। तुम
पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरे ॥श्री०॥ जय०

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि० ॥७॥

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचनथार भरौं।
शिवफलहित हे जिनराय! तुम ढिग भेट धरौं॥
॥ श्रीवीर० ॥ जयवर्द्ध० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥८॥

जल फल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरौं। गुणगाऊं भवदधितार, पूजत पाप हरौं॥ श्रीवीर० ॥ जयवर्द्धमान० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥९॥

पंचकल्याणक-

राग टप्पा।

मोहि राखौ हो सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखो हो सरना ॥ टेक ॥ गरभ साढ़ सित छट्ट लियौ थिति, त्रिशला उर अघहरना। सुर सुरपति नित सेव करत नित, मैं पूजूं भवतरना ॥ मोहि राखो० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठीदिने गर्भमङ्गलमण्डितायश्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १॥

जनम चैत सित तेरसके दिन, कुंडलपुर कनवरना। सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजूं भवहरना ॥ मोहि राखो० ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदशीदिने जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना। नृप कुमारघर पारन कीना, मैं पूजूं तुम चरना ॥ मोहि राखो हो० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमंडिताय श्रीमहाविरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुकल दशैं वैशाख दिवस अरि, घाति चतुक छय करना। केवल लहि भवि भवसर तारे, जजूं चरन सुखभरना ॥ मोहि राखो० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतें वरना। गनफनिवृंद जजैं तित बहु विधि, मैं पूजूं भयहरना ॥ मोहि राखो ० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं कार्त्तिककृष्णामावास्यायां। मोक्षमङ्गलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला।

छंद हरिगीता (२८ मात्रा)।

गनधर असनिधर चक्रधर, हरधर गदाधर वरवदा।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा ॥
दुखहरन आनँदभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुन मणिमाल उन्नत, भालकी जयमाल हैं ॥१॥

छंद घत्तानंद (३१ मात्रा)।

जय त्रिशलानंदन हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंद वरं।
भवतापनिकंदन तनमनवंदन, रहितसपंदन नयन धरं ॥२॥

छंद तोटक।

जय केवलभानुकलासदनं। भविकोकविकाशन कंजवनं॥
जगजीत महारिपु मोहहरं। रजज्ञानदृगांवरचूरकरं॥ १॥
गर्भादिक मंगल मंडित हो। दुख दारिदको नित खंडित हो॥
जगमांहि तुमी सत पंडित हो। तुम ही भवभावविहंडित हो॥२॥
हरिवंशसरोजनकों रवि हो। बलवंत महंत तुमी कवि हो॥
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो। अबलों सोई मारग राजति यो॥३॥
पुनि आपतने गुणमाहिं सही। सुर मग्न रहैं जितने सब ही॥
तिनकी वनिता गुण गावत हैं। लय ताननिसों मन भावत हैं॥४॥
पुनि नाचत रंग अनेक भरी। तुव भक्तिविषै पग एम धरी॥
झननं झननं झननं झननं। सुर लेत तहाँ तननं तननं॥५॥
घननं घननं घनघंट बजै। दृमदं दृमदं मिरदंग सजै॥
गगनांगणगर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता॥६॥
धृगतां धृगतां गति वाजत है। सुरताल रसाल जु छाजत है॥
सननं सननं सननं नभमें। इकरूप अनेक जु धार भमें॥७॥
कई नारि सु वीन बजावत हैं। तुमरौ जस उज्वल गावत हैं।
करतालविषै करताल धरैं। सुरताल विशाल जु नाद करैं॥८॥
इन आदि अनेक उछाहभरी। सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी॥
तुम ही जगजीवनके पितु हो। तुमही विनकारनके हितु हो॥९॥
तुम ही सब विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनँदभासन हो॥
तुम ही चिंताचिंतितदायक हो। जगमाहिं तुमी सब लायक हो॥१०॥

सिद्धचक्रको सुमरि जम्बु पूजा करों।
ज्ञानावरणी कर्मतनी थितिकों हरों॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने ज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थं जलं नि० ॥ १ ॥

बावन चन्दन ल्याय और मलयागिरी।
केशर द्रव्य मिलाय घिसाय रु इक करी॥
सिद्धचक्रको सुमरि जम्बु आगे धरूं।
दर्शनावरणी ताप मेटि शीतल करूं॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने दर्शनावरणीय कर्म क्षयार्थं चन्दनं नि० ॥ १ ॥

तन्दुल मुक्ता जेम इंदु[1] किरण जिसे;
दीर्घ अखंडन कोय पुंज करिये तिसे॥
ज्योतिस्वरूपी ध्याय जम्बु पूजा रचूं।
अन्तराय छय कीन अखैपदमें मचूं॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने अंतरायकर्म क्षयार्थं अक्षत नि० ॥ २ ॥

पारिजात मन्दार मेरु सुहावने।
संज्ञानक सुरतरुके पुष्प मंगावने॥
अलखरूप वर धार जम्बुके पद जजूं।
मोहनी कर्म निवार काम ते ना लजूं॥

---

[1] चन्द्रमा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने मोहनीयकर्म क्षयार्थं पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

सुन्दर घृत मिष्टान्न विविध मेवा जिके।
मैदा सहित मिलाय पिंड करिये तिके ॥
समयसार पद वंदि भेंट आगे धरूं।
जम्बूस्वामि मनाय वेदनीको हरूं ॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने वेदनीयकर्म क्षयार्थं नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

चन्द्रकान्त और सूर्यकान्ति शुभमणि भली।
अरु स्नेही बाति जोय आनँद रली ॥
अष्ट गुणन जुन ध्याय जम्बु पूजों सदा।
चार आयु थिति मेट भरूं नाहीं कदा ॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने आयुकर्मक्षयार्थं दीपं नि० ॥ ६ ॥

धूप दशांग मँगाय अग्नि संग क्षेपहूँ।
धूपायन जू कनकमय सार जलेय हूँ ॥
नीच गोत्र अरु ऊंच गोत्र नहिं पाय हूँ।
आतमरूपी थाय निरंजन ध्याय हूँ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने गोत्रकर्म क्षयार्थं धूपं नि० ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बदाम छुहारे लायकें।
एला पूंगी आदि मनोज्ञ मिलायकें ॥

अष्ट गुण जुत वंद सकल भवकूं हरों।
नामकर्म झर जाँय प्रभु पायन परों॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने नामकर्मक्षयार्थं फलं नि०।८।

छप्पय।

क्षायिकसम्यक शुद्ध ज्ञान, केवलमय सोहै।
केवलदर्शन ज्योति, अगुरुलघु सूछम जो है।
इकमें नेक समाय, हर्ष भारी गुण तेरो।
अव्याबाध रहाय, अर्घ दे चरणन चेरो॥

दोहा।

जल चन्दन अक्षत पहुप, और अधिक नैवेद।
दीप धूप फल जोर कर, जिन पूजों निरखेद॥

अडिल।

घंटा भेरि मृदंग नगारे मिलि बजें।
तुरही झालर झांझ मजीरा धुनि गजे॥
पूर्ण कनक भर थाल अर्घ कीजे महा।
मोक्ष-शिखरके हेतु कीर्तिलक्ष्मी लहा॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।९।

प्रत्येक अर्घ।

सोरठा।

क्षायक रुचिमय धर्म, आदि धर्म धर्मनिविषै।
जिहि काटे सब कर्म, अर्घ चढ़ायरु वीनवूं॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने क्षायकसम्यक्तगुण-विराजमानाय अर्घं नि० ॥१॥

जामें द्रव्य अनंत, व्यय उत्पत्ति ध्रुवता लिये।
हैं ज्ञेय भासंत, केवलज्ञान जजूं सदा॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने केवलज्ञानविराज-मानाय अर्घं नि० ॥२॥

केवलदर्शन ज्योति, प्रगटी चेतन मुकुरमें।
जिहि देखे सब होत, भाव सहित पूजा करों॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने केवलदर्शन विराज-मानाय अर्घं नि० ॥ ३ ॥

वीर्य अनंतानंत, तावल कर चिर थिर रहे।
लोकशिखरके अन्त, वन्दों मैं नित भावसों॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने अनन्तवीर्यगुण-विराजमानाय अर्घं नि० ॥ ४ ॥

सूक्षम थूल न होय, पुद्गल पिंड झरा।
यहाँ लघु भारी गुण जोय, पूज करों नित चावसों॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने सूक्ष्मत्वगुणविरा-जमानाय अर्घं नि० ॥ ५ ॥

इकमें नेक समाय, अवगाहन गुणतें सदा।
यह जिन आगम छाइ, अर्घ देय पदको नमूं॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने अवगाहनगुणविरा-जमानाय अर्घं नि० ॥ ६ ॥

षट् प्रकार क्षय वृद्धि, द्रव्य माँहि यह होत है।
सत्ता भिन भिन सिद्ध, अगुरुलघू राखे सदा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने अगुरुलघु गुण विराजमानाय अर्घं नि० ॥ ७ ॥

बाधक भाव नशाय, सुख अनंत प्रगट्यो तहाँ।
अव्याबाध रहाय, पूजा कर पायन परूँ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीमज्जम्बूस्वामिने अव्याबाधगुण-विराजमानाय अर्घं ॥ नि० ॥

जयमाला।

दोहा।

वर्द्धमान जिन वंदिके, गुरु गौतमके पाय।
और सुधर्मा मुनि प्रणमि, जम्बूस्वामि मनाय ॥१॥

पद्धरी छंद।

जय विद्युन्माली देव सार। पंचम [1]दिवमें महिमा अपार।
चय राजगृहीपुर सेठ थान। उपज्यों [2]मनमथ अंतिम सुजान ॥२॥
लघु वयमें उर वैराग धार। जगरूप अथिर जान्यों कुमार ॥
तब सब परिवार उछाह ठान। व्याही वनिता चतु वय समान ॥३॥
रतननको दीप दिपै महल। वनिता बैठी जुत काम शैल ॥
तिनसों ज्ञानादिक वच उचार। रागादि रहित कीनी सुनार ॥४॥
तब विद्युतप्रभ इक चोर आय। रस भीनी अष्ट कथा कहाय ॥
ताकूं वैराग्य कथा प्रकाश। निज तत्व दिखायो चिदाविलास ॥५॥

1. स्वर्ग. २ कामदेव.

जग अथिर रूप थिर नाहिं कोय । नाहिं शरण जीवको आनि होय ॥
संसार भ्रमण विधि पाँच ठान । इक जीव भ्रमत नहिं साथ आन॥६॥
षट द्रव्य भिन्न सत्ता लखाय । जिय अशुचि देह माहीं रमाय ॥
आश्रव परसों जब प्रीति होय । संवर चिद निज अनुभूति जोय॥७॥
तप कर वसु विधि सत्ता नशाय । निज स्वयंसिद्ध त्रय लोक गाय ॥
निजधर्म लखै कोई पुमान । दुर्लभ नाहिं आतम ज्ञान भान ॥८॥
द्वादश भावन यह भाँति भाय । बहु जन जुत भेटे वीर पाय ॥
दीक्षा धरकें चतु ज्ञान थाय । ऋधि सप्त लई महिमा अथाय ॥९॥
सन्मति गौतम धर्मा मुनीश । शिव पाई तब केवल जगीश ॥
वाणी जु खिरी अक्षरन रूप । तत्त्वनिको इमि भाष्यो स्वरूप॥१०॥
आपा पर परसों प्रीति होय । चैतन्य बधे चव भांति सोय ॥
तब निज अनुभूति प्रकाश पाय । सत्ता सूं कर्म झड़े अधाय॥११॥
चव बंध रहित तब होत जीव । सिद्धालय थिरता है सदीव ॥
षट द्रव्य बखानों भेदरूप । चैतन्य और पुद्गल स्वरूप॥१२॥
चालन सहचारी थिति सुहाय । वरतावन द्रव्यन कूं सु भाय ॥
पुनि सर्व द्रव्य जामें समाय । अवकाश द्वितीय अवलोक गाय॥१३॥
मुनि श्रावकको आचार भास । आचारज ग्रन्थनमें प्रकाश ॥
पुनि आरजखंड विहार कीन । जम्बूवनमें थितिजोग लीन ॥१४॥
सब कर्मनको छयकर मुनीश । शिववधू लही विश्वास बीस ॥
मथुरातें पश्चिम कोस आध । क्षत्रीपदमें महिमा अगाध ॥१५॥
ब्रजमंडलमें जो भव्य जीव । कातिक वदि रथ काढ़त सदीव ॥
कैऊ पूजत कैऊ नृत्य ठान । कैऊ गावत विधि सहित तान ॥१६॥

निशि १द्योस होत उत्सव महान। पूरत भव्यनके पुण्य थान॥
पद कमल प्राग तुर्कदास होय। निज भक्ति विभवदे अरज मोय॥१७॥

घत्ता त्रिभंगी छंद।

जल चन्दन ल्याये अछत मिलाये, पुष्प सुभाये मन भाये।
नैवेद्य सुदीपं दश विधि धूपं, फल जु अनूपं श्रुत गाये॥
सुवरणको थालं भर जु रसालं, फेरि त्रिकालं शिर नाये।
गुणमाल तिहारी मम उर धारी, जगत उजारी सुखदाये॥१८॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने श्रीमज्जम्बूस्वामिने अर्घं नि०॥

कवि आशारामजी कृत-

श्रीसोनागिरि पूजा।

अडिल्ल छंद।

जम्बू द्वीप मझार भरत क्षेत्र सु कहो।
आर्यखंड सुजान भद्रदेश लहो॥
सुवर्णगिरि अभिराम सु पर्वत है तहाँ।
पंच कोड़ि अरु अर्द्ध गये मुनि शिव तहाँ॥१॥

दोहा।

सोनागिरिके शीसपर, बहुत जिनालय जान।
चन्द्रप्रभू जिन आदि दे, पूजों सब भगवान॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रसे सिद्धपद प्राप्त साड़े पाँच करोड़

१ दिन।

मुनि अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ॥

अष्टक ।

सारंग छंद ।

पद्मद्रहको नीर ल्याय, गंगासे भरके ।
कनक कटोरी माँहि, हेम थारनमें भरके ॥
सोनागिरिके शीस, भूमि निर्वाण सुहाई ।
पंच कोडि अरु अर्द्ध, मुक्ति पहुँचे मुनिराई ॥
चन्द्रप्रभु जिन आदि, सकल जिनवर पद पूजों ।
स्वर्गमुक्ति फल पाय, जाय अविचल पद हूजों ॥
दोहा—सोनागिरिके शीशपर, जेते सब जिनराज ।
तिन पद धारा तीन दे, तृषा हरनके काज ॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केशर आदि कपूर, मिले मलयागिरि चन्दन ।
परिमल अधिकी तास, और सब दाह निकंदन ॥सो०
दोहा—सोनागिरिके शीशपर, जेते सब जिनराज ।
ते सुगंध कर पूजिये, दाह निकन्दन काज ॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० ॥ २ ॥

तंदुल धवल सुगन्धित ल्याय, जल धोय पखारों ।
अक्षयपदके हेतु, पुंज द्वादश तहाँ धारों ॥ सो०

दोहा—सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
तिनपद पूजा कीजिये, अक्षयपदके काज॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि०॥३॥

बेला और गुलाब मालती कमल मँगाये।
पारिजातकपुष्प ल्याय, जिन चरन चढ़ाये॥सो०

दोहा—सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
ते सब पूजों पुष्प ले, मदन विनाशन काज॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०।४

व्यंजन जो जग माँहि, खांड़ घृत माँहि पकाये।
मीठे तुरत बनाय, हेम थारी भर ल्याये॥ सो०

दोहा—सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज॥
ते पूजों नैवेद्य ले, क्षुधा हरणके काज॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०।५।

मणिमय दीपप्रजाल, धरों पंकति भर थारी।
जिनमंदिर तम हार, करहु दर्शन नर नारी॥सो०

दोहा—सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
करों दीप ले आरती, ज्ञान प्रकाशन काज॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविध्वंशनाय दीपं नि०॥६॥

दश विध धूप अनूप, अग्नि भाजनमें डालों
जाकी धूम सुगंध रहे, भर सर्व दिशालों॥ सो०

दोहा-सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
धूप कुंभ आगे धरों, कर्म दहनके काज॥

ॐ ह्रीं सोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥७॥

उत्तम फल जग माँहि, बहुत मीठे अरु पाके।
अमित अनार अवार, आदि अमृतरस छाके॥सो०

दोहा-सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
उत्तम फल तिनको मिलो। कर्म विनाशन काज॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥८॥

जल आदिक वसु द्रव्य, अर्घ करके धर नाचो।
बाजे बहुत बजाय, पाठ पढ़के सुख सांचो॥सो०

दोहा-सोनागिरिके शीसपर, जेते सब जिनराज।
ते हम पूजें अर्घले, मुक्ति रमनके काज॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥९॥

अडिल्ल छंद।

श्रीजिनवरकी भक्ति, सु जे नर करत हैं।
फलवांछा कुछ नाहिं, प्रेम उर धरत हैं॥
ज्यों जगमाँहि किसान, सु खेतीको करें।
नाज काज जिय जान सु शुभ आपहिं झरें॥
ऐसे पूजा दान, भक्ति वश कीजिए।
सुख सम्पति गति मुक्ति, सहज कर लीजिये॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१०॥

जयमाला ।

दोहा ।

सोनागिरिके शीसपर, जिनमन्दिर अभिराम।
तिन गुणकी जयमालिका, वर्णत 'आशाराम'॥१॥

पद्धरी छन्द ।

गिरि नीचे जिनमन्दिर सु चार । ते यतिन रचे शोभा अपार ॥
तिनके अति दीरघ चौक जान। तिनमें यात्री मेलौं सु आन ॥२॥
गुमठी छज्जो शोभित अनूप। ध्वज पंकति सोहे विविध रूप ॥
वसु प्रातिहार्य तहां धरें आन । सब मंगल द्रव्यनिकी सुखान ॥३॥
दरवाजोंपर कलशा निहार। कर जोर सु जय जय ध्वनि उचार ॥
इक मंदिरमें यतिराज मान। आचार्य विजयकीर्ती सु जान ॥४॥
तिन शिष्य भगीरथ विवुध नाम। जिनराज भक्ति नहिं और काम॥
अब पर्वतको चढ़ चलो जान। दरवाजो तहां इक शोभे महान॥५॥
तिस ऊपर जिनप्रतिमा निहार। तिन वंदि पूज आगे सुधार ॥
तहां दुखित भुखितको देत दान। याचकजन तहां हैं अप्रमान॥६॥
आगे जिनमन्दिर दुहू ओर। जिनगान होत वादित्र शोर ॥
माली वहु ठाड़े चौक पोर। ले हार कलंगी तहां देत दौर ॥७॥
जिन-यात्री तिनके हाथ मांहि । बखशीस रीझ तहां देत जाहिं ॥
दरवाजो तहां दूजो विशाल। तहां क्षेत्रपाल दोऊ ओर लाल॥८॥
दरवाजे भीतर चौकमाहिं। जिनभवन रचे प्राचीन आहिं॥
तिनकी महिमा वरणी न जाय। दो कुंड सुजल कर अति सुहाय॥९॥
जिनमन्दिरकी वेदी विशाल। दरवाज़ो तीजो वहु सुढाल॥

ता दरवाजे पर द्वारपाल । ले मुकुट खड़े अरु हाथ माल ॥१०॥
जे दुर्जनको नहिं जान देत । ते निंदकको ना दरश देत ॥
चल चन्द्रप्रभूके चौक माहिं । दालाने तहां चौतर्फ आय ॥११॥
तहां मध्य सभामंडप निहार । तिसकी रचना नाना प्रकार ॥
तहां चन्द्रप्रभूके दरश पाय । फल जात लहो नर जन्म आय॥१२॥
प्रतिमा विशाल तहां हाथ सात । कायोत्सर्ग मुद्रा सुहात ॥
वंदें पूजें तहां देय दान । जन नृत्य भजन कर मधुर गान॥१३॥
ता थेई थेई थेई बाजत सितार । मिरदंग वीन मुहचंग सार ॥
तिनकी ध्वनि सुन भवि होत प्रेम । जयकार करत नाचत सुएम॥१४॥
ते स्तुतिकर फिर नाय शीस । भवि चले मनोकर कर्म खीस ॥
यह सोनागिरि रचना अपार । वरणनकर को कवि लहे पार ॥१५॥
अति तनक बुद्धि 'आशा' सुपाय । वश भक्ति कही इतनी सु गाय ॥
मैं मन्द बुद्धि किमि लहों पार । बुधिमान चूक लीजो सुधार॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीसोनागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा ।

सोनागिरि जयमालिका, लघु मति कही बनाय ।
पढ़े सुने जे प्रीतिसे, सो नर शिवपुर जाय ॥१७॥

इत्याशीर्वादः ।

स्व० त्यागी दौलतरामजी वर्णी कृत-

श्रीनयनागिरि पूजा।

दोहा।

पावन परम सुहावनो, गिरि रेशिन्दि अनूप।
जजेहुँ मोद उर धार अति, कर त्रिकरण[1] शुचिरूप॥

ॐ ह्रीं श्रीनयनागिरिसिद्धक्षेत्रसे वरदत्तादि पंच ऋषिराज सिद्ध-पदप्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

(हार नंदीश्वर पूजाकी)

अति निर्मल क्षीरधि वारि, भर हाटक झारी।
जिन अग्र देय त्रय धार, करन त्रिरुग[2] छारी॥
पन वरदत्तादि मुनीन्द्र, शिवथल सुखदाई।
पूजों श्रीगिरिरेशिन्दि, प्रमुदित चित थाई॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० ॥१॥

मलयागिरि चन्दन सार, केशर संग घसी।
शीतल वासित सुखकार, जन्माताप कसी॥पन वर०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० ॥ २ ॥

---

१ मन, वचन, काय योग। २ जन्म, जरा, मरण।

शुचि विमल नवले अति श्वेत, द्युति जित सोमतनी ।
सो ले पद अक्षय हेत, अक्षत युक्त भनी ॥ पन वर०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुभ सुमन त्रिदश-तरुकेय, स्वच्छ करण्ड भरी ॥
मदब्रह्म तनुज हरनेय, भेंट जिनाग्रै धरी ॥ पन वर०॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

छुध फणहि विहंगमनार्थ, नेवज सद्यानी ।
कर विविध मधुर रस साथ, विधि युत अमलानी॥पन०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो छुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

मिथ्यातम भानन भानु, स्वपर उजास कृती ।
ले मणिमय दीप सुभानि, विमल प्रकाश धृती ॥ प०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविध्वंशनाय दीपं नि० ॥ ६ ॥

कर्मेन्धन जारन काज, पावक भाव मही ।
वर दश विधि धूपहि साज, खेय उछाह गही ॥ प०

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

---

१ नूतन-नये । २ कल्पवृक्ष सम्बन्धी । ३ पिटारा । ४ काम । ५ सर्प । ६ गरुड़ ।

दृग घ्राण रसन मन प्रीय, प्रासुक रस भीने।
लख दायक मोक्ष पदीप, लै फल अमलीने॥ प०॥
ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०॥८॥

शुचि अमृत आदि समग्र, सजि वसु द्रव्य प्रिया।
धारों त्रिजगतपति अग्र, धर वर भक्त हिया॥प०॥
ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०॥९॥

जयमाला।

दोहा।

जग बाधक विधि बाधकर, है अबाध शिवधाम।
निवसे तिन गुण धर सुहृद, गाऊँ वर जयदाम॥१॥

पद्धरी छंद।

जय जय जिन पार्श्व जगत्रि स्वामि। भवदधि तारण तारी ललाम॥
हनि घाति चतुक है युक्त सन्त। दृगज्ञान शर्म वीरज अनन्त॥१॥
सो समवशरण कमला समेत। विहरत विहरत पुर ग्राम खेत॥
सुर नर मुनिगण सेवत कृपाल। आये भव हितु तिहिं अचल भाल।२।
अरु वरदत्तादि मुनीन्द्र पंच। चतुर्विधि हनि केवल ज्ञान संच॥
लख सर्व चराचर त्रि जग केय। त्रैकालिक युगपत पद अमेय॥३॥
निज आनन [1]द्वविध हृपस्वरूप। उपदेश भरण भावि भर्म कूप॥
दृग ज्ञान चरण सम्यक प्रकार। शिवपथ साधक कह त्रिजग तार॥४॥
अरु सप्त तत्त्व षट द्रव्य केव। पञ्चास्तिकाय नव पदन भेव॥
दृग कारण सो दरशाय ईश। तिहि भूधर शिर पुनि अघाति पीश॥५॥

---

1 यति और श्रावकधर्म।

पंचमगति निवसे तत्र सुरेश। आके ले सुरगण सँग अशेष॥
रेशिन्दि शिखर रज शीस ल्याय। किय पंचम कल्यानक उछाय॥६॥
मैं तिन पद पावन चाह ठान। वंदों पुनि पुनि सो सुखद थान॥
मन वच तन तिन गुण रुच उर धार। 'वर्णी दौलत' अनचाह हार॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरिरेशिन्दिसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

आनन्द कन्द मुनीन्द्र गुण, धर उरकोष मझार।
पूजें ध्यावें सो सुधी, ह्वै लघु महि भव पार॥८॥

इत्याशीर्वादः।

पं० दरयावजी चौधरी कृत-

श्रीद्रोणागिरि पूजा।

दोहा।

सिद्धक्षेत्र परवत कहो, द्रोनागिरि तसु नाम।
गुरुदत्तादि मुनीश नमि, मुक्ति गये इहि ठाम॥१॥
इहि थल जिन प्रतिमा भवन, बने अपूरव धाम।
तिन प्रति पुष्प चढ़ाइये, और सकल तज काम॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रसे गुरुदत्तादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणं॥

अष्टक।

सुन्दरी छन्द।

सरस छीर सु नीर गहीर ले,
जिन सुचरनन धारा दीजिए।
नशत जन्म जरा मृति रोग हैं,
मिटत भवदुख शिवसुख होत हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ॥ १ ॥

अगर कुमकुम चन्दन गारिये,
जिन चढ़ाय सो ताप निवारिये।
जगत जन जे भव आताप ते,
चर्चै जिनपद अघ इमि नाशते॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० १

देव जीरो उर सुख दासके, पावनी घन केशर आदिके।
सरस अनयारे अनबींधे ले, पुंज जिनपद आनन तीन दे॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि०॥३॥

सरस बेला और गुलाब ले, केवरो इन आदि सुवास ले।
जिनचढ़ाय सुहर्षसुपावते, मदनकाम व्यथा सब नाशते

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०।४।

पूरियाँ पेड़ादि सु आनिये,
खोपरा खुरमादिक जानिये।

१ बिना घुने

सरस सुन्दर थार सु भारिये,
जिन चढ़ाय छुधादि निवारिये ॥
ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो छुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ५
रतन मणिमय जोति उद्योत है,
मोह तम नशि ज्ञानहु होत है।
करत जिन तट भविजन आरती,
सफल जन्मन ज्ञान सु भासती ॥
ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ६
कूट वसु विधि धूप अनूप है,
महक रही अति सुन्दर अग्नि है।
खेइये जिन अग्र सु आयकें,
ज्वलन मध्य सु कर्म नशायकें ॥
ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥
नारियल सु छुहारे ल्याइये, जायफल बादाम मिलाइये।
लायची पुंगी फल ले सही, जजत शिवपुरकी पावै मही॥
ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥
जल सु चन्दन अक्षत लीजिये, पुष्प धर नैवेद्य गनी जिये।
दीपधूपसुफलबहुसाजहीं, जिनचढ़ाय सुपातकभाजहीं।
ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

करत पूजा जे मन लायकें,
हेत निज कल्यान सु पायकें ।
सरस मंगल नित नये होत हैं,
जजन जिनपद ज्ञान उद्योत हैं ॥
ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१०॥

जयमाला ।

दोहा ।

जे ही भावना भायकें, करों आरती गाय ।
सिद्धक्षेत्र वर्णन करों, छंद पद्धड़ी गाय ॥१॥

पद्धरी छन्द ।

श्रीसिद्धक्षेत्र पर्वत सु जान । श्रीद्रोनागिरि ताको सु नाम ॥
तहँ नदी चन्द्रभागा समान । मगरादि मीन तामें सुजान॥१॥
ताको अति सुंदर बहे नीर । सरिता सुजान भारी गँभीर॥
यात्री सु देश देशनके आय । अस्नान करत आनंद पाय॥२॥
फलहाड़ी ग्राम कहो बखान । जिनमन्दिर तामें एक जान ॥
पूजा सु पाठ तहां होत नित्त । स्वाध्याय वाचनामें सुचित्त॥३॥
अब गिरि उतंग जानो महान । ता ऊपरको लागे शिवान॥
तरुवर उन्नत अति सघन पाँत । फल फूल लगे नाना सु भाँत॥४॥
तहँ गुफा रही सुन्दर गहीर । मुनिराज ध्यान धारे तपीस॥
गिरि शीस बीस जिन वने धाम । अब और होय तिनको प्रणाम॥५॥
तहँ झालर घंटा बजे सोय । वादित्र बजें आनन्द होय॥
तहँ प्रातिहार्य मंगल सु दर्व । भामंडल चन्द्रोपम सु सर्व ॥६॥

जिनराज विराजित ठाम ठाम । वंदत भविजन तज सकल काम ॥
पूजा सु पाठ तहँ करे आय । ताथेई थेई थेई आनन्द पाय ॥७॥
अब जन्म सुफल अपनो सु जान । श्रीजिनवर पद पूजे सु आन ॥
मैं भ्रम्यो सदा या जग मझार । नाहिं मिली शरन तुमरी अपार ॥८॥

सोरठा ।

सिद्धक्षेत्र सु महान, विघन हरन मंगल करन ।
बन्दत शिवसुख थान, पावत जे निश्चय भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गीतिका छंद ।

जाके सुपुत्र पौत्रादि सम्पति, होंय मंगल नित नये ।
जो जजत भजत जिनेन्द्रपद, अब तासु विघन सु नशि गए ॥
मैं करों थुति निज हेत मंगल, देत फल वांछित सही ।
'दरयाव' है जिन दास तुमरो, आश हम पूरन भई ॥

इत्याशीर्वादः ।

स्व० कवि जवाहरलाल जी कृत-

श्रीगिरनार पूजा ।

छप्पय ।

श्रीगिरनार शिखर परवत, दक्षिण दिशा सोहे ।
नेमिनाथ जिन मुक्तिधाम, सब जन मन मोहे ।
कोड़ बहत्तर सात शतक, मुनि शिवपद पायो ।
ताथल पूजन काज, भविक चित अति हर्षायो ॥

तिस तीरथराज सुक्षेत्रको,आह्वानन विधि ठानकर।
पूजूं त्रिजोग मनवचनतन, श्रावकजन गुनगानकर॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारासिद्धक्षेत्रसे श्रीनेमिनाथ, संबुकुमार, प्रद्युम्नकुमार अनिरुद्धकुमार और बहत्तर करोड़ सातसै मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

दोहा।

प्रभु तुम राजा जगतके, कर्म दहि दुख मोय।
करूं यथारथ बीनती, हमपै करुणा होय॥

चाल लावनीकी।

तीरथ गढ़ गिरनारको, नित पूजो हो भाइ।
हेम अंग भर तीरथादिक, शुभ प्रासुक पावन लाइ॥
जन्म मरण जरा नाशन कारन,धार देहु हरकाई॥भ०
जंबूदीप भरत आरजमें, सोरठ देश सोहाई।
सेसावनके निकट अचल तहँ,नेमिनाथ शिवपाई॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारासिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १ ॥

सुन्दर चन्दन कदली नन्दन, केशर संग घसाई।
भवदुखताप मिटावन लखके,अरचों जिनपद आई॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा॥ २ ॥

शशि सम श्वेत वर्ण मुक्ता शित, अछत अखंड सुहाई।
चरन शरन प्रभू अक्षै निधि लख, पुंज दिये सो पाई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कुसुम वर्णपन विविध गंध जुत, चुन चुन भेट धराई।
पूजन किय हो शील वर्द्धना, मनोबाण जय लाई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

खाजा ताजा मोदक गूजा, फेणी सरस बनाई।
षट्रस व्यञ्जन मिष्ट सुधामय, हेम थार भर लाई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप ललित कर घृत पूरित भर, उज्वल जोति जगाई।
करों आरती जिनपदकेरी, मिथ्या तिमिर पलाई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कर्पूर चूर बहु, द्रव्य सुगंध मिलाई।
खेय धनंजय धूप धूम मिस, वसु विधि देय जराई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

एला दाड़िम श्रीफल पिस्ता, पुंगीफल सुखदाई।
कनक पात्रधर भविजन पूजें, मनवांछित फलपाई ॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

अष्ट द्रव्यका अर्घ सँजोवो, घंटा नाद बजाई।
गीत नृत्यकर जजों 'जवाहर', आनन्द हर्ष बधाई॥भ०

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला।

जोगीरासा छंद।

उर्जयंति गिरिराज मनोहर, देखत ही मन मोहे।
राजुलपति शिवथान विराजे, उत्तम तीरथ जो है॥
पुत्र पौत्र हरि कृष्ण प्रचुर मुनि, पंचमगति तहँ पाई।
तास तनी महिमाको बरनें, श्रवण सुनत हरषाई॥१॥

पद्धड़ी छंद।

जै जै जै नेमि जिनन्द चन्द्र। सुर नर विद्याधर नमत इन्द्र॥
जै सोरठ देश अनेक थान। जूनागढ़पै शोभित महान॥२॥
तहां उग्रसेन नृप राजद्वार। तोरण मंडप शुभ बने सार॥
जै समुदविजय सुत व्याह काज। आये हर बलि जुत आन साज॥३॥
तहँ जीव बँधे लख दया धार। रथ फेर जंतु बंधन निवार॥
द्वादश भावन चिंतवन कीन। भूषण वस्त्रादिक त्याग दीन॥४॥
तज परिग्रह परिणय सर्व संग। है अनागार विजई अनंग॥
धर पंच महाव्रत तप मुनीश। निज ध्यान धरो हो केवलीश॥५॥

इस ही सुथान निर्वाण थाय। सो तीरथ पावन जगत माय ॥
अरु शंभु आदि प्रद्युम्नकुमार। अनिरुद्ध लही पदमुक्ति धार॥६॥
पुनि राजुल हू परिवार छांड। मन वचन कायकर जाग मांड़ ॥
तप तप्यौ जाय तिय धीर वीर। सन्यास धार तजकें शरीर ॥७॥
तिय लिंग छेद सुर भयो जाय। आगामी भवमें मुक्ति पाय ॥
तहँ अमरगण उर धर अनन्द। नितप्रति पूजत हैं श्रीजिनन्द॥८॥
अरु निरतत [1]मघवा युक्तनार, देवनकी देवी भक्तिधार ॥
ता थेई२ थेई२ करन जाय। फिरि फिरि फिरि फिरिकी लहाय॥९॥
मुहचंग वजावत तारवीन। तननन तननन तन अति प्रवीन ॥
कसांल ताल मिरदंग और। झालर घंटादिक अमित शोर ॥१०॥
आवत श्रावकजन सर्व ठाम। वहु देश देश पुर नगर ग्राम ॥
हिलमिल सब संघ समाज जोर। हय गय वाहन चढ़ रथ वहोर॥११॥
जात्रा उत्सव निशिदिन कराय। नर नारिउ पावत पुण्य थाय ॥
को वरनत तिस महिमा अनूप। निश्चय सुर शिवके होय भूप॥१२॥

घत्ता।

श्रीनेमि जिनन्दा आनन्द कंदा, पूजत सुर नर हित धारी ॥
तिस नमत 'जवाहर' जुग कर शिरधर, हर्ष धार गढ़ गिरनारी॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रसे नेमिनाथ शंवु प्रद्युम्न अनिरुद्ध और वहत्तर कोटि सातसौ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे नर वंदत भाव धर, सिद्धक्षेत्र गिरनार।
पुत्र पौत्र सम्पति लहे, पूरन पुण्य भंडार ॥१४॥

---

[1] इन्द्र।

सम्वत् विक्रमराय प्रमान । वसु जुग निधि इक अंक सुजान ॥
पौषमास पख सोम वखान । पंचमि तिथि रविवार सु जान ॥१५॥
रच्यो पाठ पूजन सुखदाय । पढ़त सुनत चित अति हुलसाय ॥
जात्रा करें धन्य ते जीव । पावें फल है शिवतिय पीव ॥१६॥

इत्याशीर्वादः

श्रीयुत भगोतीलालजी कृत-

श्रीशत्रुंजय पूजा ।

चौपाई ।

श्रीशत्रुंजयशिखर अनूप ।
पांडव तीन बड़े शुभ भूप ॥
आठ कोड़ि मुनि मुक्ति प्रधान ।
तिनके चरण नमूं धर ध्यान ॥१॥
तहाँ जिनेश्वर बहुत सरूप ।
शान्तिनाथ शुभ मूल अनूप ॥
तिनके चरण नमूं त्रैकाल ।
तिष्ठ तिष्ठ तुम दीनदयाल ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रसे आठ कोडि मुनि और तीन पांडव मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

त्रोटक छंद ।

क्षीरोदधि नीरं उज्वल खीरं, गंध गहीरं ले आया ।
मैं सन्मुख आया वारदिवाया, शीस नवाया खोलहिया
पांडव शुभतीनं सिद्धलहीनं, आठकोडि मुनि मुक्तगये ।
श्रीशंत्रुजयपूजों सन्मुखहूजो, शान्तिनाथ शुभमूलनये.

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि लाऊं गंध मिलाऊं,
केशर डारी रंग भरी ।
जिन चरन चढ़ाऊं सन्मुख जाऊं,
व्याधि नशाऊं तपत हरी ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तन्दुल शुभ चोखे बहुत अनोखे,
लखि निर्दोखे पुंज धरूं ।
अक्षयपद दीजो सब सुख कीजो,
निजरस पीजो चरण परूं ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुभ फूल सुवासी मधुर प्रकासी,
आनंद रासी ले आयो ।

मो काम नशाया शील बढ़ाया,
अमृत छाया सुख पायो ॥ पां ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज शुभ लाया थार भराया,
मंगल गाया भक्ति करी ।
मो क्षुधा नशाया सुख उपजाया,
ताल बजाया सेव करी ॥ पा० ॥

ॐ ह्रींश्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक ले आया जोति जगाया,
तुम गुण गाया चरण परूं ।
मैं शरणे आया शीस नवाया,
तिमिर नशाया नृत्य करूं ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दश गंध कुटाई धूप बनाई,
अग्नि डार जिन अग्र धरों ।
तुम कर्म जराई शिव पहुँचाई,
होय सहाई कष्ट हरो ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल प्रासुक चोखे बहुत अनोखे,
लख निर्दोखे भेट धरूं ।
सेवककी अरजी चितमें धरजी,
कर अब मरजी मोक्ष वरूं ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

वसु द्रव्य मिलाई थार भराई,
सन्मुख आई नजर करो ।
तुम शिवसुखदाई धर्म बढ़ाई,
हर दुखदाई अर्घ करो ॥ पां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा ।

पूरण अर्घ बनाय कर, चरणनमें चित लाय ।
भक्तिभाव जिनराजकी, शिव रमणी दरशाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

जयमाला ।

पद्धरी छंद ।

जय नमन करूं शिर नाय नाय, मोकूं वर दीजे हे जिनाय ॥
तुम भक्ति हियेमें रही छाय, सो उमग उमग अरु प्रीति लाय ॥१॥
जय तुम गुण महिमा है अपार, नहिं कवि पंडितजन लहें पार॥
जय तुच्छ बुद्धि मैं करत गान, तुम भक्ति हियेमें रही आन ॥२॥
जय श्रीशत्रुंजय शिखर जोय, निर्वाणभूमि जानो जु सोय ॥

जहां पांडव तीन जु मुक्ति होय, जय राय युधिष्ठिर भीम जोय॥३॥
जय अरजुन जानों धनुप धीर, तासम नहिं जानो कोई वीर॥
जय आठकोडि मुनि और सोय, तिन वरी नारि रंभा जु लोय॥४॥
जय सही परीषह वीस दोय, जय यथाख्यात चारित्र होय॥
जय कायर कंपे सुनो जोय, वे ध्यानारूठ भये जु सोय॥५॥
जय बारह भावन भाय सोय, तेरह विधि चारित धरो सोय॥
जय कर्म करे चकचूर जोय, अरु सिद्ध भये संसार खोय॥६॥
जय सेवक जनकी करहु सोय, जय दर्शन ज्ञान चारित्र होय॥
जय रुलो नहीं संसार माय, अरु थोड़े दिनमें मुक्ति पाय॥७॥
जय 'धर्मचन्द्र' मुनीम सोय, मो अल्प बुद्धिसों मेल होय॥
वे 'धर्मीजन हैं बहुत जोय, सो कही उन्होंने मोहि सोय॥८॥
तुम शत्रुंजय पूजा बनाय, तो बांचें भविजन प्रीति लाय॥
जय 'लाल भगोतीलाल' मोय, तिन रची पाठ पूजन जु सोय॥९॥
जय घाट बाढ़ कछु अर्थ होय, सोधो समार जैसे जु सोय॥
जय भूल चूक जामें जुं होय, सो पंडितजन शोधो जु लोय॥१०॥
जय सम्वतसर गुनईस जोय, अरु ता ऊपर गुनचास होय।
जय पौष सुदी द्वादश जु होय, अरु वार शुक्र जानो जु सोय॥११॥
जय सेवक विनवे जोर हाथ, मो मिले अखयपद वेग नाथ॥
जय चाह रही नहीं और कोय, भवसिंधु उतारो पार मोय॥१२॥

सोरठा।

भक्तिभाव उर लाय, करके जिनगुण पाठको।
मंगल आरती गाय, चरणन शीस नवायके॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्रसे तीन पांडव और आठ कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद।

हरषाय गाय जिनेन्द्र पूजूं, कृत कारित अनुमोदना।
शुभ पुण्य प्रापति अर्थ तिनकी, करी वहु विधि थापना ॥१३॥
जिनराज धर्म समान जगमें, और नाहीं हित धना।
ताते सु जानो भव्य तुम, नित पाठ पूजन भावना ॥१४॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीयुत पं० दीपचंद्रजी वर्णी कृत—

श्रीतारंगागिरि पूजा।
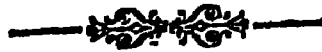
वरदत्तादिक ऊंठ कोटि मुनि जानिये,
मुक्ति गये तारंगागिरिसे मानिये।
तिन सबको शिरनाय सु पूजा ठानिये,
भवदधि तारन जान सु विरद बखानिये॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसे वरदत्तादि साड़े तीन कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

शीतल प्रासुक जल लाय, भाजनमें भरके,
जिन चरनन देत चढ़ाय, रोग त्रिविध हरके।
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरि चन्दन लाय, केशर माँहि घसे,
जिन चरण जजूं चित लाय, भव आताप नसे।
तारंगागिरिसे जान, वरत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

तंदुल अखंड भर थार, उज्वल अति लीजे,
अक्षयपद कारणसार, पुंज सु ढिग कीजे।
तारंगागिरिसे जान, वरत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

चंपा गुलाब जुहि आदि, फूल बहुत लीजे,
पूजों श्रीजिनवर पाद, कामविथा छीजे।

तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥
ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नाना पकवान बनाय, सुवरण थाल भरे,
प्रभुको अरचों चित लाय, रोग क्षुधादि टरे ।
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥
ॐ ह्रींश्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीप कपूर जगाय, जगमग जोति लसे,
करूं आरति जिन चित लाय, मिथ्या तिमिर नसे
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥
ॐ ह्री श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कृष्णागरू धूप सुवास, खेऊं प्रभु आगे ।
जल जाय कर्मकी राशि, ध्यानकला जागे ।
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी ।
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥
ॐ ह्रींश्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति ॥ ७ ॥

श्रीफल कदली बादाम, पुंगीफल लीजे,
पूजों श्रीजिनवर धाम, शिवफल पालीजे।
तारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

शुचि आठों द्रव्य मिलाय, तिनको अर्घ करों,
मन वच तन देहु चढ़ाय, भवतर मोक्ष वरों।
श्रीतारंगागिरिसे जान, वरदत्तादि मुनी,
सब ऊंठ कोटि परमान, ध्याऊं मोक्षधनी ॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

सोरठा ।

वरदत्तादि मुनीन्द्र, ऊंठ कोटि मुक्तहि गये।
वंदत सुर नर इन्द्र, मुक्ति रमनके कारणे ॥ १ ॥

पद्धरी छन्द ।

गुजरात देशके मध्य जान, इक सोहे ईडर संस्थान ॥
ताकी दिशि पच्छिममें बखान, गिरि तारंगा सोहे महान ॥१॥
तहँते मुनि ऊंठ करोड़ सोय, हन कर्म सबै गये मोक्ष सोय ॥
ता गिरिपर मंदिर है विशाल, दर्शनतें चित होवै खुशाल ॥२॥

नायक सुमूल संभव अनूप, देखत भवि ध्यावत निज स्वरूप।
पुनि तीन टोंकपर दर्श जान, भविजन वंदत उर हर्ष ठान ॥३॥
तहाँ कोटि शिला पहली प्रसिद्ध, दूजी तीजी है मोक्ष सिद्ध ॥
तिनपर जिनचरण विराजमान, दर्शन फल इम सुनिये सुजान॥४॥
जो वंदे भविजन एक बार, मनवांछित फल पावे अपार।
बहु विधि पूजे जो प्रीति लाय, तिनको दारिद क्षणमें पलाय॥५॥
सब रोग शोक नाशे तुरंत, जो ध्यावे प्रभुको पुण्यवंत ॥
अरु पुत्र पौत्र सम्पत्ति होय, भव भवके दुख डारे सु खोय ॥६॥
इत्यादिक महिमा है अपार, वर्णन कर कवि को लहे पार ॥
अब बहुत कहा कहिये बखान, कहैं 'दीप' लहैं तें मोक्षथान ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीतारंगागिरिसे वरदत्त सागरदत्तादि साढ़े तीन कोटि मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

तारंगा वंदों मन आनन्दो, ध्याऊं मन वच शुद्ध करा।
सब कर्म नशाऊं शिवफल पाऊं, उठ कोटि मुनिराजवरा ॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीयुत धर्मचन्दजी कृत-

श्रीपावागढ पूजा ।

दोहा ।
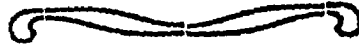
श्रीपावागिरि मुकति शुभ, पाँच कोड़ि मुनिराय।
लाड़ नरेन्द्रको आदि दे, शिवपुर पहुँचे जाय ॥१॥
तिनको आह्वानन करों, मन वच काय लगाय।
शुद्ध भावकर पूजजो, शिव सन्मुख चितलाय ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पावागिरिसिद्धक्षेत्रसे लाड़ नरेन्द्र आदि पाँच करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक ।

छंद त्रोटक।

जल उज्ज्वललीनो प्रासुककीनो, धार सुदीनो हितकारी
जिनचरनचढ़ाऊ कर्मनशाऊं, शिवसुखपाऊं बलिहारी
पावागिरि वन्दौं मनआनन्दो, भवदुखखंदो चितधारी
मुनिपाँचजुकोडं भवदुखछोड़ं, शिवसुखजोडं सुखभारी

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चन्दन घसि लाऊं, गंध मिलाऊं, सब सुख पाऊं हर्ष बड़ो
भवबाधा टारो तपतनिवारो, शिवसुखकारो मोद बड़ो

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

गजमुक्ताचोखे बहुलअनोखे, लखनिरदोखे पुंज करूं।
अक्षयपद पाऊं और न चाऊं, कर्मनशाऊं चरणपरूं॥पा०

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

शुभ फूल मगाऊं गन्ध लखाऊं बहु उमगाऊं भेट धरूं॥
ममकर्म नशावो दाह मिटावो, तुमगुन गाऊं ध्यान धरूं॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज बहु ताजे उज्ज्वल लाजे, सब सुखकाजे चरन धरूं
मो भूख नशावे ज्ञान जगावे, धर्म बढ़ावे चैन करूं॥पा०

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपककी जोतं तम छय होतं, बहुत उद्योतं लाय धरूं
तुम आरतिगाऊं भक्तिबढाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं॥पा

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

बहु धूप मगाऊं गंध लगाऊं, बहु महकाऊं दश दिशिको।
धरअग्निजलाई कर्मखिपाई, भवजन भाई लख हितको॥पा

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

फल प्रासुक लाई भवजन भाई, मिष्ट सुहाई भेट करूं।
शिवपदकी आशा मन हुल्लासा, कर खुद्दलासा मोक्ष करूं॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

वसु द्रव्य मिलाई भवजन भाई, धर्म सहाई अर्घ करूं।
पूजाको गाऊं हर्ष बढ़ाऊं, खूब नचाऊं प्रेम भरूं॥पा०॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९॥

जयमाला।

सोरठा।

करके चोखे भाव, भक्ति भाव उर लायके।
पूजों श्रीजिनराय, पावागिरि वंदो सदा॥

चाल जोगीरासाकी।

श्रीपावागिरि तीर्थ बड़ो है, वंदत शिवसुख होई।
रामचन्द्रके सुत दोय जानो, लाड़ नरेन्द्र जु सोई॥
इनहिं आदि दे पाँच कोटि मुनि, शिवपुर पहुँचे जाई॥
सेवक दो कर जोर वीनवे, मन वच कर चित लाई॥१॥
कर्म काट जे मुक्त पधारे, सब सिद्धनमें जोई।
सुख सत्ता अरु बोध ज्ञानमय, राजत सब सुख होई॥
दर्श अनंतो ज्ञान अनंतो, देखे जाने सोई।
समय एकमें सब ही झलके, लोकालोक जु दोई॥२॥

ज्ञान अतेंद्री पूरन तिनके, सुक्ख अनंतो होई ।
लोक शिखरपर जाय विराजे, जामन मरन न होई ॥
जा पदको तुम प्राप्त भये हो, सो पद मोहि मिलाई ।
भक्ति भावकर निशिदिन वन्दो, निशिदिन शीस नवाई ॥३॥
'धर्मचन्द्र' श्रावककी विनती, धर्म बढ़ो हित दाई ।
जो कोई भविजन पूजन गावें, तन मन प्रीति लगाई ॥
सो तैसो फल जल्दी पावे, पुण्य बढ़े दुख जाई ।
सेवकको सुख जल्दी दीजा, सम्यक् ज्ञान जगाई ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपावागढ़से लाड़ नरेन्द्र और पाँच करोड़ मुनि मोक्ष-पद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तोटक छंद ।

श्रीजिनवरराई करमन भाई, धर्म सुहाई दुख छीजे ।
पूजा नित चाहूं भक्ति बढाऊं, ध्यान लगाऊं सुख कीजे ॥
सुन भवजन भाई द्रव्य मिलाई, बहु गुन गाई नृत्य करो ।
सब ही दुख जाई बहु उमगाई, शिवसुख पाई चरन परो ॥५॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीयुत किशोरीलालजी कृत-

श्रीगजपंथ पूजा ।

अडिल्ल ।

श्रीगजपंथ शिखर जगमें सुखदायजी ।
आठ कोडि मुनिराय परमपद पायजी ।
और गये बलभद्र सात शिवधामजी ।
आह्वानन विधि करूं त्रिविध धर ध्यानजी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथाचलसे सात बलभद्र आदि आठ कोडि मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्रावतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

चाल जोगीरासाकी ।

कंचन मणिमय झारी लेके, गंगाजल भर ल्याई ।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, पूजों गिरि सुखदाई ॥
बलभद्र सात वसु कोडि मुनीश्वर, यहाँपर करम खपाई
केवल लहि शिवधाम पधारे, जजूँ तिन्हें शिरनाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि चन्दन घसि,केशर सुवरण भृंग भराई।
भवआतापनिवारन कारन, श्रीजिनचरण चढ़ाई ॥व०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षत उज्ज्वल चन्द्रकिरण सम,कनक थाल भर लाई।
अक्षय सुख भोगनके कारन, पूजूं देह हुलसाई ॥ व०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पुष्प मनोहर रंग सुरंगी, आवे बहु महकाई।
कामबाणके नाशन कारन, जिनपद भेंट धराई॥वल०॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

घेवर घावर लाडू फेनी, नेवज शुद्ध कराई।
क्षुधावेदनी रोग हरनको, पूजो श्रीजिनराई ॥वल०॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

बाति कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल जोति जगाई ॥
मोहतिमिरके दूर करनको,करो आरती भाई ॥वल०॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

---

१ कलश।

अगर तगर कृष्णागरु लेके, दस गंध धूप बनाई।
खेय अगनिमें श्रीजिन आगे, करम जरें दुखदाई॥ बल०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

फल अति उत्तम पूंगी खारक, श्रीफल आदि सुहाई।
मोक्ष महाफल चाखन कारन, भेंट धरों गुणगाई॥ ब०

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥ ८॥

जल फल आदि वसु दरव अति,
उत्तम मणिमय थाल भराई।
नाच नाच गुण गाय गायके,
श्रीजिन चरन चढ़ाई॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ९॥

जयमाला।

गीता छंद।

गजपंथ गिरिवर शिखर उन्नत, दरश लख सब अघ हरे।
नर नारि जे नित करत वंदन, तिन सुजश जग विस्तरे॥
इस थानतें मुनि आठ कोड़ि, परमपदकूं पायके।
तिनकी अबे जयमाल गाऊँ, सुनो चित हुलसायके॥१॥

पद्धड़ी छंद।

जय गजपंथा गिरिशिखर सार। अति उन्नत है शोभा अपार ॥
ताकी दक्षिण दिश नगर जान। मसरूल नाम ताको प्रधान॥२॥
तहाँ बनी धर्मशाला महान। ता मध्य लसे जिनवर सुथान ॥
तहाँ बने शिखर शोभित उतंग। बहु चित्र विचित्र नाना सुरंग॥३॥
चारों दिशि गुमठी लसत चार। चित्राम रचित नाना प्रकार॥
तिनके ऊपर ध्वजा फहरात। मानुष बुलावत करत हाथ ॥४॥
तहाँ गुम्मजमें श्रीपार्श्वनाथ। राजत पुनि प्रतिमा है विख्यात ॥
तिन दरशन वंदन करन जात। पूजत हैं नित प्रति भव्य भ्रात॥५॥
जिनमन्दिरमें रचना विशेष। आरास रचित अद्भुत अनेक ॥
वेदी उज्ज्वल राजत रंगीन। अति ऊँचे सोहे शिखर तीन ॥६॥
तिनके ऊपर कलसा लसंत। चन्द्रोपम ध्वज दर्पन दिपंत ॥
त्रय कटनी खंभा चार माह। इन्द्रनकी छवि वरनी न जाय॥७॥
ऊपरली कटनी मध्य जान। अन्तिम तीर्थेश विराजमान ॥
भामंडल चँवर सु छत्र तीन। पुनि चरण पादुका द्वय नवीन ॥८॥
पुनि पद्मावति अरु क्षेत्रपाल। तिष्ठत ता आगे रक्षपाल ॥
सन्मुख हस्ती घूमे सदीव। जहाँ पूजा करते भव्य जीव ॥९॥
आगे मंडप रचना विशाल। तहाँ सभा भरे है सदा काल ॥
जहाँ बाँचत पंडित शास्त्र आय। कोई जिनवर गुण मधुर गाय॥१०॥
कोई जाप जपे चरचा करंत। कोई नृत्य करत बाजे बजंत ॥
नौबत झालर घंटा सु झांझ। पुनि होत आरती नित्य सांझ॥११॥
मन्दिर आगे सुन्दर अरण्य। तरु फल फलते दीसे रमण्य ॥

अति सघन वृक्ष शीतल सु छाँय । जहाँ पथिक लेत विश्राम आय ॥ १२ ॥
इस उपवनमें बहु विध रसाल । चाखत जात्री होवें खुशाल ॥
नीबू नारंगी अनार जाम । सीताफल श्रीफल केल आम ॥ १३ ॥
अमली जामन ककड़ी अरंड । कैंथोड़ी ऊंचे लगे झुंड ।
सेतूत लेखवो अरु खजूर । खारक अंजीर अरीठ पूर ॥ १४ ॥
फफनेस बोर वड़ नीम जान । पुनि पुष्पवाटिका शोभमान ॥
चंपो जु चमेलि गुलाब कुंज । जाई जु मोगरो भ्रमर गुंज ॥ १५ ॥
गुलमहंदी और अनेक बेल । तिन ऊपर पंक्षी करत केल ॥
या बाग माहिं गंभीर कूप । शीतल जल मिष्ट सु दुग्धरूप ॥ १६ ॥
ता पीवत ही गद सकल नाश । यह अतिशय क्षेत्रतनो प्रकाश ।
बँगला विशाल रमणीक जान । भट्टारक तिष्ठनको सु थान ॥ १७ ॥
परकोट बनो चउ तरफ सार । मध दरवाजो अति शोभकार ॥
ताके ऊपर नौबत बजंत । सुनके जात्री आनँद लहंत ॥ १८ ॥
यहां दंडकवनकी भूमि संत । तसु निकट शहर नाशिक बसंत ॥
तहाँ गंगा नाम नदी पुनीत । वैष्णवजन ठाने धर्म तीर्थ ॥ १९ ॥
पुनि त्रिम्बक सीतागुफा कीन । गजपंथ धाम सबमें प्रचीन ॥
भट्टारकजी हिमकीर्ति आय । वंदे गजपंथा शिखर जाय ॥ २० ॥
मन्दिरकी नींव दई लगाय । पुनि पैड़ी ऊपरको चढ़ाय ॥
दो शतक पिचौत्तर है सिवान । तसु आगे मोटी भीत जान ॥ २१ ॥
इक होद भरयो निर्मल सु नीर । शीतल सु मिष्ट राजत गँहीर ॥
भवि प्रक्षालित वसु दरव आन । कोई तीर्थ जान कर है सनान ॥ २२ ॥
त्रय गुफा मध्य दरशन करंत । बलभद्र सात तिष्ठत महंत ॥

इक विम्ब लसत उन्नत विशाल । श्रीपार्श्वनाथ वंदत त्रिकाल ॥२३॥
द्वय मानभद्र इक चरण पाद । मुनि आठ कोड़ि थल है अनाद ॥
वंदन पूजन कर धरत ध्यान । निज जन्म सुफल मानत सुजान ॥२४॥
यहाँसे उतरत गिरितट सु थान । इक कुंड नीर निर्मल वखान ॥
इक छत्री उज्ज्वल है पुनीत । भट्टारकजी क्षेमेन्द्रकीर्ति ॥२५॥
तिनके सु चरणपादुक रचाय । अवलोकन कर निज थल सु आय ॥
कोई फेरी पर्वतकी करंत । इमि वंदनकर अति सुख लहंत ॥२६॥
श्रीमुनीकीर्ति महाराज आय । श्रावकजनको उपदेश थाय ॥
पुनि नानचंद अरु फतहचंद । शोलापुरवासी धरमकंद ॥२७॥
हूमड़ जैनी उपदेश धार । करवाई प्रतिष्ठा विम्बसार ॥
संवत उगणीस अरु तियाल । सुधि तेरस माघतनी विशाल ॥२८॥
कल्याण पाँच कीनो उछाव । करवाये अति उत्तम सुभाव ॥
श्रीमहावीर अन्तिम तीर्थेश । पधराये वेदीमें जिनेश ॥२९॥
भट्टारकजी दियो सूर मंत्र । कीने पुनि जंत्र अनेक तंत्र ॥
मानस सु थंभ रचिये उतंग । कञ्चन कलशा शोभे उचंग ॥३०॥
बहु संघ जुरे तिनकूं बुलाय । भक्ती कीनी उर हरष ल्याय ॥
बहु विधि पकवान बनाय सार । जौनार दई आनँद धार ॥३१॥
सुदि पूनम माघतनी सुजान । पूरण हूवो उत्सव महान ॥
याही तिथिकूं उत्तम सुजोय । यात्रा उत्सव दर साल होय ॥३२॥
पुनि सदावरत नित प्रति वटंत । कोई विमुख जाय नहिं साधु संत ॥
यहाँ देश दशके संघ आय । उत्सव करते पूजन कराय ॥३३॥
दे दरब करत भंडार सोय । कोई करत रसोई मुदित होय ॥

वहु मर्यादा अद्भुत सु ठाठ। आवे जात्री मुख करत पाठ ॥२४॥
संवत् उगणीसौ उगणचास। बुध अष्टम रवि दिन पौष मास॥
यह पूजन विधि कीनी बनाय। सज्जन प्रति विनती यही भाय॥२५॥
जो भूलचूक तुम भंग होय। तुम शुद्ध करो बुधिवान लोय॥
गजपंथ शिखर मुनि आठ कोड़। बलभद्र सात नामि हाथ जोड़॥२६॥

दोहा।

यह गजपंथा शिखरकी, पूज रची सुखदाय।
'लालकिशोरी' तुच्छ बुध, हाथ जोड़ सिरनाय॥२७॥

ॐ ह्रीं श्रीगजपंथ सिद्धक्षेत्रसे सात बलभद्र और आठ करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द त्रिभंगी।

जय जय भगवंता श्रीगजपंथा, वंदत संता भाव धरं।
सुर नर खग ध्यावें भगत बढ़ावें, पूज रचावें प्रीति करं॥
फल सुरपद पावें, अमर कहावें, नरपद पावें शिव पावें।
यह जान सु भाई जात्र कराई, जग जस थाई सुख पावें॥२८॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीयुत स्व० पं० सवाईसिंगई गोपालसाहजी कृत-

श्री तुंगीगिरि पूजा।

दोहा।

सिद्धक्षेत्र उत्कृष्ट अति, तुंगीगिरि शुभ थान।
मुकति गये मुनिराज जे, ते लिष्टहु इत आन॥

ॐ ह्रीं श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रसे राम, हनू, सुग्रीव, सुडील, गव, गवाख्य, नील, महानील और निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

गंगाजल प्रासुक भर झारी, तुष चरनन ढिग धारों।
परिग्रह तिसना लगी आदिकी, ताको है निरवारो॥
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिरि थिर थाई।
कोड़ि निन्यानवे मुक्त गये मुनि, पूजो मन वच काई॥

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

चन्दन केशर गार, भली विधि, धार देत पग आगे।
भव भरमन आताप जासतें, पूजत तुरतहिं भागे॥रा०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

मुक्ताफल सम उज्ज्वल अक्षत, थार धारकर पूजों ।
अक्षयपदकों प्रापतिकारन,या सम और न दूजो ।राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

कमल केतकी वेल चमेली, जापर अलि गुंजावे ।
पुष्पनसों अरचों तुमचरनन,कामविथा मिट जावे॥रा०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

गूजा खाजे व्यंजन ताजे, तुरतहिं घृत उपराजे ।
दृग सुख कारन सन्मुख धारे, क्षुधावेदनी भाजे॥राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा ॥ ५ ।

दीप रतनकर सुरपति पूजत, हम कपूर धर खासे ।
नाशे मिथ्यातम अनादिका ज्ञान भानु परकाशे॥राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कृष्णागरु चन्दन, जे सुवास मन भावें।
खेवत धूप धूमके मिसकर, दुष्टकरम उड जावें ॥राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल पुंगी शुचि नारंगी, केला आम्र सुवासी।
पूजत अष्ट करम दल धूजत,पाऊँ पद अविनासी॥राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जल फलादि वसु दरव साजके, हेमपात्र भर लाऊँ।
मन वच काय नमूं तुव चरना, बार बार शिरनाऊँ। राम०

ॐ ह्रीं श्रीतुंगीगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला।

दोहा।

राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुंगीगिरि थित थाय।
कोडि निन्यानवे मुकति गये मुनि, पूजों मन वच काय ॥१॥
तुम पद प्रापत कारने, सुमरों तुम गुणमाल।
मति माफक वरनन करों, सार सुभग जयमाल ॥ २ ॥

धन्य धन्य मुनिराज, कठिन व्रतधारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥
दो पर्वत हैं अति तुंग चूलिका भारी।
मानो मेरु शिखर उनहार दृगन सुखकारी ॥३॥
पहलो है मांगी नाम तुंगी है दूजो।
जहाँ चढ़त जीव थक जात करम चिर धूजो ॥
अति सुन्दर मन्दिर लखत भई सुध म्हारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥
वे धन्य धन्य मुनिराज कठिन व्रत धारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥ ४ ॥

जहाँ राम हनू सुग्रीव सु खग वलधारी ।
अरु गव गवाक्ष महानील नील अघहारी ॥
इन आदि निन्यानवे कोड़ि मुनी तप कीना ।
ल्यो पंचमगतिको वास बहुरि गत रही ना ॥५॥
मैं पूजों त्रिकरन शुद्धनसे अघ भारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥
तुम विरत अहिंसा लिया दयाके कारन ।
ता पोखनको वच झूठ किया निरवारन ॥६॥
पुनि भये अदत्ता वस्तु सरवके त्यागी ।
नव बाढ़ सहित व्रत ब्रह्मचर्य अनुरागी ।
चउवीस परिग्रह त्याग भये अनगारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥७॥
षट्काय दयाके हेतु निरख भू चाले ।
वच शास्त्र उकत अनुसार असतको टाले ॥
भोजनके षट् चालीस दोष निरवारे ।
लख जंतु वस्तुको लेय देख भू धारे ॥ ८ ॥
पन करन विषै चकचूर भये अविकारी ।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥
षट् आवश्यक नित करें नेम निरवाहैं ।
तज न्हवन क्रिया जलकाय घात नहि चाहैं ॥९॥
निज करसों लुंचें केश राग तन भागी ।
बालकवत निर्भय रहे वस्त्रके त्यागी ॥

कभी दंतधवन नहीं करें दया व्रतधारी।
भव भवमें सेवा करन चरन मिले मोहि थारी ॥१०॥
बिन जाँचे भोजन लेय उदंड अहारी।
लघु भुक्ति करें इक वार तपी अधिकारी ॥
जामें आलस नहीं बढ़े रोग है हीना।
निशि दिन रस आतम चखें करें विधि छीना ॥११॥
कर घात करम चउ नाश ज्ञान उजयारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥
दे भव्यनको उपदेश अघाती जारे।
भये मुकतिरमाके कंत अष्ट गुन धारे ॥१२॥
तिन सिद्धनिको मैं नमों सिद्धिके काजा।
सिधथलमें दें मोहि वास त्रिजगके राजा ॥
नावत नित माथ 'गुपाल' तुम्हें बहु भारी।
भव भवमें सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रसे राम हनू सुग्रीव सुडील गव गवाख्य नील महानील और निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

तुम गुनमाला परम विशाला, जे पहरे नित भव्य गले।
नाशें अघजाला है सुख हाला, नित प्रति मंगल होत भले ॥१४॥

इत्याशीर्वादः।

श्रीयुत कन्हैयालालजी कृत-

श्रीकुंथलगिरि पूजा।

दोहा।

तीरथ परम पवित्र अति, कुंथ शैल शुभ थान।
जहांते मुनि शिवथल गये, पूजों थिर मन आन॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

अडिल।

उत्तम उज्ज्वल नीर क्षीर सम छानके।
कनकपात्रमें धार देत त्रय आनके॥
पूजों सिद्ध सु क्षेत्र हिये हरषायके।
कर मन वच तन शुद्ध करमवश टारके॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

चंदन दाह निकंदन केशर गारकें।
अरचों तुम ढिग आय शुद्ध मन धारकें॥ पूजों०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

तंदुल सोम समान अखंडित आनके।
हाटक थार भराय जजों शिर नायके॥ पूजों०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

सुरद्रुम सम जे पुष्प सुगंधित लायके।
दहन काम पन वाण धरों सुख पायके॥ पूजों०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

व्यंजन विविध प्रकार पगे घृत खांड़के।
अरपत श्रीजिनराज क्षुधा ढिग छांड़के॥ पूजों०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

कनक थारमें धार कपूर जलायके।
बोध लह्यो तम नाश मिथ्या भ्रम जालके॥ पूजों०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

अगर आदि दस वस्तु गन्ध जुत मेलके।
करम दहनके काज दहों ढिंग शैलके॥ पूजों०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

फल उत्कृष्ट सु मिष्ट जे प्रासुक लायके।
शिवफल प्रापति काज जजों उमगायके॥ पूजों०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फलादि वसु दरव लेय शुत ठानके।
अर्घ जजों तुम पाप हरष मन आनके ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

तुम गुन अगम अपार गुरु, मैं बुद्धि कर हों बाल।
पै सहाय तुव भक्तिवश, वरनत तुव गुनमाल ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद ।

कुल ऊँच राय सुत अति गंभीर । कुलभूषण दिशभूषण है वीर ॥
लख राज-ऋद्धिका अति असार। वय बालमांहिं तप कठिन धार ॥२॥
द्वादश विधि व्रतकी सहत पीर। तेरा विधि चारित धरत वीर ॥
गुन मूल बीस अरु आठ धार। सहें परीषह दस अरु आठ चार॥३॥
भू निरखि जंतु कर नित विहार। धर्मोपदेश देते विचार ॥
मुनि भरमत पहुँचे कुंथ शैल। पाहन तरु कंटक कठिन गैल ॥४॥
निर्जन वन लख भये ध्यान लीन। सुर पूरव अरि उपसर्ग कीन ॥
बहु सिंघ सरप अरु दैत्य आय। गरजत फुंकारत मुख चलाय ॥५॥
तहाँ राम लखन सीता समेत । ता दिन थिति कीनी थी अचेत ॥
मुनिपर वेदन यह लखत घोर। दोऊ वीर उचारे वच कठोर ॥६॥

रे देव; दुष्ट तू जाति नीच। मुनि दुखित किये तुझ आई मीच॥
हम आगे तू कित भाग जाय। तुह देहैं दुष्कृतकी सजाय॥७॥
यह कह दोऊ करें धनुष धार। हरि बल लख सुर डरपौ अपार॥
तब मान सीख मुनि चरण धार। ता छिन घाते विधि घाति चार॥८॥
उपजत केवल सुरकल्प आय। राचि गंधकुटी पद शीश नाय॥
सुन निज भवसुर आनंद पाय। जुग विद्या दे निज थल सिधाय॥९॥
प्रभु भाखे दो विधि धर्म सार। सुन धारे जिनते भये पार॥
मुनिराज अघाती घात कीन। गति पंचम थित अचल लीन॥१०॥
पूजा सुर नर निरवान कीन। गत ऊंचतनो फल सुफल लीन॥
भव भरमत हम बहु दुःख पाय। पूजें तुम चरना चित लाय॥११॥
अरजी सुन कीजे महर आप। तासों मेरा भव भ्रमन ताप॥
विनवे अधिकी क्या 'कनईलाल' दुख मेट सकल सुख देव हाल॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथलगिरि सिद्धक्षेत्रसे कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

तुम दुख हरता सब सुख करता, भरता शिवतिय मोखपती।
मैं शरने आयो तुम गुन गायो, उमगायो ज्यों हती मती॥१३॥

इत्याशीर्वादः।
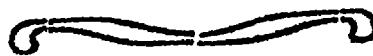
स्व० कवि जवाहरलालजी कृत-

श्रीमुक्तागिरि पूजा ।

दोहा ।

मुक्तागिरि तीरथ परम, सकल सिद्ध दातार ।
तातैं पावन होत निज, नमों सीस कर धार ॥१॥

गीता छंद ।

येही जंबूद्वीप मध्य भरतक्षेत्र सो जानिये ।
आरज सो खंड मझार, जाके परम सुन्दर मानिये ॥
ईशान दिशि अचला जु पुरकी, नाम मुक्तागिरि तहां ।
कोडि साड़े तीन मुनिवर, शिवपुरी पहुंच जहां॥२॥

दोहा ।

पारसप्रभुको आदि दे, चौवीसों जिनराय ।
पूजों पद जुग पद्म सम, सुर शिवपद सुखदाय ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रसे साड़े तीन करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

परम प्रासुक नीर निर्मल, क्षीर दधि सम लीजिये ।
हेम झारी मांहि भरके, धार सुन्दर दीजिये ॥
तीर्थ मुक्तागिरि मनोहर, परम पावन शुभ कहो ।
कोटि साड़े तीन मुनिवर, जहांते शिवपुर लहो ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन सु पावन दुख मिटावन, अति सुगंध मिलाइये ॥
डार कर कर्पूर केशर, नीर सों घिस ल्याइये॥तीर्थ०॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

विमल तंदुल ले अखंडित, ज्योति निशिपति सम धरे ।
कनक थारी मांहि धरके पूज कर पावन परे ॥तीर्थ०

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरवृक्षके सम फूल लेकर, गन्धकर मधुकर फिरें ।
मदनबाण विनाशवेकों, प्रभु चरन पूजा करें ॥ती०।

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

छहों रसकर जुक्त नेवज, कनक थारीमें भरों ।
भावसे प्रभु चरन पूजों, क्षुधादिक मनकी हरो ॥ती०

ॐ ह्रीं मुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

रतनदीप कपूर बाती, जोत जगमग होत है ।
मोहतिमिर विनाशवेको, भानु सम उद्योत है ॥ती०

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कूट मलयागिरि सो चंदन, अगर आदि मिलाइये।
ले दशांगी धूप सुंदर, अगन मांहि जराइये ॥तीर्थ०॥
ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

ल्याय येला लौंग दाडिम, और फल बहुते घने।
नेत्र रसना लगे सुंदर, फल अनूप चढ़ावने ॥तीर्थ०॥
ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने।
धाय चरन चढ़ाय भविजन, मोक्षफलको पावने॥ती०॥
ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

दोहा।

मुक्तागिरिके सीसपर, बहुत जिनालय जान।
तिनकी अब जयमालिका, सुनो भव्य दे कान ॥१॥

जयमाला।

पद्धरी छन्द।

श्रीमुक्तागिरि तीरथ विशाल। महिमा जाकी अद्भुत रसाल॥
जुग पर्वत बीच परे दो कोन। मुक्तागिरि जहां सुखको सु भौन ॥२॥
चढ़िये सिवान जहां ऊपर सो भान। दहलानेपर सो सार जान॥
यात्री जहां डेरा करें आन। अति मुदित है चित्त उगमाय ॥३॥
ऊपर शुचि जलसों भरे कुंड। जहँ सपरे यात्रिनके सु झुंड॥
बहु विधिकी द्रव्य धरी सो धोय। पूजनको भविजन चले सोय ॥४॥

जहां मन्दिर वीच वने रसाल। पारसप्रभुकी मूरत विशाल॥
पूजत जहां भविजन हरष धार। भव भवको पुण्य भरे भंडार॥५॥
बावन जगह दर्शन जिनेश। पूजत जिनवरको सुर महेश॥
इक मन्दिरमें भुयरो जु सोय। प्रतिमा श्रीशांतिजिनेश होय॥६॥
दर्शन कर नरभव सुफल होय। जहां जन्म जन्मके पाप खोय॥
मेढागिरिका है गुफा भाय। मन्दिर सुन्दर इक साम काय॥७॥
प्रतिमा श्रीजिनवर देवराज। दर्शन कर पूरन होय काज॥
मेढागिरिके ऊपर सुजान। द्वय टोंक बनी अति सौम्यमान॥८॥
इक पांडे बालक मुनि कराय। इक भागवलीकी जान रमाय॥
जहां श्रीजिनवरके चरण सार। वंदत मनवांछित सुखदातार॥९॥
बावन मन्दिर जहँ शोभकार। महिमा तिनकी अद्भुत अपार॥
जहँ सुर आवत नित प्रति महेश। स्तुति करते प्रभु तुम दिनेश॥१०॥
जहाँ सुर नाचत नाना प्रकार। जै जै जै जै धुनि उचार॥
थै थै थै अब नाचत सुचाल। अति हर्ष सहित नित नमत भाल॥११॥
मुहचंग उपंग सु तूर सजे। मुरली स्वर वीन प्रवीन वजे॥
द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम वाजत मृदंग। झननननझननन नूपूर सु रंग॥१२॥
तननननननननन परतसु तान। घननन घंटा करत ध्यान॥
इहि विधि वादित्र वाजें अपार। सुर गावत अब नाना प्रकार॥१३॥
अतिशय जाके हैं अति विशाल। जहाँ केशर अब बरसे त्रिकाल॥
अनहद नित वजें वाजे अपार। गंधोदकादिक वर्षाकी वहार॥१४॥
तहां मारुत मंद सुगंध सोय। जिय जात जहां न विरोध होय॥

अतिशय जहां नाना प्रकार । भविजन हियमें हरख धार ॥१५॥
जहां कोड़ जु साड़े तीन मान । मुनि मोक्ष गये मुनिये सुजान ॥
वंदत जवाहर अब बार बार । भवसागरसे प्रभु तार तार॥१६॥
प्रभु अशरन शरन आधार धार । सब विघ्न तूल गिरि जार जार ॥
तू धन्य देव कृपानिधान । अज्ञान मिथ्यातम हरन भान ॥१७॥
प्रभु दयासिंधु जै जै महेश । भव बाधा अब मेटो जिनेश ॥
मै बहुत भ्रम्यो चिरकाल काल । अब हो दयाल मुझ पाल पाल॥१८॥
तातें मैं तुमरे शरण आय । यह अरज करूं पग शीस नाय ॥
मम कर्म बंध देउं चूर चूर । आनंद अनूपम पूर पूर ॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रसे साड़े तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घत्ता ।

मुक्तागिरि पूजे अति सुख हूजे, ऋद्धि है है पूरी ।
अति कर्म विनाशे ज्ञान प्रकाशे, शिव पदवीको सुखकारी ॥२०॥

दोहा ।

अठरा सो इक्यानवै, वैशाख मास तम लीन ।
तिथि दशमी शनिवारकी, पूजा पूरण कीन ॥२१॥

इत्याशीर्वादः ।

स्व० भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी कृत–

श्रीसिद्धवरकूट पूजा ।

दोहा ।

सिद्धकूट तीरथ महा, है उत्कृष्ट सुथान ।
मन वच काया कर नमों, होय पापकी हान ॥१॥
दोय चक्री मन्मथ जु दस, गये तहँते निर्वान ।
पद पंकज तिनके नमों, हरे कर्म बलवान ॥२॥
रेवाजीके तटनतें, हूंठ कोड़ि मुनि जान ।
कर्म काट तहँते गये, मोक्षपुरी शुभ थान ॥३॥
जगमें तीर्थ प्रधान है, सिद्धवरकूट महान ।
अल्पमती मैं किमि कहों, अद्भुत महिमा जान ॥४॥

अडिल्ल छंद ।

इन्द्रादिक सुर जाय, तहां वन्दन करैं ।
नागपति तहँ आय बहुत थुति उचरैं ॥
नरपति नित प्रति जाय, तहां बहु भावसों ।
पूजन करहिं त्रिकाल, भगत बहु चावसों ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसे दो चक्री दश कुमारादि साढ़े तीन करोड़ मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

उत्तम रेवा जल ल्याय; मणिमय भर झारी ।
प्रभु चरनन देऊं चढ़ाय, जन्म जरा हारी ॥
द्वय चक्री दस कामकुमार, भवतर मोक्ष गये ।
तातैं पूजों पद सार, मनमें हरष ठये ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरि चन्दन ल्याय, केशर शुभ डारी ।
प्रभु चरनन देत चढ़ाय, भवभय दुखहारी ॥ द्वय चक्री० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल उज्ज्वल अविकार, मुकतासम सोहे ।
भरकर कंचनमय थाल, सुर नर मन मोहे ॥ द्वय चक्री० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

ले पहुप सुगंधित सार, तापर अलि गाजे ।
जिन चरनन देत चढ़ाय, कामव्यथा भाजे ॥ द्वय च० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नेवज नाना परकार, षट्रस स्वाद मई ।
पद पंकज देहुं चढ़ाय, सुवरन थार लई ॥ द्वय चक्री० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

मणिमय दीपकको ल्याय, कदली सुत बाती ।
जोती जगमग लहकाय, मोह-तिमिर घाती ॥द्रय०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कृष्णागरु आदिक ल्याय, धूप दहन खेई ।
वसु दुष्ट करम जर जांय, भव भव सुख लेई ॥द्रय०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

श्रीफल दाख बदाम, केला अमृत मई ।
लेकर बहु फल सुख-धाम, जिनवर पूज ठई ॥द्रय०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्योमोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चन्दन अक्षत लेय, सुमन महा प्यारी ।
चरु दीप धूप फल सोय, अरघ करों भारी ॥द्रय०॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

जयमाला ।

दोहा ।

सिद्धवर कूट सुथानकी, रचना कहूँ बनाय ।
अति विचित्र रमनीक अति, कहते अल्प कर भाय ॥१॥

पद्धरी छन्द।

जय पर्वत अति उन्नत विशाल। तापर त्रय मन्दिर शोभकार॥१॥
तामें जिनबिम्ब विराजमान। जय रतनमई प्रतिमा बखान॥२॥
ताकी शोभा किमि कहे सोय। सुरपति मन देखत थकित होय॥
तिन मन्दिरकी दिशि चार जान। तिनकूं वरनूं अव प्रीति ठान॥३॥
ताकी पूरब दिशि तासु जान। तामें सु कमल फूले महान॥
कमलनपर मधुकर भ्रमे जोय। ता धुनकर पूरित दिशा होय॥४॥
ता सरवरपर नाना प्रकार। द्रुम[1] फूल रहे अति शोभकार॥
छह ऋतुके वृक्ष फूले फलाय। ऋतुराज[2] सदा क्रीड़ा कराय॥५॥
मंदिरकी दक्षिन दिशा सार। सुरनदी वहे रेवा जु सार॥
ताके तट दोनों अति पवित्र। विद्याधर वहु विधि करें नृत्य॥६॥
फिर तहँते उत्तर दिशा जान। इक कुंड बना है शोभमान॥
ता कुंड बीच जात्री नहाय। तिन बहुत जनमके पाप जाय॥७॥
ता कुंड ऊपर अति विचित्र। इक पांडुशिला है अति पवित्र॥
तिस थान बीच देवेन्द्र सोय। जिनबिम्ब धरे हैं सीस जोय॥८॥
ताकी पश्चिम दिशि अति विशाल। कावेरी सोहे अति रसाल॥
इन आदि मध्य जे भूमि जान। जय स्वयंसिद्ध परवत महान॥९॥
तापर तप धारो दोय चक्रीश। दस कामकुमार भये जगतईश॥
इन आदि मुनि आहूठ कोड़। तिनको वंदों मैं हाथ जोड़॥१०॥
इनको केवल उपज्यो सुज्ञान। देवेन्द्र जुआसन कँपो जान॥
तव अमरपुरीतें इन्द्र आय। तहँ अष्ट द्रव्य साजे वनाय॥११॥

१ वृक्ष. २ वसंत.

तब पूजा ठाने देव इन्द्र । सब मिलकें गावें शतक इन्द्र ॥
तहँ यात्रा आवें झुंड झुंड । सब पूज धरें तंदुल अखंड ॥१२॥
कोई श्रीफल ल्यावे अरु बदाम । कोई ल्यावे पुंगीफल सु नाम ॥
कोई अमृतफल केलां सु ल्याय। कोई अष्ट द्रव्य ले पूज ठाय ॥१३॥
केई सूत्र पढ़ें अति हर्ष ठान। केई शास्त्र सुनें बहु प्रीति मान ॥
कोई जिनगुन गावें सुर संगीत। कोई नाचें गावें धरें प्रीत ॥१४॥
इत्यादि ठाट नितप्रति लहाय । बरनन किम मुखतें कहो जाय ॥
सुरपति खगपति आदिक जु सोय । रचना देखत मन थकित होय॥
सुर नर विद्याधर हर्ष मान । जिन गुन गावें हिय प्रीति ठान ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घत्ता छन्द ।

जो सिद्धवर पूजे, अति सुख हूजे, ता गृह संपति नाहि टरे ॥
ताको जस सुर नर मिल गावें, 'महेन्द्रकीर्ति' जिनभक्त करे॥१६॥

दोहा ।

सिद्धवरकूट सुथानकी, महिमा अगम अपार ।
अल्पमती मैं किमि कहों, सुरगुरु लहै न पार ॥१७॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीयुत छगनजी कृत-

चूलगिरि (बावनगजाजी) की पूजा ।

छन्द शार्दूलविक्रीडित ।

आर्या क्षेत्र विहार बोध भवि ये दशग्रीव सुत भ्रातना ।
सम्यक्तादि गुणाष्ट प्राप्ति शिव कर्मारि घाती हना ॥
ता भगवान प्रति प्रार्थना सुध हृदै त्वद्भक्ति ममवासना ।
आह्वानन विमुक्तनाथ तु पुनः अत्राय तिष्ठो जिना ॥

ॐ ह्रीं श्रीबड़वानी-चूलिगिरिसे इन्द्रजीत कुंभकर्णादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

गीता छंद ।

पंचम उदधि सम नीर ले, त्रय धार तिन चरणन करों ।
चिर रुजग जन्म जरारु अंतक, ताहि अब तो परिहरों ॥
दशग्रीव अंगज अनुज आदि, ऋषीश जहँतें शिव लही ।
सो शैल बड़वानी निकट, गिरि चूलकी पूजा ठही ॥

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

घसि मलय कुंकुम शुद्ध जो, अलिगण न छोड़े तासको
सो गंध शीतल कंद सज, भव-विरह हर भवतापको ॥द०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

शशि वर्ण खंडन मुक्त शोभा, मुक्त नहिं ताकी धरें।
सो शालि तंदुल करन मंगल, वेग भय क्षयकी हरें ॥ द्र०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरद्रुम निपज सुरलोकके, बहु वर्ण फूल मंगाइये।
अथवा कनक कृत वेल मोगर, चंपकादि चुनाइये ॥ द्र०

ॐ ह्रींश्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

कृत रूपकार अनूप छह रस, युक्त अमृत मान जो।
सो चारुचरु जिन अग्र धर, निज भूख वेदन टारि जो। द्र०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

बहु मूल्य रत्न उद्योतयुत, भय वायु वरजित जो जगे।
सो दीप कंचन थाल धर, अरि दुष्ट मोहादिक भजे ॥ द्र०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दश गंध कृष्णागरु कपूरादिक, सुगंधित ल्यावने।
दहिं ज्वलन मध्य मनो भवान्तर, सर्वके विधि जालने ॥

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सौमनस नंदन वृक्षके युत, मिष्ट ता फल लेयके ।
ता देखते द्दग घ्राण मोहे, मोक्षपुरकूं वेयके ॥द्दश०॥

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलं प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

सजि सौंज आठों होय ठाडो, हरष बाढ़ो कथन विन ।
है न थ भक्तिवश मिलजो, पुर न छूटे एक दिन॥ द्द०

ॐ ह्रीं श्रीचूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

सोरठा ।

करमन कर चकचूर, बसिय शिवालय जाय तुम ।
मेरी आशा पूर, बहुत दुखी संसारमें ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद ।

बंदों श्री युगल ऋषीश स्वाम । कर कर्म युद्ध लहि मोक्ष धाम ॥
है इन्द्रजीत तुम सत्य नाम । कर्मेन्द्र मोहको कियो काम ॥२॥
हो कुंभकर्ण सार्थक हि आप । भवकर्ण ज्ञान तुम कुंभ थाप ॥
कर्मन कृत बंदों गृह मझार । बलि वासुदेवने दये डार ॥३॥
सत ज्ञान वानि सम्यक्त युक्त । जानों सत चारित आप युक्त ॥
विधु रिपु दुखदाई मूल जान । तापै तुमने खैंची कमान ॥४॥
औ सर्व जीवसों क्षमा धार । भाई अनुप्रेक्षा परम सार ।
तन आदि अथिर दीखे समस्त। है नेह करन सम कौन वस्त ॥५॥
अशरण न शरण कहुं जक्त माहिं। अहमिन्द्रादिक मृत्यू लहाहिं ॥
भवबनमें है नाहिं सार कुच्छ। तीर्थंकर त्यागें जान तुच्छ ॥ ६ ॥

ये जीव भ्रमत एकाकी आप। नहीं संग मित्र सुत मात बाप॥
ये देह अन्य फिर कौन मुज्झ। वश मोह परत न हिये सुज्झ॥७॥
पल रुधिर पीव मल मुत्र आदि। इनकर निपजी तन होय खाद॥
जोगनहि चपलता कर्म द्वार। तिन रोक हिये संवर विचार॥८॥
तप बल छूटन विधि करम सुक्ख। तिहु लोक भ्रमत लहि जीव दुक्ख॥
बिन बोध भ्रम्यो चहुँ गति मझार। शिवकर्त्ता धर्म कदेन धार॥९॥
यों चिंतत बहु जन लार लेय। जिनदीक्षा धारी हित करेय॥
अट्ठाईस गुण मुनि मूल धार। चारों अराधना कुं अराध॥१०॥
नाना विधि आसन धार धार। तप करत शुद्ध विधि मार मार॥
चउ घाति नाश केवल उपाय। भवि जीव बोध जिनवृष लगाय॥११॥
करके विहार भवि सुक्खदाय। बड़वानी आये अल्प आय॥
गिरि चूल तिष्ठ करि कर्म नाश। छिनमें संसार कियो विनाश॥१२॥
अति आनंददायक सिद्धक्षेत्र। पूजों भवि जीव निजात्म हेत॥
धन धन्य तिनहिको भाग्य जान। तिन पुण्यबंध होवे महान॥१३॥
इन्द्रादि आय उत्सव अनूप। कीनो लहि हर्षित भये भूप॥
ता गिरिकी उत्तरि दिशि मझार। रेवा सरिता है पूर्ण वार॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीबड़वानी-चूलगिरिसे इन्द्रजीत कुंभकर्णादि मुनि सिद्धपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता।

गिरिराज अनूपम पूजे भूपम, तिन भवि कूपम जल दीना।
यामें शक नाहीं कर्म नशाहीं, 'छगन' मगन होय थुति कीना॥१५॥

इत्याशीर्वादः।

बाबू पन्नालालजी कृत-

श्रीगुणावा सिद्धक्षेत्रकी पूजा ।

सोरठा ।

धन्य गुणावा थान, गौतमस्वामी शिवगए ।
पूजहु भव्य सुजान, अहि निशि करि उर थापना ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रसे श्रीगौतमस्वामी सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

अति शुद्ध सुधा सम तोय, हेमाचल सोहे ।
जर जनम मरन नहिं होय, सब ही मनमोहे ॥
जगकी भव ताप निवार, पूजा सुखदाई ।
वन नगर गुणावा सार, गौतम शिवपाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केशर करपुर मिलाय, चन्दन घिसवाई ।
अरचों श्रीजिन ढिगजाय, सुन्दर महकाई ॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अति शुद्ध अखंड विशाल, तंदुल पुंज धरे।
भरि भरि कंचनमय थाल, पूजों रोग हरे॥
ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व-
पामीति स्वाहा॥ ३॥
गेंदा गुलाब कनेर, पुष्पादिक प्यारे।
सो करिकरि ढेर सुढेर, कामानल जारे॥
ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं
निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥
अति घेवर फेंनी ताप, नैवज स्वाद भरी।
सब भूख निवारनकाज, प्रभु ढिग जाय धरी॥
ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं
निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥
घृतसे भरि सुवरण दीप, जगमग जोति थसे।
करि आरति जाय समीप, मिथ्या तिमिर नसे॥
ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं
निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥
कर्पूर सुगंधित पूर, अगर तगर डारों।
अग्निरनन खेवों धूप, करम कलंक जारों॥
ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपा-
मीतिं स्वाहा॥ ७॥
पिस्ता बादाम सुपारि, श्रीफल सुखदाई।
मन वांछित फल दातार, ऐसे जिनराई॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

सब अष्ट द्रव्य करि त्यार, प्रभु ढिग जोरि धरों।
'पन्ना' प्रति मंगलकार, शिवपद जाय वरों॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावासिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

जयमाला।

दोहा।

गौतम स्वामीजी भये, गणधर-वीर-प्रधान।
तिनकी कछु जैमाल अब, सूनों भव्य धरि ध्यान ॥१॥

चौपाई।

वंदो श्रीमहावीर जिनंदा। पाप निकंदन आनँद कंदा॥
जिन परताप भये वहुनामी। जै जै जै श्रीगौतम स्वामी ॥२॥
भयो जहाँ प्रभु केवलज्ञाना। समोशरण इन्द्रादिक ठाना॥
खिरी दिव्यध्वनि नहिं भगवान। गणधर नहिं कोई गुणवान॥३॥
तब विद्यारथि भेष बनाई। वासव गौतमके ढिग जाई॥
पूछत अर्थ सूत्र यों भाषित। षद्द्रव्य पंचास्तिकाय भाषित॥४॥
यह सुनि गौतम वचन उचारे। तोसों करूँ वाद क्या प्यारे॥
चलि अपने गुरु वीर नजीका। करिहैं शास्त्रार्थ तहँ नीका॥५॥
ऐसी कह ततकाल सिधारे। समोशरणमें आप पधारे॥
देखत मानथंभको जोंहीं। खंडित भयो मान सब त्योंही॥६॥

भूल गये सब वाद विवादा। कीनी श्रुति सब छाँडि विषादा॥
सोई गणधर भये प्रधाना। धन्य धन्य जवंत सुजाना॥७॥
धन्य गुणावा नगर सुहाई। जहँते उन शिवलछमी पाई॥
सुन्दर ताल नगर अति सोहें। ताबिच मंदिर जन मनमोहे॥८॥
चरण पादुका बनें अनूपा। पूरब धर्मशाल अरु कूपा॥
सन्मुख वेदी अति सुखदाई। वीरचरण प्रतिमादि सुहाई॥९॥
चारों ओर चरण चौवीसी। तिन लखि हर्ष होत अति हीसी॥
पूजनीक अति ठाम अपारा। दुखदारिद्र नशावन हारा॥१०॥

घत्ता।

जो पढ़े पढ़ावे पूज रचावे, सो मनवांछित फल पावें॥
सुत लाभ विहारी आज्ञाकारी, 'पन्ना' जगत न भरमावे॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीगुणावा सिद्धक्षेत्रभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पय।

शहर हाथरस पास, मनोहर ग्राम विसाना।
तामधि श्रावक लोग, बसे सब ही बुधिवाना॥
संवत शत उनईस, तापै धारि बहत्तर।
विक्रम साल प्रमान, जेठ मासा वीतन पर॥१२॥

इत्याशीर्वादः।

बाबु पन्नालालजी कृत-

श्रीपटना सिद्धक्षेत्रकी पूजा।

दोहा।

उत्तम देश बिहारमें, पटना नगर सुहाय।
शेठ सुदर्शन शिव गये, पूजों मन वच काय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपटना सिद्धक्षेत्रसे सुदर्शन शेठ सिद्धपद प्राप्तये अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक।

नित पूजोरे भाई, या श्रावक कुलमें आयकें।
नित पूजोरे भाई, श्रीपटना नगर सुहावनों ॥
गंगाजल अति शुद्ध मनोहर, झारी कनक भराई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, ढारों नेह लगाई ॥नि०
जंबूद्वीप भरत आरजमें, देश बिहार सुहाई।
पटना नगरी उपवनमें, शिव शेठ सुदर्शन पाई ॥नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदन चंद्र मिलायसु उज्वल, केशर संग घिसाई।
महक उठे सब दिशनु मनोहर, पूजों जिनपद राई॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

शुद्ध अमल शशि सम मुक्ताफल, अक्षत पुंज सुहाई।
अक्षयपदके कारण भविजन, पूजों मन हरषाई॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

पांचों विधिके पुष्प सुगंधित, नभलों महक उड़ाई।
पूजों काम विकार मिटावन, श्रीजिनके ढिग जाई॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो कामवाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

उत्तम नेवज मिष्ट सुधासम, रस संयुक्त बनाई।
भूख निवारन कंचन थारन, भरभर देहु चढ़ाई॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

मनिमय भाजन घृतसे पूरित, जगमग जोति जगाई।
सब मिल भविजन करो आरती, मिथ्या तिमिर पलाई॥

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ६॥

अगर तगर कपूर सुहावन, द्रव्य सुगंध मंगाई।
खेवो धूप धूमसे वसुविधि, करम कलंक जराई॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥ ७॥

एला केला लौंग सुपारी, नरियल फल सुखदाई।
भरभर पूजों थाल भविकजन, वांछित फल पाई॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

अष्ट दरव ले पूज रचाओ, सब मिल हर्ष बढ़ाई ।
झालर घंटा नाद बजावो, पन्ना मंगल गाई ॥ नि०

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

शेठ सुदर्शन जे भये, शीलवान गुणखान ।
तिनकी अब जैमालिका, सुनहु भव्य दे कान ॥१॥

पद्धरी छन्द ।

जय शेठ सुदर्शन शीलवंत । जग छाय रही महिमा अनंत ॥
तिनकी कछु मैं जैमाल गाय । उर पूज रचाऊँ हर्षलाय ॥२॥
है भरतक्षेत्र मधि अंग देश । चंपापुर सोहे तहँ विशेष ॥
नृप धात्रीवाहन राज गेह । प्रिय अभयमती सों अति सनेह ॥३॥
तहँ मुख्य शेठ एक वृषभदास । तिन शेठानी जिनमतिय खास ॥
तिन चाकर ग्वाला सुभग नाम । मुनि देखे वनमें एक जाम ॥४॥
सो महामंत्र नवकार पाय । अति भयो प्रफुल्लित कही न जाय ॥
पुनि एक दिवस गंगा मँझार । डूबतमें जापत मंत्र सार ॥५॥
तुरतहिं मर शेठ घरे विशाल । सुत भयो सुदर्शन भाग्यशाल ॥
सबको सुखदाई मिष्ट बैन । निज कपिल यार सँग दिवस रैन ॥६॥
पढि खेल कूद भयो अति सयान । तब शेठ मनोरमा संग सुजान ॥
शुभ साइत ब्याह दियो कराय । सोभो गत सुख अति हर्ष ढाय ॥७॥

पुनि कछुक काल भीतर सुकंत । सुत एक भयो अति रूपवंत ॥
तब शेठ सुदर्शन धीरवान । निज काम करें अति हर्ष ठान ॥८॥
तब कपिला नारि आसक्त होय । घर शेठ बुलाये तुरत सोय ॥
तहँ शेठ नपुंसक मिस बनाय । निज शील लियो ऐसे बचाय॥९॥
जब खबर सुनी रानी तुरंत । मन करी प्रतिज्ञा दीढवंत ॥
मैं भोग करूं वासूं सिहाय । तब ही मम जीवन सुफल थाय ॥१०॥
इत शेठ अष्टमी कर उपास । मरघटमें ध्यानारूढ़ खास ॥
तहँ चेली उनके पास जाय । रानीको हाल दियो सुनाय ॥११॥
तहँ शेठ निरुत्तर देखि हाय । निज कन्धेपै धरिके उठाय ॥
फिर पहुँची रानी पास जाय । उन अचल देख तुरतै रिसाय॥१२॥
यों खबर करी नृप पास जाय । मो शील बिगास्यो शेठ आय ॥
यों सुनत वैन नृप क्रोध छाय । मारनको हुकम दीयो सुनाय॥१३॥
तहँ करी प्रतिज्ञा शीलवंत । मुनि पदवी धारूं यदि बचंत ॥
सो देव करी रक्षा सु आय । पुनि दीक्षित ह्वै वनको सिधाय॥१४॥
सो करत करत कछु दिन विहार । तब आए पटना नगर सार॥
तहँ देवदत्ता वेश्या रहाय । मिस भोजन मुनि लीने बुलाय॥१५॥
उन कामचेष्टा कर सिहाय । झट शेठ लिये शय्या गिराय ॥
लख ऐसो मनमें कर विचार । उपसर्ग मेरो यदि हो निवार ॥१६॥
सन्यास धरूं नगरी न जाउँ । वन ही वन करंत तप फिराऊँ ॥
यह लख वेश्या भइ निरुपाय । निशि प्रेतभूमि दीने पठाय ॥१७॥
तहँ रानी व्यंतर जोनि पाय । नाना उपसर्ग कियो बनाय ॥
मुनि पुण्यभावसे यक्ष आय । तब लिए शेठ तुरतहि बचाय ॥१८॥

सो कठिन तपस्या कर निदान। भयो शेठ जहाँ केवल जु ज्ञान॥
सो कछुक काल करके विहार। उन मुक्ति वरीं अति श्रेष्ठ नार॥१९॥

घत्ता।

इक ग्वाल गमारा जप नवकारा, शेठ सुदर्शन तन पाई॥
सुत लालविहारी आज्ञाकारी, 'पन्ना' यह पूजा गाई॥२०॥

ॐ ह्रीं श्रीपटनासिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः।

पं० दीपचन्दजी वर्णी कृत-

श्री बाहूबली (गोम्मटस्वामी) पूजा।

अडिल्ल छंद।

आदीश्वरके द्वितीय पुत्र बाहूबली।
कामदेव भये प्रथम श्रीबाहूबली॥
नये न मस्तक युद्ध कियो बाहूबली।
चक्री अरु विधि जीत जजूं बाहूबली॥

ॐ ह्रीं श्रीपोदनापुरके उद्यानसे श्रीबाहूबलीस्वामी मोक्षपद प्राप्तेभ्य अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक।

पंचम उदधितनो जल लेकर, कंचन झारी मांहि भरूं।
जन्म जरा मृतु नाश करनको, बाहूबलि पद धार करूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केशर संग घिसू मलयागिरि, चंदन अधिक सुगंध रचूं।
भव आताप विनाशन कारन, श्रीबाहूबलि पद चरचूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

उज्ज्वल मुक्ताफल सम तंदुल, धोकर कंचन थाल भरूं।
अक्षयपदके हेतु विनयसे, बाहूबलि ढिग पुंज करूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिने अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कमल केतुकी चंप चमेली, सुमन सुगंधित लाय धरूं।
मदनवान निरवारन कारन, बाहूबलिको भेंट करूं॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिने कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नाना विध पकवान मनोहर, खाजे ताजे पट् सरमय।
क्षुधारोग विध्वंश करनको, जजूं बाहुबलि चरन उभय।

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

सजो दीपघृत वा कर्पूरका, जासों दशदिक तम भागे।
नाशन अंतर तमको आरति, करूं बाहूबलि प्रभु आगे।

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिने मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निवपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

अगर तगर कपूर धूप दश, अंगी अगनीमें खेऊं ।
दुष्ट अष्ट विधि नष्ट करनको, श्रीबाहूबलि पद खेऊं ॥
ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलिस्वामिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

आम अनार जाम नारंगी, पुंगी खारक श्रीफलको ।
मोक्ष महाफल प्राप्त हेतु मैं, अर्पन करूं बाहूबलिको ॥
ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिने मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

ऐसे मनहर अष्ट द्रव्य सब, हेम थाल भरके लाऊं ।
पद अनर्घके प्राप्ति हेतु मैं, श्रीबाहूबलि गुण गाऊं ॥
ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहूबलिस्वामिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

दोहा ।

बाहूबलि निज बाहु बल, हरे शत्रु बलवान ।
जये नये नहिं सिद्ध भए, पोदनपुर उद्यान ॥१॥

जयमाला ।

पद्धरी छन्द ।

श्रीआदीश्वरके सुत सुजान । है प्रथम भरत चक्री महान ॥
दूजे बाहूबलि बल अपार । पुनि एक ऊनशत हैं कुमार ॥२॥
सब ही हैं चर्म शरीर सोय । सब ही पहुँचे शिव कर्म खोय ॥
तिनमें बाहूबलि द्वितिय पुत्र । रतिपति तिनको सुनिये चरित्र ॥ ३॥
जब ऋषभ ऋषीपद धरो सार । तब राज भाग कीने विचार ॥
अरु दिये यथाविधि नृपन दान । सब करें प्रजा पालन सुजान ॥४॥

तिनमें श्रीबाहूबलि कुमार। पायो पोदनपुर राज्य सार॥
अरु भरत अवधिपुर भये नरेश। सुख भोगे बहु विधि तिन सुरेश॥५॥
जब उदय चक्रिपद भयो आय। षट् खंड साधने गये राय॥
अरु किये बहुत नृप निजाधीन। फिर लौटे रजधानी प्रवीन॥६॥
पर चक्र करो नाहिं पुर प्रवेश। तब निमती भाष्यो सुन नरेश॥
तुम भ्रात पोदनापुर नरेन्द्र। नहीं आज्ञा माने तुझ नृपेन्द्र॥७॥
सुन भरत तबहि पाती लिखाय। पोदनपुर दूत दियो पठाय॥
आ नमों भेंटयुत विनय धार। या हो जावो रणको तयार॥८॥
वैसांदर जिमि घृत परे आय। तिमि कोपे भुजबलि पत्र पाय॥
फिर फाड़ पत्र कहे सुनहु दूत। हम और भरत द्वय ऋषभ पूत॥९॥
हम भोगें पितुको दियो राज। भरतहिं शिर नावें कौन काज॥
यदि भरत अधिक कर है गरूर। तो करिहों रणमें चूर चूर॥१०॥
सुन भज्यो दूत गयो भरत पास। कह दीनों सब वृत्तान्त खास॥
तब सजी सैन्य लख उभय ओर। मंत्रीगण सोचें हिय बहोर॥११॥
ये उभय बली. अरु चरम देह। लड़ व्यर्थ सैन्यको क्षय करेह॥
इमि सोच गये निज नृपन पास। विन्ती सुनिये प्रभु कहहिं दास॥१२॥
तुम उभय बली अरु स्वयमबुद्ध। नहिं सैन्य मरे कीजे सु युद्ध॥
तब नेत्र मल्ल जल तीन युद्ध। कीने द्वय भ्रात स्वयम प्रबुद्ध॥१३॥
तीनोंमें हारे भरत राय। तब कोप चक्र दीनो चलाय॥
सो चक्र करो नहिं गोत्र घात। चक्री इमि सब विधि खाई मात॥१४॥
यह देख चरित भुजबलि कुमार। उपजो हिय दृढ़ वैराग्य सार॥
अरु त्याग राज तृणवत असार। कर क्षमा महाव्रत धरे सार॥१५॥

तप एकाशन कीनो महान। पर उपजो नहिं केवल सुज्ञान ॥
इक शल्य लग रही इति लार। मैं खड़ो भरत पृथ्वी मझार ॥१६॥
तब शल्य दूर की भरतराय। नहिं वसुधापति कोई जग वनाय ॥
यह आदि अंत विन जग महान। बहुते भये हैं हैं मुझ समान ॥१७॥
इमि सुनत शल्य हनि घाति चार। उपजायो केवलज्ञान सार ॥
फिर पोदनपुरके वन मझार। पंचमगति लहि कर कर्म क्षार ॥१८॥
तिन प्रतिमा अतिशय युत अपार। है श्रवणवेलगोला मझार ॥
गौमटस्वामी तिँह कहत सोय। नहिं छाया ताकी पड़त कोय ॥१९॥
अरु तुंग हाथ छब्बीस धार। निरधार खड़ी पर्वत मझार ॥
यात्री आवें वंदन अपार। दर्शन कर पातक करें क्षार ॥२०॥
इत्यादि और अतिशय अपार। कथ 'दीपचन्द्र' नहिं लहे पार ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलिस्वामिने पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घत्ता ।

सब विधि सुखकारी महिमा भारी, भुजबलि धारी अपरम्पार ।
सुन विनय हमारी शिव सुखकारी, हे त्रिपुरारी अचल अपार ॥

इत्याशीर्वादः ।

मुनीम मुन्नालालजी परवारकृत-

श्रीराजगृहीजी क्षेत्र पूजा ।

सोरठा ।

जम्बू द्वीप मझार, दक्षिण भरत सु क्षेत्र है ।
ता मधि अति विख्यात, मगध सुदेश शिरोमणी ॥१॥

अडिल्ल ॥

मगध देशकी राजधानि सोहे सही ।
राजगृही विख्यात पुरातन है मही ॥
तिस नगरीके पास महां गिरि पांच हैं ।
अति उतंग तिन शिखर सु शोभ लहात हैं ॥२॥
विपुलाचल, रतना, उदयागिरि जानिये ।
सोनागिरि व्यवहार सुगिरि, शुभ नाम ये ॥
तिनके ऊपर मंदिर परम विशालजी ।
एकोनविंशति वंदे सु पूजहु लालजी ॥ ३ ॥

दोहा ।

तीर्थंकर तेईसके, समोशरण सुखदाय ।
करि विहार तहँ आय हैं, वासुपूज्य नहिं आय ॥४॥
चोवीसों जिन राजके, बिम्ब चरण सुखदाय ।
तिन सबकी पूजा करों, तिष्ठ तिष्ठ इत आय ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रके पंच पर्वतोंपर उनईस मंदिरस्थ जिनबिंब व चरण समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक।

त्रिभंगी छंद।

क्षीरोदधि पानी, दूध समानी, तसु उनमानी, जल लायो।
तसु धार करीजे, तृषा हरीजे, शांति सुदीजे, गुण गायो ॥१॥
श्री पंच महागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुख कारी।
जिन बिंब सुदर्शन, आनंद वरसत, जन्म मृत्यु, भय दुख हारी ॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिर पावन, केसर बावन, गंध घिसा कर ले आयो।
मम दाह निकंदौ भव दुख दंदौ तुम पद वंदों शिरनायो ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय सुगंधं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

अक्षत अनियारे, जल सु पखारे, पुंज तिहारे, ढिग लाये।
अक्षय पद दीजे, निज समकीजे, दोष हरीजे, गुण गाये ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

बेला सुचमेली, कुन्दवकोली, चंप जुहीले, गुलाब धरों।
अति प्रासुक फूला है गुण मूला, काम समूला नाश करों ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

फैनी अरु बावर, लाडू घेवर, तुम पद ढिग धर, सुखपाये।
मम क्षुधा हरीजे, समता दीजे, विनती लीजे गुण गाये ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

दीपक उजियारा, कपूर मजारा, निजकर धारा अर्ज करूं।
मम तिमर हरीजे ज्ञान सुदीजे कृपा करीजे पांव परूं ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दश गंध कुटाया, धूप बनाया, अग्नि जलाया, कर्म नशै।
मम दुख करो दूरा, करमहिं चूरा, आनंद पूरा, सुख विलसे॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

बादाम छुहारे, पिस्ता प्यारे, श्रीफल धारे, भेंट करूं।
मन वांछित दीजे शिव सुख कीजे ढील न कीजे मोद धरूं॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीती स्वाहा ॥ ८ ॥

वसु द्रव्य मिलाये, भावि मन भाये, प्रभु गुण गाये, नृत्य करों।
भवभव दुखनाशा शिवमग भासा, चित्त हुलाशा सुक्ख करों॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

अथ प्रत्येक अर्घ।

गीता छंद।

अंतिम तीर्थंकर वीर स्वामी, समोशरण युत आय हैं
तहँ राय श्रेणिक पूज्यकर, उन धर्म सुनि सुख पाय हैं॥

गौतम सु गणधर, ज्ञान चक्षु धर, भव्य संबोधे तहां॥
सो वाणिरचना ग्रंथ मांहीं, आज प्रचलित है यहां॥

दोहा।

सो विपुलाचल सीस पर, छह मंदिर विख्यात।
द्वय प्रतिमा शोभा धरें, चरण पादुका सात॥

ॐ ह्रीं श्री विपुलाचलपर्वत पर सात मंदिरस्थ द्वय प्रतिमा व सात युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

अडिल्ल।

रतनागिरि पर दो मंदिर सोहैं सही।
प्रतिमा दो रमनीय परम शोभा लही॥
चरण पादुका चार भीतरै सोहनी।
एक पादुका दूजे मंदिर में बनी॥

दोहा।

वसुविध द्रव्य मिलायकर, दोइ कर जोड़े सार।
प्रभुसे हमरी वीनती, आवागमन निवार॥

ॐ ह्रीं श्री रतनागिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व पांच युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

अडिल्ल।

उदयगिर पर मंदिर दो हैं विशाल जी।
श्री पारस प्रभु आदि विंद छह हाल जी॥
चरणपादुका तीन विराजत हैं सही।
दर्शन हैं छह जगह परम शोभा लही॥

सोरठा।

अष्ट द्रव्य लें थार, मन वच तनसे पूज हों।
जन्म मरण दुख टार, पाऊं शिव सुख परमगति ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री उदयागिरि पर्वतपर दो मंदिरस्थ छह प्रतिमा व तीन युगल चरणकलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

दोहा।

श्रमणागिरिके सीसपर, दो मंदिर सुविशाल।
आदिनाथजी मूल हैं, दर्शन भव्य; निहाल ॥
द्वय प्रतिमा इक चरण तंह, राजत हैं सुखकार ॥
अष्ट द्रव्य युत पूज हैं, ते उतरे भव पार ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रमणागिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व युगल चरण कमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

पद्धरी छन्द।

श्री गिरि व्हवहार अनूप जान। तंह मंदिर सात बने महान।
तिनके अति उन्नत सिखर सोय। देखत भवि मन आनंद होय॥१॥
अरु टूटे मंदिर पड़े सार। पुनि गुफा एक अद्भुत प्रकार।
सबमें प्रतिमा सु विराजमांन। पुनि चरण तहां सु अनेक जांन॥२
ले अष्ट द्रव्य युत पूज कीन। मन वच तन कर त्रय धोक दीन।
सब दुष्ट करम भये चूर चूर। जासें सुख पाया पूर पूर ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री व्यवहारगिर पर्वतपर सात मंदिर व टूटे मंदिर व एकगुफामें अनेक प्रतिमां व चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

उन्नत पर्वत पांच पर, उनईस जिनालय जान ।
मुनिसुव्रत जिनराजके, कल्याणक बहु आन ॥

छन्द मोती दाम ।

बनो राजगृह नग्र अनूप । बनी तह खाई कोट सु रूप ।
बने तह बाग महां रमनीक । फले फल फूल सु वृक्ष जु ठीक ॥
तहां नरनार सु पंडित जान । करैं नित पात्रनको बहु दान ।
करै नित श्रावक शुभ षट् कर्म । सु पूजन वंदन आदिक धर्म ॥
रहै बन मुनिवर आर्जिका जान । करैं नित भक्ति सु श्रावक आन ।
हैं राय सुमित्र महां गुणवांन । सवै गुण ईस सु पंडित जांन ॥
सु नारि पद्मावति नाम सु जांन । सवै गुण पूरित रूप महांन ।
जु श्रावण दोज वदी दिन सार । सुपने सोलह देखे निशसार ॥
सु होत प्रभात पतिय ढिग जाय । सुपन फल सुनि मन हर्ष लहाय ।
प्रभु तीर्थंकर गर्भ मझार । अपराजितसे आये गुणधार ॥
सु सेव करैं नित देविय आय । नगर नर नार जु हर्ष लहाय ।
यों सुखमें भये नव माह व्यतीत । वदी वैशाख दशमि शुभमीत ॥
सु जन्म प्रभुको भयो सुखदाय । सु आसन कंपो तवै हरिराय ।
अवधिकर इन्द्र जनम प्रभु जान । किया परिवार सहित सु प्रयान ॥
प्रदक्षिण तीन नगर दी आय । शची धर हर्ष प्रसू गृह जाय ।
सु सुखनिद्रा माताको धार । प्रभु कर लेय किया नमस्कार ॥
सु लेय हरी निज गोदहिं धार । सुनेत्र सहस धर रूप निहार ।

ऐरावत गज चढि मेरुपै जाय। सु पांडुकपर प्रभुको पधराय॥
सहस अरु आठ कलश शुभ लेय। क्षीरोदधि नीरसे धार ढरेय।
सु भूषण बहु प्रभुको पहराय। सु नृत्य किया वादित्र बजाय॥
सु पूज रु भक्ति तहां बहु कीन। सु जन्म सफल अपनो करलीन।
सु लाय पिता कर सौंप विराट। सु नृत्य किया अति आनंद ठाट॥
मुनिसुव्रत नाम तबै हरि धार। जु श्यामवरण छवि है सुखकार।
प्रभु क्रमसो योवन पदहिं धार। सु राज रु भोग अनेक प्रकार॥
जु एक दिना सु महल्ल मझार। बैठे शत खण्ड पै थे सुखकार।
आकाश मझार इक बदल देख। तत्क्षण चित्र लिखत शुभपेख॥
जु लिखितहि ताहि विलय सुजान। लहो वैराग्य परम सुख खानि।
सु भावत भावन बारह सार। वदी वैशाख दशमि सुखकार॥
सु आय लाकांत नियोग सुकीन। सु इंद्रहिं कांध चले सुप्रवीन।
तहां वन जायके लुंच विशाल। धरो तप दुद्धर बार प्रकार॥
सुघाति करम हनि ज्ञान सु पाय। वदी वैशाख की नौमि सुहाय।
समवसृति इंद्र तहां रचि सार। प्रभु उपदेश दे भव्यहिं तार॥
यही कल्याण चहूं सुखकार। सु राजगृही नगरी वो पहार।
प्रभु मुनिसुव्रत मेरे हो स्वामि। देवहु निज वास हमें अभिराम॥
सु नाश अघाति सम्मेदसे जाय। सु निरजर कूटतें मोक्ष सिधाय।
सु अंतिम प्रभु महावीर जिनाय। आये विपुलाचलपै सुखदाय॥
जु रायसु श्रेणिक भक्ति समेत। सु प्रश्न हजार किये धर्म हेत।
सु गौतम गणधरजी सुखकार। सु उत्तर दय सु भव्यहि तार॥

जु श्रेणिक क्षायक सम्यकधार। प्रकृति तीर्थंकर बंध जु सार।
वही जिन वानिका अदलों प्रकाश। सु ग्रंथनमांहि जु देखो हुलास॥
जिनेश्वर और तहां इकवीस। विहार करंत रहे गिरि सीस।
सु वानि खिरी भवि जीवनकाज। मुनी तत्र भव्य तजा गृहराज॥
सु पर्वत पास हैं कुंड अनेक। भरे जल पूरित गर्म सु टेक।
करै तह यात्रि सु आय स्नान। सु द्रव्य मनोरम धोवत जान॥
सु चालत वंदन हरषहि धार। सु वंदन ते कर्म होवत छार।
करें पुनि लौट सु आय स्नान। थकावट जाय सुं सुक्ख महान॥
बनी धर्मशाला महा रमणीय। सु यात्रि तहां विश्राम सुलीय।
प्रभू पद वंदित मैं हरषाय। मुझे नित दर्शन दो सुखदाय॥
जु अल्पहि बुद्धि थकी मैं बनाय। सुधारहु भूल जु पंडित भाय।
दुहु कर जोड नमैं 'मुन्नालाल'। प्रभु वेगं करो मुझे जु निहाल॥

घत्ता छन्द।

मुनिसुव्रत वंदित, मन आनंदित, भव दुख दंदहि जाय पलाय।
श्री पंच पहाडी, अति सुख कारी, पूजन भविजन शिव सुखदाय॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा

दोहा।

पंच महा गिरि राजको, पूजे मन वच काय।
पुत्र पौत्र संपति लहे, अनुक्रम शिवपुर जाय॥

इत्याशीर्वादः।

मुनीम मुन्नीलालजी परवार कृत—

श्री मंदारगिरिजी पूजन।

दोहा।

अंग देशके मध्य है चंपापुर सुख खानि।
राय तहां वसुपूज्य हैं, विजया देवी रानि ॥१॥

अडिल्ल।

वासुपूज्य तसु पुत्र तीर्थपद धारजी।
गर्भ जन्म तिन चंपानगर मझारजी ॥
तप करते यह वन चंपापुरके सही।
ज्ञान ऊपजो ताही वनके मध्य ही ॥ २ ॥
मोक्ष गये मंदारशैलके शिखर तें।
पर्वत चंपा पास सु दीसत दूर तें ॥
सो पंच कल्याणक भूमि पूजता चावसों।
वासुपूज्य जिनराज तिष्ठ इत आवसों ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंच कल्याणक भूमि अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट्। संन्निधिकरणं।

अष्टक।

गीता छन्द।

पद्म द्रहको नीर उज्वल, कनक भाजनमें भरों।
मम जन्म मृत्यु जरा निवारन, पूज प्रभुपदकी करों॥

श्री वासुपूज्य जिनेंद्रने गर्भ जन्म लिया चंपा पुरी।
श्री तपसु ज्ञान अरन्य शैल, मंदारतें शिवतिय वरी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनपंचकल्याणकभूमिभ्यो जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

केशर कपूर वो मलय बावन, घिस सुगन्ध बनाइया।
संसारताप विनाश कारण, भर कटोरि चढ़ाइया॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो संसारताप विनाशनाय सुगंधं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

देव जीर सुवास तंदुल, अमल भवि मन मोहये।
सो हेमथारहि धरत पदढिग, अखय शिवपद चाहिये॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

बेला चमेली चंपा जूही, गुलाब कुन्द मंगायके।
चुन चुन धरूं अति शुद्ध पहुपहि,काम मूल नशायके॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥ ४॥

फैनी सु बाबर लाडु घेवर, पूआ शुद्ध बनाइया।
वर हेम भाजन धरत पद ढिग,जजत भूख भगाइया॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणक भूमिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

बाती कपूरकी धार घृतमें, दीप ले आरति करों।
अज्ञान मोहनि अंध भाजत, ज्ञान भानु उदय करो॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणकभूमिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

ले गंध दशविधि चूर भूर सु अग्नि मध्य जरावही।
मम कर्म दुष्ट अनादि जलते, धूम तिन सु उड़ावही ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनपंचकल्याणकभूमिभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्री फल सु आम्र नारंगी केला, जायफल घो लाइये।
ते धरत प्रभु ढिग चरण भेंट, सु मोघ शिवफल चाहिये॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणकभूमिभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल मिलाय सु अर्घ लेकर, कनक भाजनमें धरौं।
मम दुःख भव भव दूर भाजत, पूज्य प्रभु पदकी करौं ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पंचकल्याणकभूमिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

सत्तर धनु तन तुंग है, वर्ण सु छवि है लाल।
दशवें दिवते चय भये, लक्ष बहत्तर साल ॥ १ ॥
जन्में शतभिषा नक्षत्रमें, बाल ब्रह्म व्रत लेय।
महिष चिन्ह पद पद लसे, गाऊं गुण सुख देय ॥२॥

पद्धरी छन्द ।

जय वासुपूज्य करुणा निधान, भवदधिसे तारन हार जान ।
वसुपूज्य नृपति चंपापुरीश, विजया देवी रानी सुधीश ॥
ताके शुभ गरभ रहो महान, वदि छट असाढ़की तिथिय जान ।
तव छप्पन देवी रहत लार, माताको सेवत अधिक प्यार ॥
सुखमें नव मांह भये व्यतीत, फागुन वादि चौदश दिन सु चीत ।
प्रभु जन्म भयो आनन्दकार, तव इन्द्रनि मुकुट नये सु बार ॥
स्वर्गनवासी घर घंट नाद, ज्योतिष इन्द्रानि घर सिंहनाद ।
पुनि भवनवासि घर बजे शंख, व्यंतर घर पट पट बजे झंख ॥
अनहद सुनि प्रभुका जन्म जान, चल सात पैंड कीनी प्रणाम ।
पुनि परिजनयुत साजि चले सोय, चतुरनिकायनि हरि हर्ष होय॥
ऐरावत गज चढ़ि स्वर्गराय, पुरि परदक्षिण दी तीन जाय ।
तब शची प्रसूतहि थान जाय, माताको सुख निद्रा कराय ॥
दूजो सुत धरि प्रभु गोद लेय, सौधर्म ईशकर प्रभुहिं देय ।
हरि नेत्र सहसकर रूप देख, नहिं तृप्त होत फिर फिर सु देख॥
ईशान इन्द्र सिर छत्र धार, तीजे चौथे हरि चवर ढार ।
जय जय नभमें करि शब्द जोय, गये पांडुक वन हरि प्रमुद होय॥
तित शिला पांडुपर प्रभु विठाय, क्षीरोदाध जल निजकर सु लाय ।
सिर सहस कलश अरु आठ ढार, आभूषण शचि पहिराये प्यार॥
पुनि अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, निज जन्म सफल सब हरि गिनीन।
बहु उत्सव करत जु नगर आयं, पितु गोद धार हरि थान जाय॥

प्रभु लाल वरण छवि शोभ लीन, नहि राज किया नहिं भोगकीन।
सो कुंवर काल वैराग्य धार, फागुन वदि चौदस सुक्खकार ॥
आवन भाई वारह प्रकार, दिव ब्रह्म रिषी चलि हर्ष धार।
तिन आय विराग प्रशंस कीन, चंपा वनमें कचलोंच कीन।
तवही मनपर्यय ज्ञान धार, तप करते प्रभु वारह प्रकार ॥
वाईस परीषह वह सहंत, पुनि क्षपकश्रेणि चढ घातिहंत।
सुदि माघ द्वितीया कर्म जार, उपजो पद केवल सुक्खकार ॥
तब इन्द्र हुकम धरनेन्द्र चाल, देविन जानी मन हर्ष धार।
समोसृत वहु विधि युत सो वनाय, वेदी सुकोट वारह सभाय ॥
प्रभु दिव्यध्वनि उपदेश देय, सुनि भविजन मन आनंद लेय।
केई मुनिवर केई गृही व्रत्त, केई अर्जिक श्रावकनी पवित्र ॥
सो कर विहार प्रभु देश देश, मेटे भविजीवनिके कलेश।
रहि आयु शेष जब मास एक, तब आये गिरि मंदार टेक ॥
तह धार योग अघाति नाश, भये सिद्ध अनंते गुणनिरास।
भादों सुद चादश रान्ह[1] काल, मुनि चौरानव युत शिवविशाल॥
रह गये केश अरु नख जु शेष, उड़ि गय सर्व पुद्गल प्रदेश।
तब इन्द्र अवधि प्रभु मोक्ष जान, मंदार शिखर आये सु जान ॥
चतुरनिकायनि मन हर्ष धार, प्रभुको शरीर रचियो जु सार।
वहु विधिसे तिनकी पूज कीन, पुनि अग्निकुमर पद धोक दीन॥
तिन मुकटसे अग्नि भई तयार, ताकर कीना प्रभु संस्कार।

---

१ अपरान्ह।

जय जय करते निज थान जाय, सो पूज्य क्षेत्र भवि सुक्खदाय॥
ता पर्वतपर मंदिर विशाल, तामें युग चरण चतुर्थ काल।
पुनि छोटा मंदिर एक और, त्रय युगल चरण हैं भक्ति ठौर॥
प्रभु पंच कल्याणक युत जिनेश, मेटो हमरे भव भव कलेश।
सो चरण सीस धारत त्रिकाल, नमि अरज करत है 'मुन्नालाल'॥
वंदित मन वांछित फल लहाय, पूजे ते वसु विधि अरि नशाय।
हम अल्प बुद्धि जयमाल गाय, भवि करो शुद्ध पंडित सुभाय॥

घत्ता।

मन वच तन वंदित कर्म निकंदित, जन्म जन्म दुख जाय पलाय।
श्रीगिरि मंदारा दुख हरतारा, सुख दातार, मोक्ष दिवाय॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनपंचकल्याणकभूमिभ्यो महार्घं नि०

सोरठा।

वासु पूज्य जिनराज, तुम पद युगपर शीस धरूं।
सरें हमारे काज, यातें शिव पद सुःख लहूं॥

श्री अतिशय क्षेत्र पपौरा पूजन।

(पं० देवीसिंहजी टीकमगढ़ द्वारा रचित)

दोहा।

अतिशय क्षेत्र प्रधान अति, नाम "पपौरा" जान।
टीकमगढ़ से पूर्व दिशा, तीन मील परवान॥१॥
साठ अधिक पंद्रह जहां (७५) जिन मंदिर सुखकार।
जिन प्रतिमा तिहिं मधि लसें, चौबीसों दुखहार॥२॥

चरण कमल उरधार तिहिं, पुन पुन शीश नवाय।
पूजन तिन की रचत हों, कीजे भवि हर्षाय ॥३॥
क्षेत्र पपौरा मधि लसत, चोबीसों जिनराय।
चरण कमल तिन के शुभग, पूजत हों हर्षाय ॥४॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र पपौरा स्थित चतुर्विंशति जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र पपौरा स्थित चतुर्विंशति जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र पपौरा स्थित चतुर्विंशति जिनेन्द्र अत्र ममसन्निहितो भव २ वषट् सन्निधिकरणं।

(ढाल सोलहकारण पूजा की)

सुन्दर क्षारी निर्मल नीर, जिन चौबीस जजों धरधीर।
जगतपति हो, जय जय नाथ जगतपति हो ॥
क्षेत्र पपौरा उत्तम थान, पचहत्तर श्री जिनवर धाम।
जगत पति हो० ॥ क्षेत्र पपौरा०

ॐ ह्रीं अतिशय० जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय ॥ जलम् ॥१॥

केशर चंदन आदि सुगंध, जिन चौबीस जजों तज धंध। जगत पति हो० ॥ क्षेत्र पपौरा०

ॐ ह्रीं अतिशय० संसार ताप विनाशनाय ॥ चन्दनम् ॥२॥

उज्वल तंदुल परम अखंड, जिन चौबीस जजों तज दंड। जगतपति हो० ॥ क्षेत्र पपौरा०

ॐ ह्रीं अतिशय० अक्षय पद प्राप्तये ॥ अक्षतान् ॥३॥

सुमन सुगंधित सुंदर लाय, जिन चौबीस जजौं हर्षाय। जगत पति हो० ॥ क्षेत्र पपौरा०

ॐ ह्रीं अतिशय० काम वाण विध्वंसनाय ॥ पुष्पं ॥४॥

घृत पूरित बहुविधि पकवान, जिन चौबीस जजौं अन आन। जगतपति हो० ॥ क्षेत्र पपौरा०

ॐ ह्रीं अतिशय० क्षुधारोग विनाशनाय ॥ नैवेद्यं ॥५॥

जगमग जगमग ज्योति प्रकाश, जिन चौबीस जजौं भ्रम नाश। जगतपति हो ॥ क्षेत्र पपौरा०

ॐ ह्रीं अतिशय० मोहान्धकार विनाशनाय ॥ दीपं ॥६॥

खेऊं धूप सुगंधी सार, जिन चौबीस जजौं चितधार। जगत पति हो० ॥ क्षेत्र पपौरा०

ॐ ह्रीं अतिशय० अष्ट कर्म दहनाय धूपं ॥७॥

श्री फल आदि विविध फल सार, जिन चौबीस जजौं भवतार। जगत पति हो० ॥ क्षेत्र पपौरा०

ॐ ह्रीं अतिशय० मोक्ष फल प्राप्तये फलम् ॥८॥

जल आदिक वसु द्रव्य संजोय, जिन चौबीस जजौं मद खोय। जगत पति हो०

क्षेत्र पपौरा उत्तम थान, पचहत्तर श्री जिनवर जान। जगतपति हो, जय जय नाथ जगतपति हो।

ॐ ह्रीं अतिशय० अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यम् ॥९॥

अथ जयमाला।

जय जय जिन नायक, शिव सुखदायक, तीर्थ प्रकाशक सुखकारी। रक्षक षट् कायक, पाप विनाशक, भ्रम तम घायक रुजहारी ॥१॥

पद्धरी छन्द ।

जय क्षेत्र पपौरा शोभ मान, जहं पचहत्तर जिनवर सुथान ।
जह चौवीसों जिनवर प्रधान, पद वंदत पाप नशात महान॥१॥
प्रथमहिं गज दरवाजो उतंग, वंदन आवे भवि ले सुसंग ।
पुन मिले धर्मशाला विशाल, विश्राम करें यात्री त्रिकाल॥२॥
जो दीन जनन को दान देहिं, अति पुण्य बंधकर सुयश लेहिं ।
जहां खुली पाठशाला सु एक, नित रहें जहां बालक अनेक॥३॥
जो बोलें कोकिल सम मनोग, तिनकी वाणी सुन नशत शोक ।
जहां बने बाग सुन्दराकार, तरुवर लागे नाना प्रकार ॥४॥
फल फूल पर्ण से शोभनीक, पादप गण सुन्दर लगे ठीक ।
कूपन में मीठे भरे नीर, जो तृषित जनों की हरें पीर ॥५॥
जहां कार्तिक शुक्ल सुपक्ष जान, चौदश तिथि जैनी जुड़ें आन ।
सो करें वंदना थुति उचार, जिन आनन निरखें वार वार ॥६॥
पुन सरुवर तट जिन बिम्ब लाय, पूजें भविजन मन वचन काय ।
जिन माहीं आगम कथत सार, पुन सभा नृत्य होवें अपार ॥७॥
जय जय जय धुनि रही पूर, विपदा सब मन की भई दूर ।
तुम सुनहु भविकजन चित्त लाय, पूजहु वंदहु जिन गीत गाय॥८॥

सोरठा ।

अतिशय क्षेत्र महान, जिहिं वंदत अघ नशत हैं ।
मन वच काया जान, नमो दास दर्याव तिहिं ॥

इत्याशीर्वादः ।
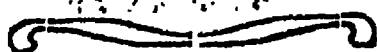
श्री० पं० मूलचंदजी वत्सलकृत—

श्री कुंडलगिर क्षेत्र पूजा।

श्री कुण्डलपुर क्षेत्र, सुभग, अति सोहनो।
कुण्डल सम सुख सदन हृदय मन मोहनो॥
पावन, पुण्य निधान, मनोहर धाम हैं।
सुंदर आनंदभरन, मनोज्ञ ललाम हैं॥१॥
धवल शिखर अतिशय उतंग, सुख पुंज है।
ललित सरोवर विमल वारि के कुंज हैं॥
उज्वल जलमय स्वच्छ वापिका मनहरन।
वन उपवन युत लसत भूमि, शोभासदन॥२॥
गिरि ऊपर जिन भवन पुरातन हैं सही।
निरखि मुदित मन अधिक लहत आनंद मही॥
अतिविशाल जिन बिंब, ज्ञानकी ज्योति है
दर्शन से चिर संचित, अघ क्षय होत हैं॥३॥

दोहा।

भक्ति सहित हर्षितहृदय, करि तिनको आह्वान।
हे जिनवर करुणा सदन, तिष्ठ तिष्ठ इत आन॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंडलगिर महावीर जिनेन्द्राय ! अत्र अवतर २ संवौषट्

ॐ ह्रीं श्री कुंडलगिर महावीर जिनेन्द्राय ! अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं

ॐ ह्रीं श्रीकुंडलगिर महावीर जिनेन्द्राय। अत्र मम् सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणं परिपुष्पांजलि क्षिपत्

अथाष्टक (छंद हरि गीतिका)

हेम झारी में मनोहर क्षीर जल, भर लीजिये।
त्रय दोष नाशन हेतु, श्रीजिन अग्र धारा दीजिये॥
श्री क्षेत्र कुंडलगिर, मनोहर पुण्यको भंडार है।
प्रभु वीरनाथ जिनेन्द्र पूजो, मोक्ष सुखदातार है॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंडलगिर महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

अतिरम्य, शीतल, दाहनाशक, मलय चंदन गारिये।
संसार ताप विनाश हेतु, जिनेश पद तल धारिये॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंडलगिर महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप-विनाशनाय चंदनं।

मणि चन्द्रकाँति समान, श्वेत अखंड अक्षत लाइए।
अक्षय, अबाधित, मोक्ष पदकी प्राप्ति हेतु, चढाइए॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंडलगिर वीरनाथजिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं।

शुभ अमल कमल, सुचारु चंपा सुमन गंधित ले धरो।
खल काम मद भंजन, श्रीजिन देव पद अर्पण करो॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंडलगिर वीरनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं।

घृत पक्व सुंदर सद्य मोदक, कनक भाजन में भरो।
सन्मति पदाब्ज चढ़ाय, चिर-दुख मूल भूख व्यथा हरो॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलगिर वीरनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं।

जिन चन्द्र त्रिभुवन नाथ सन्मुख, रत्न दीप प्रकाशिये।
अति मोद युत कारि आरती, अज्ञान तिमर विनाशिये ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलगिर वीरनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं।

शुचि मलय अगुरु, सुवास पूरित, चूरि अनल प्रजालिए।
सुख धाम, शिव रमणी वरो, अरि अष्ट कर्म जलाइये ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलगिर वीरनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं।

श्रीफल, बदाम, मनोज्ञ दाड़िम, मधुर फल सुख मूल ले।
प्रभु पद सरोज चढ़ाय, अनुपम मोक्ष फल अनुकूल लो॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलगिर महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं।

अत्यंत निर्मल पूर्व, आठों द्रव्य एकात्रित करो।
आर अष्ट हानि, गुण अष्ट संयुत, शीघ्र मुक्ति रमावरो॥
श्री क्षेत्र कुण्डलपुर मनोहर, पुण्य को भंडार है।
प्रभु वीरनाथ जिनेन्द्र पूजो, मोक्ष सुख दातार है ॥श्री०॥

ॐ ह्रीं श्री कुंडलगिर महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घं।

उज्वलनीर, सुगंध, धवल अक्षत लिए।
पुष्प सुवासित, चरुयुत, दीप प्रजालिए॥
अगरु धूप, षट्रितु फल सुन्दर लाइए।
पूर्ण अर्घ करि जिनवर चरन चढ़ाइए॥श्री०॥ (पूर्णार्घ)

जयमाला।

दोहा।

श्री कुण्डलगिर क्षेत्र शुभ, जिनवर भवन विशाल।
शक्ति हीन प्रभु भक्तिवश, गूंथत गुण मणिमाल॥१॥

पद्धरी छन्द।

जय कुंडलगिर तीरथ पवित्र, कुण्डल सम मनमोहक विचित्र।
द्वाविंशति जिनवर भवन सार, पर्वत ऊपर मनहरन हार॥१॥
छेघरिया जिनमंदर प्रसिद्ध, अति तुंग लसत पावन विशुद्ध।
सोपान बने सुन्दर स्वरूप, शोभा निकेत उन्नत अनूप॥२॥
भावि प्रथम द्वारते चढ़त धाय, पुनि द्वितिय द्वार पहुंचे सुजाय।
तहां बनी सुभग बैठक महान यात्रीगण शुभ विश्राम ठान॥३॥
जिन भवन पुनः कीनों प्रवेश, मन हर्षित ह्वै पूजत जिनेश।
जिन बिंब मनोज्ञ विराजमान, दर्शन से चिर अघ होत हान॥४॥
अवशेष जिनेश भवन सुभव्य, वंदन करि भक्ति समेत सर्व।
श्री वीरजिनेश्वर गृह उदार, अवलोकि हर्ष छायो अपार॥५॥
चारों दिश गुमटी सुभग चार, जिनवर प्रतिमा मनहरन हार।
अति तुंग शिखर नभमें लसंत, शुचि कनक कलश तिनपर धरंत॥६॥

फहरात ध्वजा ऊपर मनोग, संकेत करत मिस पवन योग ॥
आवहु पूजों जिन धरि विवेक, काटो चिर संचित अघ अनेक॥७॥
जिन चैत्य सुभग तामधि अभंग, निरखत है पुलकित अंग अंग ।
पद्मासन वीर विराजमान, तनु तुंग हस्त नवके प्रमान ॥८॥
द्वयओर तुंग जिन बिंब दोय, खड्गासन लखि मन मुदित होय ।
रमणीक मनोहर छवि अनूप, अवलोकि शुद्ध आतम स्वरूप ॥९॥
उमड़ी उरमें आनंद सिंधु, लखिकर चकोर जिमि शरद इंदु ।
पद कमल वंदि उर हर्ष लाय, स्तुति कीनी बहु विधि बनाय॥१०॥
जय जय जय श्री सन्मति जिनेश, तुव चरन कमल पूजत सुरेश ।
जय अरिगिर खंडन वज्रदंड, जय अजर अमर सुखमय अखंड॥११॥
जय मोह गजेन्द्र मृगेन्द्र वीर, जय काम नाग हित गरुड़ धीर ।
जय करुणा सदन अजय अदोष, अक्षय अनंतगुण विमल कोष।१२।
कुंडलपुर जन्म लिया पवित्र, सुरपति कीनो उत्सव विचित्र ।
ऐरावत साजि अति मोदधार, सुर तांडव नृत्य कियो अपार॥१३॥
पांडुकाशिलपर थाप्यो जिनेश, मघवा कीनो कलशाभिषेक ।
गृह लाए उत्सव सहित इन्द्र, माता कर सौंपे श्रीजिनेन्द्र॥१४॥
बालक वय में प्रभु धारि मोद, कीनी अनेक क्रीड़ा विनोद ।
इक दिवस सखानि समेत वीर, क्रीड़ा करते वन में सुधीर॥१५॥
प्रभु शक्ति परीक्षा हेतु देव, धरि नाग रूप आयो स्वमेव ।
बालकगण अजगर लखि विचित्र, भागे भय संयुक्त यत्र तत्र।१६।
नहिं भयो वीरचित चलित नेक, तिहिं पकड़ करी क्रीड़ा अनेक ।
लखि शक्ति अनन्त सुबल अशेष, महावीर नाम धारो विशेष।१७।

जल विलग कमलवत् जगत ईश, गृहमें निवास कीनों अधीश।
लखि जगत जाल विकराल रूप, चिंत्यो प्रभु निज आतम स्वरूप।१८
यह जगत मोहगृह ग्रसित होय, निज अनुपम ज्ञान विवेक खोय।
गृह पुत्रादिक में भयो लिप्त, विस्मृति अनंत निज आत्मशक्ति।१९।
प्रभु आत्मप्रबोध विज्ञान युक्त, गृह जगत जाल से भये मुक्त।
लौकांतिक ऋषि कीनों प्रबुद्ध, संबोध्यो प्रभुवर स्वयंबुद्ध ॥२०॥
गृह त्याग भये शुचि ध्यान लीन, ज्ञानामृत छाकि है निजाधीन।
अध्यात्ममग्न प्रभु भाव भद्र, निश्चल, निर्भय अवलोक रुद्र।।२१॥
उपसर्ग किये दुस्सह अनेक, प्रभु अचल चित्त नाहिं चल्यो नेक।
अरिघात चतुष्क किये विनाश, पायो अक्षय केवल प्रकाश।।२२॥
लहि समवशरन महिमा महेश, धर्मामृत वरसायो जिनेश।
भवि जीव श्रवण करि धर्मसार, संसार जलधि से भये पार।।२३॥
अवशेष अघाति चतुष्क नाश, कीनो प्रभु अविचल मुक्तिवास।
सुन विरद शरण आयो दयाल, हूं दीन बन्धु गुणगण विशाल।२४।
चिरदुरित अमित अरि कर विनष्ट, प्रभु मेटो मम संसार कष्ट।
महिमा अद्भुत है जगत नाथ, भविदधि से तारो पकड़ हाथ।।२५॥
सुरताल साजि अनुपम अभंग, कीनी प्रभु विनय हृदय उमंग।
पुनि शेष जिनेश्वर भवन वंदि, आये नीचे उर धरि अनंद।।२६॥
विंशति अरु एक जिनेश थान, है पुलकित वंदे हर्ष ठानि।
इम क्षेत्र वंदना करि उदार, लूटो शुभ पुण्य तनो भंडार ॥२७॥

घत्ता।

कुंडलगिर वीरं, गुणगंभीरं, नाशक पीरं, अतिवीरं।
केवल पदधारी, सुखभंडारी, आनंदकारी मतिधीरं ॥२८॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंडलगिर महावीर जिनेन्द्राय महार्घं।

अघगिरि खंडन, सन्मति वज्र समान हैं।
वंश इक्ष्वाक सरोज, विकाशन भानु हैं॥
भवभ्रम ताप विनाशन, निर्मल चन्द्र हैं।
आतम ज्ञान लवलीन, अमित गुण वृन्द हैं॥२९॥
काम कटक करि विचलित, मद मर्दन किया।
अजयमोह करि विजय, अखय शिवपद लियो॥
नमन करहुँ करजोड़ विनय सुन लीजिये।
अष्ट कर्म करि नष्ट अक्षय पद दीजिये॥३०॥

इत्याशीर्वादः।

मक्सीपार्श्वनाथ पूजा।

दोहा।

श्री पारस परमेशजी, शिखर शीर्ष शिवधार।
यहां पूजते भावसे, थापनकर त्रयवार॥

ॐ ह्रीं श्रीमक्सीपार्श्व जिन अत्र अवतर अवतर सम्वौषटाह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं॥

अथाष्टकं।

लै निर्मल नीर सुछान, प्राशुक ताहि करों।
मन वच तन कर वर आन, तुम ढिग धार धरों॥

श्री मक्सी पारसनाथ मन वच ध्यावत हों ।
मम जन्म जरामृत्यु नाश, तुम गुण गावत हों ॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो जलं ॥१॥

घिस चन्दनसार सुवास, केसर ताहि मिलै ।
मैं पूजों चरण हुलास, मनमें आनन्द लै ॥
श्री मक्सी पारसनाथ मन वच ध्यावत हों ।
मम मोहाताप विनाश, तुम गुण गावत हों॥ सुगंधं॥२॥

तन्दुल उज्वल अति आन, तुम ढिग पुञ्ज धरों ।
मुक्ताफलके उन्मान, लेकर पूज करों ॥
श्रीमक्सी पारसनाथ, मन वच ध्यावत हों ।
संसार वास निरवार, तुम गुण गावत हों ॥ अक्षतं ॥३॥

ले सुमन विविधिके एव, पूजों तुम चरणा ।
हो काम विनाशक देव, काम व्यथा हरणा ॥
श्री मक्सी पारसनाथ, मन वच ध्यावत हों ।
मन वच तन शुद्ध लगाय, तुम गुण गावत हों॥ पुष्पं॥४॥

सजथाल सु नेवज धार, उज्वल तुरत किया ।
लाडू मेवा अधिकार, देखत हर्ष हिया ॥
श्रीमक्सी पारसनाथ, मन वच पूज करों ।
मम क्षुधा रोग निवार, चरणों चित्त धरों ॥ नैवेद्यं ॥५॥

अति उज्वल ज्योति जगाय, पूजत तुम चरणा ।
मम मोहांधेर नशाय, आयो तुम शरणा ॥

श्री मक्सी पारसनाथ, मन वच ध्यावत हों ।
तुमहो त्रिभुवनके नाथ, तुम गुण गावत हों ॥ दीपं ॥६॥
वर धूप दशांग बनाय, सार सुगंध सही ।
अति हर्ष भाव उर ल्याय, अग्नि मंझार दही ॥
श्रीमक्सी पारसनाथ, मन वच ध्यावत हों ।
वसु कर्मंहि कीजे क्षार, तुम गुण गावत हों ॥ धूपं ॥७॥
बादाम छुहारे दाख, पिस्ता ल्याय धरों ।
ले आम अनार सुपक्व, शुचिकर पूज करों ॥
श्रीमक्सी पारसनाथ, मन वच ध्यावत हों ।
शिवफल दीजे भगवान, तुम गुण गावत हों ॥ फलं ॥८॥
जल आदिक द्रव्य मिलाय, वसुविधि अर्घ किया ।
धर साज रकेबी ल्याय, नाचत हर्ष हिया ॥
श्रीमक्सी पारसनाथ, मन वच ध्यावत हों ।
तुम भव्योंको शिव साथ, तुम गुण गावत हों ॥ अर्घं ॥९॥

अडिल्ल ।

जल गंधाक्षत पुष्प सो नेवज ल्यायके ।
दीप धूप फल लेकर अर्घ बनायके ॥
नाचों गाय बजाय हर्ष उर धारकर ।
पूरण अघ चढ़ाय सु जयजयकार कर ॥ पूर्णार्घं ॥१०॥

जयमाला ।

दोहा ।

जयजयजय जिनरायजी, श्रीपारसपरमेश ।
गुण अनंत तुममांहि प्रभु, पर कछु गाऊं लेश ॥१॥

पद्धडि छन्द।

श्रीबानारस नगरी महान। सुरपुर समान जानो सुथान।
तहं विश्वसेन नामा सुभूप। वामादेवी रानी अनूप॥२॥
आये तसु गर्भविषें सुदेव। वैशाख वदी दोइज स्वयमेव।
माताको सेवें सची आन। आज्ञा तिनकी धर शीश मान॥३॥
पुन जन्म भयो आनंदकार। एकादशि पौष वदी विचार॥
तब इन्द्र आय आनंद धार। जन्माभिषेक कीनो सुसार॥४॥
शतवर्ष तनी तुम आयु जान। कुंवरावय तीस वरस प्रमाण॥
नव हाथ तुंग राजत शरीर। तन हरित वरण सोहै सुधीर॥५॥
तुम उरग चिन्ह वर उरग सोई। तुम राजऋद्धि भुगती न कोई।
तपधारा फिर आनंद पाय। एकादशि पौष वदी सुहाय॥६॥
फिर कर्म घातिया चार नाश। वर केवलज्ञान भयो प्रकाश॥
वदि चैत्र चौथि वेला प्रभात। हरि समोसरण रचियो विख्यात॥७॥
नाना रचना देखन सुयोग। दर्शनको आवत भव्य लोग॥
सावन सुदि सप्तमि दिन सुधारि। तब विधि अघातिया नाश चारि॥८॥
शिव थान लयो वसुकर्म नाशि। पद सिद्ध भयो आनन्दराशि॥
तुम्हरी प्रतिमा मक्सी मझार। थापी भविजन आनंदकार॥९॥
तहां जुरत बहुत भवि जीव आय। कर भक्तिभावसे शीश नाय॥
अतिशय अनेक तहां होत जान। यह अतिशय क्षेत्र भयो महान॥१०॥
तहां आय भव्य पूजा रचात। कोई स्तुति पढ़ते भांति भांति॥
कोई गावत गान कला विशाल। स्वरताल सहित सुंदर रसाल॥११॥

कोई नाचत मन आनंद पाय । तत थेई थेई थेई थेई ध्वनि कराय ॥
छम छम नूपुर बाजत अनूप । अति नटत नाट सुंदर सरूप ॥१२॥
द्रुम द्रुम द्रुम बाजत मृदंग । सनन न सारंगी बजति संग ॥
झननन नन झल्लरि बजे सोई । घननन घननन ध्वनि घण्ट होई॥१३॥
इस विधि भवि जीव करें अनंद । लहैं पुण्यबंध करें पापमंद ॥
हम भी वन्दन कीनी अबार । सुदि पौष पंचमी शुक्रवार ॥१४॥
मन देखत क्षेत्र बढ़ो प्रयोग । जुरमिल पूजन कीनी सुलोग ॥
जयमाल गाय आनंद पाय । जय जय श्रीपारस जगति राय॥१५॥

घत्ता ।

जय पार्श्वजिनेश, नुत नाकेशं, चक्रधरेशं ध्यावत हैं ।
मन वच आराधें, भव्य समाधें, ते सुरशिवफल पावत हैं ॥

इत्याशीर्वादः ।

ला. भगवानदास हाल ब्र. भगवानसागर द्वारा रचित-

तिलोकपुरस्थ श्रीनेमिनाथ पूजा ।

ग्राम तिलोकपुर माहिं श्रीजिन धाम है ।
सूरति नेमि जिनेश महा अभिराम है ॥
अतिशयवंत महंत पूरि मन काम है ।
करत अह्वानन नाथ, तिष्ठ यहि ठाम है ॥ दो०-
श्रीनेमीश्वरवर पद कमल, मन वच तन धरि ध्यान ।
करत अह्वानन नाथ हौं तिष्ठ तिष्ठ इत आन ॥

ॐ ह्रीं तिलोकपुरस्थश्रीनेमिनाथजिनेभ्यो अत्रावतराव-तरसंवौषट् इत्याह्वाननं ॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिस्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भववषट् सन्निधिकरणं ॥ अथाष्टकं ।

अडिल्ल छंद ।

देव सरित को नीर स्वच्छ शुभ लीजिये ।
स्वर्ण कुम्भ में धारि सुप्रासुक कीजिये ॥
ग्राम तिलोकपुर जाय जोरिकर थुति करौं ।
जन्म जरामृतु हरण नेमि पूजाकरों ॥

ॐ ह्रीं तिलोकपुरस्थ श्रीनेमिनाथ जिनेभ्यो जलं १

मलयज घसि घनसार कुम्कुमा डारि के ।
जातीपत्रि मिलाय हेम कुंभ धारि के ॥ ग्राम० । चंदनं २
शाली सौरभ युक्त अखण्डित लीजिये ।
मुक्ताफल उनहार सुथाल भरीजिये ॥ ग्राम० । अक्षतं ३
वेल चमेली चम्प मोंगरा जानिये ।
सुमन सुगंधित स्वर्णथाल भरिआनिये ॥ ग्राम० । पुष्पं ४
घेवर मोदक मालपुआ रस लीजिये ।
खुरमा खाजा फेनि सुथाल भरीजिये ॥ ग्राम० । नेवैद्यं
दीप रतन करपूर विरत के जो कहे ।
जा उद्योत के होत तिमिर जगको दहे ॥ ग्राम० । दीपं
अगर तगर घनसार आदि चूरा करे ।
जासु धूम गंधि पाय अली नाचत फिरैं ॥ ग्राम० । धूपं

दाख बदाम अनार पनस रंभ जानिये ।
श्रीफल पिस्ता लवँग थाल भरि आनिये ॥ ग्राम०। फलं
वारिमलय चरु अक्षत सुमनहु सुलीजिये ।
दीप धूप फल मेलि अरघ शुभ कीजिये ॥ ग्राम०। अर्घं

जयमाला ।

दोहा ।

समुद्र विजयके लाड़िले शिवदेवी के नन्द ।
पशुवन के बँध छोरिकै रजमति छांडि जिनन्द ॥१॥
जाय चढ़े गिरिनारि पै भये त्रिजगके ईश ।
नमैं सुरासुर चरण तुम दान नवावत शीश ॥२॥

त्रिभंगी छंद ।

जै नेमि जिनंदा बाल यतिन्दा मुनिगण वृन्दा तुम ध्यावें ।
तुम त्रिभुवन चन्दा काम निकन्दा हरभव फन्दा श्रुतगावैं ॥
शचिवासवबन्दा अमर गणंदा भक्तिकरंदा शिर नावैं ॥
खग असुरन्दा पाय परंदा पूजकरन्दा शिव पावैं ॥३॥

पद्धडी छंद ।

जैनेमीश्वर जिन राजदेव ।
शत इन्द्र करैं पदपद्म सेव ॥
जै गर्भ जन्म तप और ज्ञान ।
निर्वाण कियो हरि आपु आन ॥ ४ ॥

गुजरात काठियावार जान, जूनागढ़ तामें है प्रधान ॥
वहँ व्याहन आयो साजि वरात, सँग यादव छप्पन कोटि नात॥५॥
द्वारे के चार पशुवन पुकार, सुनि कंकण मौर दियो उतार ॥
सबके बन्धन दीन्हें छुडाय, जग अथिर जान वैराग भाय॥६॥
प्रभु द्वादश भावन भायसार, लौकान्तिक सुर आये अवार ॥
पुष्पाञ्जलि दै पद शीश नाय, वहु विधि स्तुति कीन्ही बनाय॥७॥
हरि शिविका लै आयो तुरन्त, तजि मात तात शिविका चढ़न्त॥
देवन लीन्ही शिविका उठाय, सहसाम्र वने गिरिनारि जाय॥८॥
प्रभु वस्त्राभूषण सब उतार, शिर केश नोचि लिय योगधार ॥
पञ्चम सागर महँ क्षेपि केश, करि तप कल्याणक गे सुरेश ॥९॥
सखि राजमती सों कह्यो धाय, तजि व्याह नेमि गिरिनारि जाय॥
उर मस्तक हनि कीन्हों विलाप, सब छांड़ि गई गिरिनारि आप॥१०॥
देख्यो प्रभु ठाड़े नग्न भेष, पद वन्दि विनय कीन्हो विशेष ॥
प्रभु दियो जैन दिक्षोपदेश, तब धर्‍यो आर्जिका को जु भेश॥११॥
व्रत बारह बारह तप सुजान, साधी त्रेपन किरिया महान ॥
जीतीं परिषह बाईस जान, कीन्हो नेमीश्वर चरण ध्यान॥१२॥
तप व्रत में आयु व्यतीत कीन, भई स्वर्ग सोलहें सुर प्रवीन ॥
रह छप्पन दिन छदमस्थ देव, तब प्रघटो केवलज्ञानभेव ॥१३॥
हरि समवशरण रचना कराय, पूज्यो पद नर सुर खग सुआय ॥
प्रभु आरज देश विहार कीन, वहु जैनधर्म उपदेश दीन॥ १४॥
लखि आयु अन्त गिरिनारि आय, धरि ध्यान अघाती क्षय कराय॥
खिरिगई काय करपूर जेम, रहि गयो शेष नख केश तेम॥१५॥

हरि अवधिज्ञानसों जानि आय। पञ्चम कल्याणक किय बनाय॥
माया तन रचि नख केश लाय, धरि चिता दियो आगी लगाय॥१६॥
पञ्चम कल्याणक करि जिनेश, निज सदन गया हर्षित सुरेश॥
उत्पात धूम्य ग्रथ माहित जान, प्रभु बने आप शिव पौंध थान॥१७॥
प्रभु भयो निरंजन निराकार, सब जीवन के आनन्दकार॥
हौ स्वामी बहु अतिशय निकेत, भाजें पातक तुम नाम लेत॥१८॥
तुमरी मूरति अतिही विशाल, राजै तिलकपुर चैतिआल॥
हो राजत अतिशय युत जिनेश, को जानि सकै तुम भेद लेश॥१९॥
जो दरश परम पूजन करेत, तिनको अभिमत फल नाथ देत॥
जो बोलत बोल कबूल आन। ते पावत इच्छित फल महान॥२०॥
तुमरी महिमा अतिशय अनन्त, को पाय सकै तिनको जु अन्त।
तुम दीन हितू हौ दीनपाल, निज जन पर रह स्वामी दयाल॥२१॥
कन्हैलाल सुत बारबार, भगवानदास नमै शीश धार॥
मांगत कर जोरे श्रीजिनेश, भव भ्रमण हरि द्यो शिव निवेश॥२२॥

घत्तानन्दछन्द।

शिव देविके नन्दा त्रैजग चन्दा की पूरण जयमाल करा।
जे पढ़ैं पढ़ावैं हिरदय लावैं ते पावैं शिवसदन वरा।
अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

काव्य छन्द।

पूरण शुभ जयमाल भई नेमीश्वर केरी।
पढ़ैं लिखैं भविजीव होय गुणगण की ढेरी॥
पुत्र पौत्र परिवार लहैं सम्पत्ति बहुतेरी।
नर सुरके सुखभोगि हायँ शिव सदन बसेरी॥

इत्याशीर्वादः।

मुनीम मुन्नालालजी कृत-

श्री खंडगिरी क्षेत्र पूजन।

अंगवंगके पास है देश कलिंग विख्यात।
तामें खंडगिरी बसत दर्शन भये सुख पात्र ॥१॥
जसरथ राजाके सुत अतिगुणवानजी।
और मुनीश्वर पंच सैकड़ा जानजी ॥
अष्टकरम कर नष्ट मोक्षगामी भये।
तिनके पूजहुं चरण सकल मम मल ठये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीकलिंगदेशमध्य खंडगिरीजो सिद्धक्षेत्रसे सिद्धपद् प्राप्त दशरथराजाके सुत तथा पंचशतक मुनि अत्र अवतर अवतर, अत्र तिष्ठ २ ठ ठः। अत्र मम सन्निहितो भव, भव वषट्।

अथाष्टकं।

अति उत्तम शुचि जल ल्याय, कंचन कलशभरा।
करूं धार सुमनवचकाय, नाशत जन्म जरा ॥१॥
श्री खंडगिरीके शीश जसरथ तनय कहे।
मुनि पंचशतक शिवलीन देशकलिंग दहे ॥

ॐ ह्रीं श्री खडगिरी क्षेत्रसे दशरथराजाके सुत तथा पांचशतक मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं।

केसर मलयागिरि सार, घिसके सुगंध किया।
संसार ताप निरवार, तुमपद बसत हिया ॥२॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्री खडगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं।

मुक्ताफलकी उन्मान, अक्षत शुद्ध लिया।
प्रभ सर्व दोष निरवार, निजगुण मोय दिया॥ श्री०
ॐ ह्रीं खंडगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं।

ले सुमन कल्पतरु थार, चुन २ ल्याय धरूं।
प्रभु पदाढिग धरतहि बाण काम समूल हरों॥ श्री०
ॐ ह्रीं श्रीं खडगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं।
लाडू घेवर शुचि ल्याय, प्रभुपद पूजनको।
धारूं चरनन ढिग आय प्रभ क्षुध नाशनको॥ श्री०
ॐ ह्रीं श्री खडगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुदारोगविनाशनाय नैवेद्यं।

ले मणिमय दीपक थार, दोय कर जोड़ धरों।
प्रभ मोहांधेर निवार, ज्ञान प्रकाश करो॥ श्री०
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशाय दीपं॥
ले दशविधि गंध कुटाय, अग्निमझार धरों।
प्रभ अष्ट करम जल जांय, यातैं पांय धरूं॥ श्री०
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मविध्वंशनाय धूपं॥
श्रीफल पिस्ता सुबदाम, आम नारंगि धरूं।
ले प्रासुक हेमके थार, भवतर मोक्षवरूं॥ श्री०
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल॥

जल फल वसु द्रव्य पुनीत, लेकर अर्घ करूं।
नाचूं गाऊं इहभांत, भवतर मोक्ष वरूं॥ श्री०
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं॥

जयमाला।

दोहा।

देश कलिंगके मध्य है, खंडगिरी सुखधाम।
उदयागिरी तसु पास है, गाऊ जय जय धाम ॥१॥

पद्धडि छन्द।

श्री सिद्ध खंडगिरि क्षेत्र पात, अति सरल चढाई ताकी सुजात ॥
अतिसघन वृक्ष फल रहे आय, तिनकी सुगंध दशदिश जु छाय ॥
ताके सुमध्यमें गुफा आय, तत्र मुनि सुनाम ताको कहाय ॥
तामें प्रतिमा दशयोग धार, पद्मासन हैं हरि चंवर ढार ॥
ता दक्षिण हैं सु गुफा महान तामें चौवीसों भगवान आन ॥
अति प्रतिमा इन्द्र खडे दुओर, कर चंवर धरें प्रभु भक्ति जोर ॥
आजूबाजू खडि देवि द्वार, पद्मावति चक्रेसरी सार।
करि द्वादश भुजि हथियार धार, मानहुं निंदक नहिं आवें द्वार ॥
ताके दक्षिण चलि गुफा आय, सत वखरा है ताको कहाय ॥
तामें चौवीसी वनी सार, अरु त्रय प्रतिमा सब योग धार ॥
सबमें हरि चमर सुधरहिं हाथ, नित आय भव्य नावहिं सुमाथ ॥
ताके ऊपर मंदिर विशाल, देखत भविजन होते निहाल ॥
ता दक्षिण टूटी गुफा आय, तिनमें ग्यारह प्रतिमा सुहाय ॥
पुनि पर्वतके ऊपर सु जाय, मंदिर दीरघ वन रहो भाय ॥
तामें प्रतिमा मुनिराजमान। खड्गासन योगधरें महान ॥
के अष्ट द्रव्य तसु पूज्य कीन, मन वच तन करि भय धोक दीन ॥

मानों जन्म सुफल अपनो सुभाय, दर्शन अनूप देखो है आय।
अब अष्टकर्म होंगे चूर चूर. जातें सुख पहैं पूर पूर॥
पूरब उत्तर द्वय जिन सुधाम, प्रतिमा खडगासन भात तमाम।
पुनि चबूतरामें प्रतिमा वनीय, चारह भुनी है दर्शनीय॥
पुनि एक गुफामें विम्बसार, ताको पूजनकर फिर उतार।
पुनि और गुफा खाली अनेक, ते हैं मुनिजनके ध्यान हेत॥
पुनि चलकर उदयगिरी सुजाय, भारी भारी गुफा हैं लखाय।
एक गुफामें विम्ब विराजमान, पद्मासन धर प्रभु करत ध्यान॥
ताको पूजन मन वचन काय, सो भव भवके दुख जावें पलाय।
तिनमें एक हाथीगुफा महान्, तामें इक लेख विशाल धाम॥
पुनि और गुफामें लेख जान, पढ़ें जिनमत मानत प्रधान।
वहं जसरथ नृपके पुत्र आय, संगमुनि पंचशतक ध्याय॥
तप बारह विधिका यह करंत, बाईस परीषह वह सहंत।
पुनि सामिति पंचयुत चलें सार, दोषा छयालिस टल कर अहार॥
इस विध तप दुद्धर करत जोय, सो उपजे केवलज्ञान सोय।
सब इन्द्र आय अति भक्तिधार, पूजा कीनी आनंद धार॥
पुनि धर्मोपदेश दे भव्यपार, नाना देशनमें कर विहार।
पुनि आय याही शिखर थान, सो ध्यान योग्य आघाति हान॥
भये सिद्ध अनंते गुणन ईश, तिनके युगपदपर धरत शीष।
तिन सिद्धनको पुनि २ प्रणाम, सो सुक्ख कहो अविचल सुधाम॥
वंदत भव दुख जावे पलाय, सेवक अनुक्रम शिवपद लहाय।
ता क्षेत्रको पूजत मैं त्रिकाल, कर जोड़ नमत हैं सुभालाल॥

घत्ता ।

श्री खंडगिरी क्षेत्रं, अतिसुख दतं तातहि भवदधि पार करें ।
जो पूजे ध्यावे करम नसावे, वांछित पावे मुक्ति वरे ॥

ॐ ह्रीं श्रीखंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा-श्री खंडागिरी उदयगिरी, जो पूजें त्रेकाल ।
पुत्र पौत्र संपति लहे, पावे शिवसुख हाल ॥

इत्याशीर्वादः ।
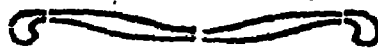
श्री सजोतस्थित शीतलनाथ पूजा ।

छन्द गीता ।

है सजोत सुथान तामें सुखद शीतलनाथ जी ।
हैं विराजे पद्म-आसन परम अनुभव-धाम जी ।
छवि मनोहर शान्त अनुपम ध्यानमय गुण खान जी ।
दर्श होतें पाप नाशैं करैं मन अमलान जी ॥

दोहा ।

तीर्थंकर दशवें महा, ज्ञान दर्श सुख खान ।
बल अनन्त गुणधाम जी, तिष्ठो मम ढिग आन ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

अष्टक ।

चिर दुखित जन्म जरा मरणमे यत्न कोई ना बने ।
तुमको रहित भव देख सुख मय परमशुचि जल लावने ।
अब पूज शीतलनाथके पद परम शान्ति चढ़ाइये ।
निज सुख अनूपम पायके निज जन्म सफल कराइये ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ जलं ॥ १ ॥

भव ताप है नित क्लेशमय यासैं न वश मेरा चले।
लख चन्द्रसम शमकर तुम्हें चन्दन अमल निज हाथ ले।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ चंदनं ॥ २ ॥

क्षति पाय भव भव दुख उठाए कथनको समरथ नहीं।
अक्षत चढ़ाऊं अखय पद लूँ जा बिना सुख नित नहीं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

यह काम जगको वश करै चहुँ गति भ्रमाता ही रहे।
या नाश हेतु सुपुष्प ध्याऊं शील गुण जासौं रहे ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

क्षुध रोग पीड़ित जीव जग नित देहकी निन्दा करे।
हर हर प्रभू नैवेद्य सुन्दर राखहूँ ताजे करे ॥ अब०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय चरुं निर्वपामीति स्वाहा ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥

है मोहका अन्धेर भारी रत्नत्रय गोपे पड़े।
शुभ दीपसे भक्ती करें तम हर स्वगुण सब दिख पड़े॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ दीपं ॥ ६ ॥

हैं अष्ट कर्म अनादि घेरे चैन जिय पावे नहीं।
तिन भस्म कारण धूप खेऊं कर्म-रिपु जावें नहीं॥ अष्ट०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्ट-कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ धूपं । ७ ॥

संसार-फल अध्रुव लखै शिव-फल परम ध्रुव जानके।
ता हेतु सुन्दर फल चढ़ाऊं, चरण भक्ती ठानके ॥ अष्ट०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ फलं ॥ ८ ॥

अष्ट द्रव्य मिलाय उत्तम अर्घसे अर्चा करूं।
अष्ट गुण निज शुद्ध लेके अमल धाम विराजहूं॥ अष्ट०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पंचकल्याणक अर्घ।

दिन अष्टम चैत अँधेरी, शुभ गर्भ रहे सुख ढेरी।
नंदा माता हरषाई, हम पूजें ध्यान लगाई॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय चैत्र वदी ८ गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घ्यं ॥

वदि बारस माघ महीना, जन्मे भगवान अहीना।
लै इन्द्र मेरुगिरि आयो, कर न्हवन पूज सुख पायो॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघ वदी १२ जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घ्यं ॥

बारस वदि माघ सुहाई, गृह तजि वनवास कराई।
निज आतम ध्यान सम्हारो, दिक् अम्बर ले तप धारो॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघ वदी १२ तपकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घ्यं ॥

चौदश वदि पौष प्रकाशा। निज केवलज्ञान हुताशा।
समवसृति इन्द्र रचायो। शुभ तीर्थ प्रभू प्रगटायो॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पौष वदी १४ ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घ्यं ॥

अष्टम आसोज सुदीमें। सम्मेदगिरी शुभ थलमें।
हर कर्म अचल थल पायो। परमातम पद झलकायो॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय आसोज सुदी ८ मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ अर्घ्यं ॥

जयमाला ।

दोहा ।

शीतलनाथ अनन्त गुण, कहे कौन बुधिवान ।
गणधर भी नहिं कहि सके, मैं क्या करूं बखान ॥

पद्धरी छन्द।

जय जय महान गुणके अधीश, वंदूं चरणा नित धारि शीश।
तव भक्ति करूं निज मन लगाय, जासों सब विघ्न सहज पलाय॥
गुजरात देश शुभ भरुँच थान, नर्मदा नदि तट यति करत ध्यान।
तीरथ सुखेत इक धाम खास, किये चन्द्रगुप्त नृप जैन वास॥
अंकलईश्वर तालुका लखाय, जिन मन्दिर जिन प्रतिमा सुहाय।
मुनि पुष्पदन्त वलिभूत आय, पट खंड ग्रन्थ रचियो बनाय॥
ताकी टीका धवलादि जान, दक्षिण कन्हामें शोभमान।
मुलबद्री नगर महान जान, तामें दर्शनकर हर्ष मान॥
यहां रामकुंडको जब खुदाय, शुद्ध प्रतिमा द्वै प्रगट थाय।
श्रीपार्श्वनाथ अंकलेश जाय, श्री शीतलनाथ सजोत आय॥
द्वै हाथ ऊँच पाषाण श्वेत, प्रतिमा सुशिल्प-गुणको निकेत।
देखत देखत मन ना अघाय, संसार देह वैराग्य थाय॥
प्राचीन बहुत सम्वत् न लेख, निश्चय समाधि आदर्श देख।
वन्दे मुनि खग सुरपति अशेष, पीवत स्वातम रस देख देख॥
निर्ग्रंथ वस्त्र भूषण विहीन, दिग् अम्बर छवि सोहे प्रवीण।
निर्मल गुण आकर शोभमान, वैराग्य लसत है अप्रमाण॥
भारत यह रत्न अपूर्व जान, पद्मासन सिद्ध समान मान।
जो भक्ति करे ते धन्य जीव, वे पावैं समकित धर्म-नींव॥
शीतल प्रभु गुणका हो विचार, जिनका जीवन पावन अपार।
दुखमा-सुखमाका काल जान, भद्दलपुर वंश इक्ष्वाक मान॥
पित दृढरथ नृप, नंदा सुमात, तज सोलम स्वर्ग जनम करात।

सुवरण वत् देह प्रकाश जान, नव्वे धनु ऊँचा शोभमान ॥
आऊष वरष लख अंक वृक्ष, शोभत भव्यन प्रति कल्पवृक्ष ।
देवो पुनीत वस्तर अहार, नीहार विना सेवत सुसार ॥
गृह-धर्म साध कर राज सार, शुभ नीति प्रजा सुख दे अपार।
बहु काल चाख सुरतन अहार, नहिं तृप्त भये निज सुख विचार॥
वैराग्य धार वनवास कीन, उरमें धारे शुभ रतन तीन ।
व्यवहार मार्ग कारण सम्हार, निश्चय पथमें लहि आतम सार ॥
आतम अनुभव रस पिवन काज, उपसर्ग सह सब ममत त्याज।
इस भांति घाति कर्मन जलाय, शुचि केवल बोध प्रगट कराय ॥
उपदेश देय बहु सुबोध पाय, चारित्र धरे निज शक्ति लाय।
सम्यक्त-रत्न बहु जन लखाय, मिथ्या मत तज चित हर्ष लाय ॥
यों काज स्वपर करके दयाल, सब कर्म जाल हुए मुक्ति लाल।
सम्मेद थान अद्भुत विशाल, भवि जीव सदा नावत स्व भाल ॥
हम कर्म-बंधसे अति मलीन, चिद् राग द्वेषमें सदा लीन।
जब क्लेश पड़े तब बिलख जाय, जब साता हो उन्मत्त थाय ॥
यातें चिरकाल भ्रमे अवार, भव तार तार जिनजी सवार।
मम क्रोध काम मद लोभ भार, हरिये हरिये श्रीजिन उदार ॥
त्रय रत्न लहूँ धर उर विवेक, जानूं निज पर गहुँ आप एक।
छोडूँ ममता माया संताप, ध्याऊं आपोमें आप आप ॥
जाचू तुमसे यह बार बार, शुचि भाव लहूँ मैं परम सार।
यातें तुम चरणां शरण आय, अपनी बिनती दीनी सुनाय ॥

घत्ता

श्रीशीतल जिनराज तनी यह वर जयमाला।
करी सु आतम काज लखी सुन्दर गुणमाला॥
जो पहरे निज कंठ सरस शोभाको पावे।
आकुलता सब मेट आपनो सुक्ख बढ़ावे॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा महार्घं॥

दोहा।

जो पूजे निज भक्तिसों, श्रीशीतल महाराज।
विघ्न सकल ताके टरें, पावे आतम काज॥१॥
जेठ वदी आठम दिना, शून्य आठ नव एक।
सम्वत विक्रम सोम दिन, रचि सजोत गुण टेक॥२॥
भव-सागरके शोपको, जिन गुण सूर्य्य समान।
जो ध्यावे चितमें सदा, सुखदधि लहे महान॥३॥

इत्याशीर्वादः।

श्री पोस्तीलाल सरावगी कृत-

श्री बाहूबलीस्वामीकी पूजा।

युगकी आदि विषैं भये, बाहूबली महाराज।
सो अब तिष्ठहु आयके, हरो हमारे पाप॥१॥

ॐ ह्रीं श्री बाहूबली जिनेंद्र अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वानन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ॥

अथ अष्टक ।

दाता मोक्षके श्री बाहूबली महाराज, दाता मोक्षके–
कंचन झारी करमें लीनी, गंगाजल उसमें भरलीनी।
मेरा जामन मरण मिटाय दाता मोक्षके ॥ श्री०
ॐ ह्रीं श्री बाहूबलिस्वामिने जलं ॥

उत्तम चंदन घिसि मैं लायो तुम चरणनमें अर्च करायो।
मेरो भवआताप निवार, दाता मोक्षके ॥ श्री०,चंदनं
उत्तम अक्षत धोय मैं लायो,तुम चरणनमें पुंज करायो।
दीजो अक्षयपद महाराज,दाता मोक्षके ॥श्री०अक्षतं
कमलकेतकी बेल चमेली,चुनचुन कर मैं करमें लीनी।
मेरो कामबाण नशजाय, दाता मोक्षके ॥ श्री० पुष्पं
परमोत्तम नैवेद्य बनाया, तुम चरणनमें खूब चढाया।
मेरी क्षुधावेदना टार, दाता मोक्षके ॥श्री० नैवेद्यं
कनक दीप करमें मैं लीनो, जगमग जगमग ज्योति प्रवीनो।
मेरो मोहअंध निरवार, दाता मोक्षके ॥ श्री० दीपं
दशविधि कर मैं धूप बनाई,अंगनिमंगमें ताहि जराई।
मेरे अष्टकरम निरवार, दाता मोक्षके ॥ श्री० धूपं

एला केला दाख छुहारा, पिस्ता श्रीफल लायो भारा।
देओ मोक्ष सु फल महाराज, दाता मोक्षके ॥ श्री० फलं
आठ दरब करमें मैं ल्यायो, अरघ बनाय तुम्हें हि चढ़ायो।
मेरो आवागमन मिटाय, दाता मोक्षके ॥ श्री० अर्घं

जयमाला ।

तुमको नित प्रतिवंदिके, रचूं सो यह जयमाल ।
भव भव के पातिक हरो, करो सकल कल्यान ॥१॥

पद्धी छन्द ।

जय जय श्री बाहूबलि जिनेश, तुम चरण कमल नित करूं सेव।
तुम दया धुरंधर जगत ईश, जग तारणको तुमही मुनीश ॥२॥
यह काल अनंतानंत बार, जिसमें अवसर्पिणी है सुसार।
इक दोय तीनमें भोगभूमि, चौथेमें प्रगटी कर्मभूमि ॥३॥
पंचम षष्ठम है दुःख रूप, तामें जीव न लहे शिव स्वरूप।
जब तीजे कालके अंतमाय, प्रगटे चौदह कुलकर सुवाय ॥४॥
अंतिम कुलकर श्री नाभिराय, जिनकी रानी मरुदेवि माय।
तिनके सुत भये श्री ऋषभदेव, तिन चरणनकी नित करूं सेव॥५॥
जिनके सुत प्रथमहिं भरतराज, दूजे सुत बाहूबली समाज।
जब ऋषभदेव धारयो वैराग, त्रणवत सब परिग्रह दियो त्याग॥६॥
तब राज विभाग कियो जिनाय, अयोध्या दीनी है भरतराय।
पोदनपुर बाहूबली सुराय, और पुत्र धरयो तप जोग पाय॥७॥
जब चक्र उदय भयो भरत भूप, षटखंड साधने चल्यो अनूप।

षटखंड साध आयो सुराय, नहिं चक्र प्रवेश भयो नग्रमाय ॥८॥
तब निमती सों पूछो सुराय, तब निमति भेद सब दियो बताय ।
तुमरी आज्ञा माने सुनाहि, बाहुबली लघु भ्राता सुराय ॥९॥
ताते नहिं चक्र कियो प्रवेश, यह बात सुनि तबही चक्रेश ।
इक दूत पठायो भ्रात पास, फिर जाय दूत इम वचन भाष ॥१०॥
चक्रेश हुकम कियो सुनो नाथ, हम नमन करो करजोड़ माथ ।
नातर रणको होवो तयार, यह तत्र वचन लीजो विचार ॥११॥
कोप्यो जब बाहुबली कुमार, हम हूं सुत है श्री ऋषभसार ।
हूं नमन करूं नहिं यहजो वार, हम युद्ध करन को हैं तय्यार ॥१२॥
लड़नेको चाल्यो जब भ्रातद्वार, तब मंत्रिन मिलि कीनो विचार ।
दोनो ही चरमशरीर वीर, नाहक सैन्या बहु होय वीर ॥१३॥
तातें सु युद्ध दोऊ भ्रात साज, यह न्याय नीति है कुशलराज ।
जल मल्ल नेत्र ये तीन युद्ध, थापे मंत्रिन मिलि अति प्रबुद्ध ॥१४॥
जब तीनों युद्धमें विजय पाय, तब चक्री कोप्यो अति रिसाय ।
ले चक्र चलायो भ्रातपास, दे तीन प्रदक्षिणा आयो चक्र हाथ ॥१५॥
इम मानभंग भयो भरतराज, यह अति अयुक्त ही भयो काज ।
तबही संसार असार जान, उपज्यो वैराग्य ताही प्रमान ॥१६॥
तबही पोदनपुरके वन सुजाय, दिक्षा लीनी कचलौंच थाय ।
इक वर्ष प्रतिज्ञा धरि जिनाय, चढ़ी वेल सर्प तनपै सु आय ॥१७॥
नहिं रंच मात्र प्रभु मन डिगाय, इक शल्य रही मनके सुभाय ।
केवलज्ञानी जाने सुभाय, छद्मस्थ ज्ञानमें नहिं लखाय ॥१८॥

तब ही चक्री आयो सुराय, कर नमस्कार तुम चरण माय।
तब ही उपजो केवल सुज्ञान, सब देव करें जय जय महान ॥१९॥
युगकी आदि विषें जिनाय, पोदनपुर ते कियो मोक्ष थान।
सो "श्रवणबेलगोल"के मझार, अभिषेक भयो नाना प्रकार॥२०
तिन प्रतिमा युत अतिशय अपार, है "श्रवणबेलगोला" मझार।
प्रतिमा छप्पन फुट है सुजान, तिनकी महिमा अद्भुत महान॥२१
गोमटस्वामी तिहिं कहत सोय, नहीं छाया ताकी पड़त कोय।
इत्यादि और अतिशय अपार, निरधार खड़ी परवत मझार ॥२२॥
यात्री आवें वंदन अपार, दरशन कर पातिक करें क्षार।
सो चैत वदी पांचम सुजान, संवत उन्नीस वसु एक आन ॥२३
महेसूर राय कलशाभिषेक, प्रथमहिं दिन कीनो भक्ति समेत।
दूजे दिन सब नरनारी आन, अभिषेक कियां हिये हर्षमान॥२४
जय जय ध्वनि हो परवत मझार, मानो क्षीरसागर आयो महान।
इस अवसरपर मुनि चार आय, श्रीशान्तीसागर आचार्य जान॥२५
ऐलक क्षुल्लक ब्रह्मचारी बखान, नरनारी दरस कर पुन्य ठान।
मैं नमन करूं सिर नाय नाय, दरशन ते पातिक सव नशाय॥२६

घत्ता।

जय जय सुख सागर, त्रिभुवन आगर, सुजस उजागर बाहुबली।
तुमको नित ध्यावें, मंगल गावें, सो पावें शिव शर्म थली॥२७॥

ॐ ह्रीं श्री श्रवणबेलगोलास्थित बाहुबलिस्वामिने पूर्णार्घं।

दोहा।

नाथ तुमारे चरण जुग, जो पूजें भवि प्राण।

नरसुर पदको भोगिके, लहे मोक्ष नरनार ॥ २८ ॥
लहे "पोल्ती" अनन्तबल, जपै तुम्हारो नाम।
दास विनय यह नाशि भव, देहु मोय शिवधाम ॥२९॥

पं० नाथूराम शास्त्री मड़ावरा नि० कृत-

श्री चन्द्रपुरीजीकी पूजा।

(स्थापना)

अडिल्ल छन्द।

शोभित नगरी निकट बनारस अति घनी।
चन्द्रपुरी तसु नाम है मनको मोहिनी॥
चन्द्रप्रभु भगवान् सु जन्म भयो तहां।
यातैं अतिशय क्षेत्र प्रगट जगमें कहा॥

दोहा।

चन्द्रप्रभु जिन आदि दे, हैं प्रभु अतिशयवान्।
"नाथू" पूजन हित खड़ो, तिष्ठ तिष्ठ इत आन॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनचैत्यालयस्थ चन्द्रप्रभु आदि जिन-समूह अत्र अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनचैत्यालयस्थ चन्द्रप्रभु आदि जिन-समूह अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनचैत्यालयस्थ चन्द्रप्रभु आदि जिन-समूह अत्र मम सान्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं परि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अष्टक।

उत्तम शुध प्रासुक गंगाजल, स्वर्ण कटोरन माहीं।
धार देत जिनचरणों आगे, जन्म मरण नश जाहीं॥
अतिशय क्षेत्र सु चन्द्रपुरी, जहां चन्द्रप्रभु अवतारी।
दीजे शिवसुख नाथ हमें प्रभो, दुःखभवोदधि हारी॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्व०।

मलियागिर चंदन घसि नीको, तामें केसर डारी।
भव संताप निवारण कारण, धार देत धार धारी॥
अतिशय क्षेत्र सुचन्द्रपुरी, जहां चन्द्रप्रभु अवतारी।
दीजे शिवसुख नाथ हमें तुम, दुःखभवोदधि हारी॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो सुगन्धम्।

चन्द्रकिरण सम तन्दुल लेकर, जलसों शुद्ध करीने।
अक्षयपदके हेतु चरणमें धारूं पुंज नवीने ॥अति०॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षतान्।

चम्प चमेली बेल मोगरा, पुष्प अनेकों लीने।
कामबाण निरवारण कारण, श्री जिनवर ढिंग दीनें
॥ अतिशय० ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनमंदिरस्थ जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा ।

घेवर बावर लाडू बहुविध, षट्‌रस व्यंजन भीने ।
क्षुधा वेदिनी नाश करनको, चरुवर प्रभु ढिंग दीने
अतिशय० ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनातिशयक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ।

जगमग जगमग दीपक सुन्दर, बातिकपूर सुहाई ।
ध्यान लगा शुभ आरति कीजे, कर्म मोह मिटजाई ।
॥ अतिशय० ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनातिशयक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामि० ।

अगर तगर मलियागिर चंदन, धूप बनी दश अंगी ।
प्रभुके चरणों आगे, खेये कर्म जलें बहु रंगी ॥अ०॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनातिशयक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

श्रीफल पिस्ता लौंग छुहारे एला पूगी लावें ।
फल चढ़ाय जिन चरणों आगे मोक्ष महाफल पावें
॥ अतिशय० ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनातिशय क्षेत्रेभ्यो फलं निर्वपामि ।

जल गंधाक्षत पुष्प दीप चरु, धूप फलार्घ बनाई ।
जिनवर चर्ण चढ़ाय हर्षकर, "नाथू" को सुखदाई ॥
अतिशय क्षेत्रसु चन्द्रपुरी जहां, चन्द्रप्रभु अवतारी ।
दीजे शिवसुख नाथ हमें तुम, दुःख भवोदधि हारी ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनातिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यम् ।

जयमाला ।

दोहा ।

चन्द्रपुरी शुभ क्षेत्रमें, श्री जिनभवनविशाल।
पूजन कर निज भक्ति सम, गाऊं अब गुणमाल ॥

चौपाई ।

जम्बूद्वीप भरत प्रधान, आर्यखंड वानारसि जान।
तिसके निकट बसे शुभ ग्राम, चन्द्रपुरी गंगातट थान ॥१॥
महासेन नृप राज करंत, नारि लक्ष्मणा सुख विलसंत ।
वंश इक्ष्वाकु कर्म संयोग, मिले सुलक्षण सुखकर योग ॥२॥
रानी पश्चिम रयन मंझार, सोलह स्वप्न देखे सार ।
उठ प्रभात पियसे पूछिये, ताफल नृपने इम पेखिये ॥३॥
जन्मेंगे तीर्थंकर आय, नाथ त्रिलोकी भवि सुखदाय ।
फल सुन नगरी हर्षित होय, पुण्य भंडार भरे सब लोय ॥४॥
देवीं आई अनेकों धाय, मात सेव कर पुण्य उपाय ।
इन्द्राज्ञासे धनपति आय, चन्द्रपुरी रचना करवाय ॥५॥

पद्धड़ी छंद ।

शुभ चैत्रमासके कृष्णपक्ष, आ वैजयंतसे प्रभु ततक्ष ।
तिथि पंचमको गर्भावतार, लीनो प्रभु लक्ष्मणा मंझार ॥६॥
शुभ कृष्ण एकादशि पौषमास, जन्मे श्री प्रभु आनन्द राश ।
कीनों सु महोत्सव इन्द्र आय, किये नृत्य गान बाजे बजाय ॥
शची तीन प्रदक्षिण नगर दीन, नानाविधसे उच्छाह कीन ।
जननीको सुख निद्रा सुलाय, बालक मायामयी तहां कराय ॥

प्रभु लाय इन्द्रको सौंप दीन, अति हर्षित हो आनंद लीन।
प्रभुकी छवि लख नहिं तृपति होय, तब इन्द्र सहस लोचनसे जोय॥
कर ऐरावत गजपर सवार, पाण्डुकशिलपर जिनवर सु धार।
जब क्षीरसिन्धुका जल मंगाय, अभिषेक सहस अठ कलस थाय॥
जब चन्द्रप्रभु तिन नाम धार, स्तुति कीनी नानाप्रकार।
कीनों प्रभुको अतिशय शृंगार, जननी सौंपे आनन्दकार॥१३॥
जय चमर छत्र शिरपर दुरंत, नाना अनहद बाजे बजंत।
सब नगरीमें आनन्द काज, प्रभु जन्म महोत्सव भयो साज॥
यह चन्द्रपुरी शशि द्युति लसंत, सब पापरूप कलिमा हरंत।
प्रभु शुक्लवर्ण शोभित शरीर, शशि चिह्न लसें चरणों समीर॥
जय डेढ़ शतक धनु तुंग काय, दश लक्ष पूर्व तिनकी सु आय।
लख पूरब ढाई सहस जान, कौमारकाल निवसे महान्॥१४॥
प्रभु राज्य कीन षट्लक्ष पूर्व, परजा पाली सुखकर अनूप।
दर्पण मुख लख वैराग्य ठान, चल सहस्रार पहुंचे प्रधान॥१५॥
प्रभु राज्य त्याग तृणवत् लखेय, भविजनको बहु आनन्द देय।
एकादशि पौष वदी नवीन, तरु नाग तलें दीक्षा सुलीन॥१६॥
प्रभु दुद्धर तप कीनों सुजाय, पुर सौमनस आहार पाय।
प्रभु वर्ष तीन तप घोर धार, चउघाति किये क्षणमें प्रहार॥१७॥
वदि फाल्गुन सप्तमि तिथि प्रवीन, प्रभु केवलज्ञान उपाय लीन।
तब भक्ति सहित सुर इन्द्र आय, तहां समवसरण रचना कराय॥
द्वादश कोठे तिसके मझार, अतिशय चौदह आनन्दकार।
तहां सुन प्रभुका उपदेश सार, हर्षित सब जीव भये अपार॥

चैत फाल्गुन सुदि सप्तमि मंझार, सम्मेद शैलसे शिव पधार।
तिनकी प्रतिमा आनन्दकार, हैं चन्द्रपुरीमें सुक्खकार ॥२०॥
याही तें अतिशय क्षेत्र ठान, यात्रीगण पूजें हर्ष ठान।
जे नर पूजत हैं नाय शीश, ते दुखित कर्मको करें खीस ॥२१॥
वंदें पूजें जे मन लगाय, ते अनुक्रमतें शिवपंथ पाय।
संवत् तेरासी अरु उन्नीस, फाल्गुन वदि अष्टमि दिन मणीस ॥
निज मात सहित वन्दन कराय, शत यात्री अलवर संग लाय।
यह पूजन रच कीनी महान्, बहु हर्ष सहित निज भक्ति आन॥
दुख हरन करन सुख भरन पोष, आनंद घन अतिशयक्षेत्र ताप॥
"दौलत सुत नाथू" नाय नाथ, याचे शिवसुख प्रभु दाय दाय॥

घत्ता।

गंगातट सोहे जगमन मोहे, चन्द्रप्रभु जहां अवतारी।
सो चन्द्रपुरी वर क्षेत्र मनोहर, भविजन शिव सुख दातारी॥

ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जिनातिशयक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामि॥

सोरठा।

होवे सुक्ख अपार, ईति भीति नश जांय सब।
"नाथू" कहे पुकार, पूजक सुक्ख लहे सदा॥

इत्याशीर्वादः।

पंडित भगवानदासजी विरचित-

अतिशयक्षेत्र श्री अहारजीकी पूजा ।

सोरठा ।

अतिशय क्षेत्र अहार, सुन्दर शुभ मंदिर लसैं ।
शोभत महा विशाल, पूजन करि पातक नसैं ॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र अहारविषैं विराजमान श्री जिन-प्रतिमा समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

चाल नन्दीश्वर पूजाकी ।

भर कनक रकेबी माहिं, गंगादिक जो भरों ।
जलधार सु दे जिन पास, जन्म जरा सु हरों ॥
श्री अतिशय क्षेत्र अहार, सुन्दर सुखकारी ।
मैं पूजों चित हरषाय, जिनपद दुखहारी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र आहार विषैं विराजमान जिनप्रतिमा समूहेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

बावन चन्दन घनसार, केशर गंधभरी ।
चन्दन जिन अग्र चढ़ाय, भव आताप हरी ॥श्री अ०॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र अहार विषैं विराजमान जिनप्रतिमा समूहेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं ।

तंदुल ल्यावो सु अखण्ड, उज्वल फलकारी ।
अक्षतसों पूजों जिनराज, अक्षय पदकारी ॥अ०॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र अहार विषै विराजमान जिन प्रतिमासमूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जाती वकुलादिक पुष्प, अलि गुँजार करै।
पुष्पनसों भरों जिनराय, काम समूल हरै॥ अ०॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र अहार विषै विराजमान जिन प्रतिमा समूहेभ्यो कामव्यथा विध्वंशनाय पुष्पम्।

नानारस सद्रसो ल्याय, व्यंजन कर ताजे।
नेवजसों पूजों जिनराज, रोग क्षुधा भाजे॥अ०॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र अहार विषै विराजमान जिन-प्रतिमा समूहेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम्।

करपूरकी वाति सुल्याय, दीपक परकाशे।
मम मोह तिमिर नशि जाय, ज्ञान कला भासे॥अ०॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र अहार विषै विराजमान जिन प्रतिमा समूहेभ्यो मोहांधकार विनाशाय दीपम्।

दश गन्ध हुताशन माहिं, खेवत महकाई।
घट धूम रह्यो नभ छाय, अष्ट करम जाई॥ अ०॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र अहार विषै विराजमान जिन-प्रतिमा समूहेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम्।

एला पिश्तादिक ल्याय, फल उत्तम आले।
जिन चरन धरों फल अग्र, शिवफलको पाले॥अ०॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र अहार विषै विराजमान जिन-प्रतिमा समूहेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलम्।

जल आदिक ले वसुद्रव्य, ताको अर्घ करों ।
मैं पूजों तुम गुणपायँ, पूरन अर्घ करों ॥श्री अति०॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र अहार विषै विराजमान जिन-प्रतिमा समूहेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा ।

शान्तिनाथ मंदिर जहां, शांतिनाथप्रतिबिंब ।
अष्ट द्रव्यकर पूजिये, पूरण अर्घ चढ़ाय ॥

चौपाई ।

देव शास्त्र गुरु वहिर सोभान, कृत्रिमाकृत्रिम जिनालय जान ।
सिद्धचक्र अरु सोलह कर्न, दशलक्षण रत्नत्रय धर्म ॥
पंच परमेष्ठीके गुन कहे, इन सबको पूजो मन लये ।
अष्ट द्रव्य ले अर्घ चढ़ाय, जन्म जन्मके पाप नशाय ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम सिद्ध सोलह-कारण दशलक्षण रत्नत्रय पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घम् ।

अथ जयमाला ।

पद्धड़ी छन्द ।

श्री अतिशयक्षेत्र अहार जान, प्राचीन तहां मंदिर सु थान ।
जहां मंदिर गिरे सुभूम लान, तहां प्रतिमा खंडत अप्रमान ॥
तहां अतिशय ऐसो भयो आन, दस्ताकी चांदी भई सु आन ।
पाना सो साहू बड़ भागवंत, नगरी चंदेरीमें वसन्त ॥ २ ॥
ते माल लेन चाले सु जाय, पहुंचे कोई पुरके मध्य आय ।

जहां दस्ता खरीद करी सु जाय, भरवाये वृषभ दये लोटाय ॥
ते लौट आये अहारगाम, वहां लयो बसेरो एक ठाम।
जब भात भयो देखे सो माल, चांदी देखी तिनने सुहाल ॥
तिनको मन व्याकुळ होत मांहि, दस्तामें चांदी दई सो नाहिं।
मैं तो दस्ताके दाम दीन, ऐसी चांदी हम नाहिं लीन ॥६॥
लौट फेरन चांदी सु जांह, पहुंचे तिनने मालहि भराय।
तब उनसों बात कही सुनार, तुम दस्तामें चांदी दई सुधार ॥
हमको तुम चांदी गुपत दीन, हम नाहीं लेवें हैं प्रवीन।
तबही सु दुकानी कहत भाय, दस्ता हमने तुमको दिवाय ॥७॥
तुमरे जो भाग चांदी जु होय, लेजावो अपने घर सु जोय।
तब ही फिर कहने लगे सु लाल, अपनी चांदी लीजे दयाल ॥
जब खोल दिखायो माल सोय, चांदीसों दस्ता भयो जु सोह।
ऐसो जु अचंभो देख लोग, मनमें चिन्ता लागी जु सोह ॥८॥
तब फिर ही माल लदान दीन, चल चल देखत विश्राम कीन।
आये अहारके ठौर जान, तब निशि वितीत कीनी सुजान ॥
भावहि सु माल देखत सु एव, चांदी तिनकी भई है स्वमेव।
ऐसो अतिशय इस भूम मांह, आनन्द भये उर नहिं समाय ॥
मनमें विचार तब करत सोय, खरचो चांदी या भूम सोय।
जिनने सुपात्रको दान दीन, ताके फल लक्ष्मी होय अधीन ॥
तातें भविजन चउ दान देहु, जातें भव भवमें सुक्ख लेहु।
तारी सुभूमके मध्य जान, जिनमंदिर बनवाये सुजान ॥११॥
ते बने अनूपम शोभनीक, रचना तिनकी उत्तम सो ठीक।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा करत सोय, जैनी जु जुरे गणना न कोय ॥
मंडप वेदी रचना सजाय, जहां पूज भयो अति ही उछाह ।
मिष्ठान्न भांति भांतिन बनाय, बावन मन मिरचें लई पिसाय ॥
ता चूरन पंगतको सु ध्याय, चुकटी चुकटी परसो सु जाय ।
पूरन न भयो चूरन सुजान, जैनी सु जुरे इतने प्रमान ॥१९॥
संवत् द्वादश शत वर्ष मांहि, सेंतीस अधिक वर्षन प्रमान ।
मासंह सुमार्ग सित पक्ष आप, तिथि तीज वार बुद्ध सुमार ॥
शुभ घड़ी महूरत लग्न देख, वहां बिम्बप्रतिष्ठा भई विशेष ।
जाचकजनको बहु दान दीन, मनसा पूरन सबकी सु कीन ॥
सब पंच एक दीजो वरदान, मेरे संतत नहिं होय जान ।
सब पंच समक्ष उच्चर सुदाय, मनसा पूरन होवे सो भाय ॥
तिन पुण्यभंडार भरो सु आय, तिनकी कीरत जग नाम छाय ।
जबसे प्रसिद्ध अहार क्षेत्र, भविजन इहां कल्यानक सु देह ॥
जहां बनो बड़ो मंदिर सुजान, ताको चढ़त न लागे सिवान ।
चातरसो बनो अति सुक्खदाय, तापै दरवाजो सुभग आय ॥
दरवाजे भीतर चौक जान, सो चौक बनो उत्तम सो थान ।
जिनमंदिरमें जानेको द्वार, ता द्वारे लागे पैरकार ॥ २२ ॥
उतरत नीचे अति हरष धार, तब शान्त जिनेश्वर छवि लखाय ।
सब जीवनको आनन्ददाय, श्री शान्त छवी अति ही सुहाय ॥
खडगासन जिनको चिन्ह जान, जिनके चरननको सीसनाय ।
सुन्दर सरूप सब गुनन पूर्ण, द्वादश सुहस्त उन्नत सुभूर ॥
अब दूजो मंदिरको सुजाय, जहां पार्श्वनाथ पूजन कराय ।

जो भविजन दरशन करत आय, तिनके अघ भवभवके नशाय ॥
जो मन वच तन पूजा कराय, ते सुरगसंपदा सहज पाय ।
अनुक्रम करिके शिवराज पाय, तहां अविनाशी सुखको सुपाय ॥
तिनके गुनकी महिमा अपार, गनधर सु कथत नहिं लहत पार ।
हम तुच्छ बुद्धि किम लहत पार, मोको करिये भवजलधि पार ॥

घत्ता ।

श्री शान्ति जिनेश्वर, जग परमेश्वर, इन्द्रादिक पूजत चरणं ।
तुम जग जन तारन, दुक्ख निवारन, भविजनको तुम ही शरणं ॥

अडिल्ल ।

जो यह पूजा पाठ पढ़े मन लायके ।
सुने चित्त दे कान सुहर्ष बढ़ायके ॥
पुत्र पौत्र गृह संपत वाहन अनुसरे ।
नाना पदवी पाय मुक्ति कामिनि वरे ॥

इत्याशीर्वादः ।

दोहा ।

उनइससे सत्तर अधिक, संवत् विक्रम जान ।
मारग सितकी पंचमी, पूजा पूरण जान ॥
अरजी भगवानदासकी, पण्डित गुनि जो सोय ।
भूल होय सोधन करो, क्षमा कीजिये मोय ॥

इतिश्री अतिशयक्षेत्र अहारजीकी पूजा समाप्त ।

श्री संकटभंजन पार्श्वनाथ पूजा ।

श्रीमत्संकटभंजन जिनपतिं पापौघविध्वंशनं ।
भव्यानां सुखदायकं भवहरं साम्राज्यलक्ष्मीप्रदं ॥
यर्चेऽहं जलचन्दनाक्षतभरैः पुष्पैः सनैवेद्यकैः ।
दीपैर्धूपफलार्घदानविशदैः स्वर्मोक्षसंसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री संकटभंजन पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं श्री संकटभंजन पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्री संकटभंजन पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अष्टक ।

दिव्यसिंधुसमुद्भवैः, वरजान्हविसलिलोत्तमैः ।
कर्पूरागुरुवासितैः, शुभ रत्नकुम्भविनिर्गतैः ॥
अर्गलापुर संस्थितं, जिन संकटं भवभंजनं ।
पार्श्वनाथमहं यजे, खगवासि वालि नमस्कृतं ॥

ॐ ह्रीं श्री संकटभंजन पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चंदनागुरु केशरैः, शुभ कर्पूरैरसनिर्मितैः ।
सत्सुगंधविशोभितैः, भ्रमरैश्च वंदिभिःनर्तितैः ॥अ०

ॐ ह्रीं श्री संकटभंजन-पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि० ॥ २ ॥

शुभ्र तन्दुलपायदैर्वरराय भोगसुखाकरैः।
शालि सम श्वेतवर्ण अखण्डित मौक्तिकं संनिभैः॥

ॐ ह्रीं श्री संकटमंभन पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद
प्राप्तये अक्षतं नि० ॥ ३ ॥

मल्लिका शुभ चंपकैर्बकुलैश्चपाडल केतकी।
पुण्डरीक कदंब कुंद विचित्र पुष्प सुशोभितैः ॥अ०

ॐ ह्रीं श्री संकटमंभन पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण-
विध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

घापसैर्वरमोदकैः शुभ घेवरैर्दधिदुग्धकैः।
शर्करा घृत संपतैः रति पाक शाक विमिश्रितैः ॥अ०

ॐ ह्रीं श्री संकटमंभन पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग
विनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

दीपरत्नसुदीपितैः शुभ कर्पूरी प्रति क्षोदितैः।
मोहनीय महांधकार विनाशनैः माणि शस्तमैः ॥अ०॥

ॐ ह्रीं श्री संकटमंभन पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार
विनाशनाय दीपं नि० ॥ ६ ॥

धूप धूम्र सुगन्ध शोभित चन्दनागुरु संयुतैः।
कर्मकानन धानकैः सुधनंजयैर्वर संमिश्रैः ॥ अ० ॥

ॐ ह्रीं श्री संकटमंभन पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दह-
नाय धूपं नि० ॥ ७ ॥

नारिकेल रसालकैः, कदली च निंबुकदाड़िमैः।
मोक्षफलप्रदायकैः, यजे प्रभुं सु सत्फलैः ॥ अ० ॥

ॐ ह्रीं श्री संकटमंभन पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल
प्राप्तये फलं नि० ॥ ८ ॥

सुदिव्यतोय चंदनैः सु अक्षतैश्च पुष्पकैः ।
चरु प्रदीप धूप पुंग अर्घ पात्र निर्मितैः ॥
यजाम्यहं संकटापहं जिनं सु सुक्खदायकं ।
पार्श्वनाथ पाद पद्म विश्वनाथ चर्चितं ॥

ॐ ह्रीं श्री संकटभंजन पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

जयमाला ।

भवजलनिधितारण, शिवसुखकारण, मति पालित निर्मल चरणं ।
करुणारस सागर, परम गुणाकर, जय जिन सकल भुवन शरणं ॥
जय जिनवर मुनिवर नमित पाद, स्याद्वादपदांकित चारु वाद ।
जय भविकसरोज विकाश सूर, जय कलिमल विदलन संसारदूर ॥
जय परम परा पर वीतराग, घन महिमा धाम मद वृक्ष नाग ।
जय कर्म घनाघन चंड वात, करुणापर तारित नरक पात ॥२॥
जय विमल शील जल धौत दुरित, सुरनर वर संस्तुत विशद चरित्र ।
एक हिमकर शशांक वदनं, परमात्म परम शिव सौख्य सदनं ॥३॥
निरुपम संयम वन वारि वाह, केवल विबोध लोचन नीराह ।
अक्षय सुख कारण विगतशोक, धर्मामृत पोषित निखिल लोक ॥४॥
जय जय कमलालय लालित देह, अजरामर परमानंद गेह ।
जय जगत विबुध वृक्षावतार, जय मुक्ति सु कामिनि कंठहार ॥५॥
जय खेद रहित निरसित विशाद, जय मृत्युंजय निहित प्रमाद ।
विजिताक्ष काम जिदनंतदेव, मुनि पद्मनंदि कृत पाद सेव ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री संकटभंजन पार्श्वनाथाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन जनन निवारण, मद तरु वारण शिवशंकर विजरामरणं ।
भविजनन दिवाकर गुण रत्नाकर शिवसुखदायक तुम शरणम् ।

इत्याशीर्वादः ।

महमूदाबाद नि० ला० भगवानदासजी विरचित–

श्री हस्तिनागपुर क्षेत्र पूजा।

* गीता छंद *

वर नगर हस्तिनापुर महा रमणीक बहु सुखकार है।
जेहि करी रचना आप धनपति इन्द्र हुक्कम बरदार है॥
शोभा अनोपम जासुकी कवि कहे कहि नहिं पार है।
जहं शांति कुंथ अरु अरह जिनको भयो शुभ अवतार है॥

दोहा।

करत आव्हानन जोरि कर, शांति कुंथ अरनाथ।
अत्र आय तिष्ठो प्रभू, पूजों पद नय माथ॥

ॐ ह्रीं श्री हस्तिनागपुर सिद्धक्षेत्र स्वामी शांति कुन्थ अरहनाथ जिनेभ्यो अत्रावतरावतरसंवौषट् आव्हाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिस्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं।

गीता छन्द।

द्रहकमल निरगत नीर निर्मल देवसरिसों लावना।
शुभ मिष्ट सौरभ युतसु प्रासुक हेमकुंभ भरावना॥
श्रीशांतिकुंथअरु अरहजिनपद जजों मनवचकायके।
भवभरम हरि वसुकरम दरि शिव लहौ पुण्य उपायके॥

ॐ ह्रीं श्री हस्तनागपुर सिद्धक्षेत्रे श्रीशांति कुंथ अरहनाथ जिनेभ्यः जलं निर्वपामिति स्वाहा ॥ १ ॥

मलय कुंकुम सह घसों करपूर आदि मिलायके।
जा गंधसों मधुवृंद नाचैं हेमकुम्भ भरायके।
श्री शांति०। भव० ॥ चंदनं ॥ १ ॥

मोतीसमान अखण्ड अक्षत शुद्ध निर्मल लायके।
अक्षालिके प्रासुक सुपानी हेमथाल भरायके ॥
श्री शांति०। भव० ॥ अक्षतं ॥ २ ॥

जाही जुही वर मोंगरा वेला चमेली जानिये।
पुष्पसौरभयुत भले भरि हेमथार सुआनिये ॥
श्री शांति०। भव० ॥ पुष्पं ॥ ३ ॥

अर्धचन्द्र सुहालफेनी मोदकादिक कीजिये।
रसपूर मोतीचूरहू भरि हेमथार सुलीजिये ॥
श्रीशांति० ॥ भव० नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दीपक रतन करपूर घृतके बहुउदोत करावने।
मोहमद अँधकार नाशक हेमथाल भरावने ॥
श्रीशांति०। भव० दीपं ॥ ६ ॥

घनसार काष्ठागरु तगर वर कदलिनंद मिलायके।
करि चूरअगिनि जराय दीजे नचैं अलिगणआयके ॥
श्रीशांति०। भव० ॥ धूपं ॥ ७ ॥

वरदाख मुनका श्रीफलादिक चोंच मोच मँगायके।
सहकार और अनार पिस्ता हेमथाल भरायके ॥
श्रीशांति०। भव० ॥ फलं ॥ ८ ॥

जलमलय अक्षत पुष्प नेवज दीप धूप मँगायके।
फल मेलि कंचनथाल भरिके शुद्ध अर्घ बनायके॥
श्रीशांति० । भव० ॥ अर्घं । ९ ॥

अथ प्रत्येक अर्घं।

गीता छन्द।

श्रीशांतिनाथ जिनौतरे कुरुवंशमांहिं बखानिये।
पितु विश्वसेन विख्यातमाता रानी ऐरा जानिये॥
चालीस धनु उन्नत वपू सारंगचिह्न सुमानिये।
जलआदि आठौ द्रव्य लै तिन पादपूजन ठानिये॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभनगर गजपुरको नृपति वर सूरसेन सुजानिये॥
तसुपट्टरानी श्रीमती जाकुक्ष कुंथजिन आनिये॥
है तीर्थ चक्री कामपद धर छाग चिह्न बखानिये।
जलआदि आठौ द्रव्य लै तिन पादपूजन ठानिये॥

ॐ ह्रीं श्री स्वामी कुंथनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वं० स्वाहा।

वर नृप सुदर्शन हस्तिनापुर तासुकी मित्रा प्रिया।
जेहिकुक्षिमें श्रीअरहस्वामी आयके जन्महि लिया॥
कुरुवंश हेमाभा कह्यो है चिह्न सफरीको पिया।
जलआदि आठौ द्रव्य लैकर जजन तिन पदको किया॥

ॐ ह्रीं श्री स्वामी अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वं०। अर्घं।

जयमाल ।

त्रिभंगी छन्द ।

जै शांतिजिनेशा हरणकलेशा, वृष उपदेशा गावत हैं ।
गुणऔघतिधारे कुंथ पियारे, जग उजियारे ध्यावत हैं ॥
जै अरहजिनंदा तुम मुनिवृंदा, हर भवफंदा पावत हैं ।
जैजैं त्रैदेवा दास जिनेशा, तुम पदसेवा भावत हैं ॥

पद्धड़ी छंद ।

है नगर हस्तिनापुर प्रधान, कुरुवंश नृपतिको राज थान ।
है नगर अनोपम शोभकार, शुभ हाट बाट चौपथ बजार ॥१॥
जेहि रचना किय धनपति बनाय, एकवार नहीं त्रैवार आय ।
कै रचना पुनि मणि वृष्टि कीन, पितुगृह पद् नव महिना प्रवीन ॥२॥
सब जन अन धन पूरित उदार, नहिं दीन दुखी कतहू लगार ।
जै विश्वसेन नृप गुणनिधान, तिन पटरानी ऐरा सुजान ॥
जिन कुक्ष शांतिजिन वास लीन, हरि आय मातुपद पूज कीन ॥४॥
करि कल्याणक हरि गे निकेत, रखि देवी जननी सेव हेत ।
नृप सूरसेन सब विधि उदार, जिनमहिषी श्रीमति सुक्खकार ॥५॥
तिनकुक्ष कुंथ जिन वसे आय, हरि पूज्यो जननी पगन थाप ।
करिकल्याणक हरि गमनकीन, देवी सेवाहित राखिदीन ॥६॥
ते वस्त्राभरण धरैं बनाय, करैं प्रश्न पहेली मोद लाय ।
माता तिनउतर दें बताय, मुदकाल जात जानो न जाय ॥७॥
जै राजसुदर्शन जग बखान, तिन मित्रा रानी गुणन खान ।
तिनगर्भ अरहजिन वसे आय, हरि पूज्यो जननी शीश नाय ॥८॥

करि कल्याणक हरि गये धाम, रचि देवी सेवा मातु काम।
जब जन्म लियो जिनराजदेव, देवनघरअचरज भे स्वमेव ॥९॥
लखि नम्रमौलि हरि तुरतआय, लै न्हवन कियो गिरिपाण्डुजाय।
करि न्हवन वस्त्रभूषण पिन्हाय, पुनि दियो मातुकी गोदआय॥
करि ताण्डवनृत्य गयो सुरेश, सुत जन्मोत्सव कीन्हो नरेश।
तरुणापे ब्याह अरु राज कीन, तीरथ चक्री पद काम लीन ॥११॥
कारण लखि त्याग्यो राजभार, कीन्हों तप दीक्षा लगन धार।
करि घाति नाश केवलउपाय, धर्मोपदेश बहुजन कराय ॥१२॥
प्रभु जीत्यो अष्टदश दोष वेश, भे छयालिस गुण धारी जिनेश।
फिर शैलसमेदशृंग आय, धरि ध्यान अघाती क्षय कराय ॥१३॥
खिरिगयो काय करपूर जान, हरि कियो आय कल्याणवान।
प्रभु भये परम सिद्ध निर्विकार, गुण आठ लहे रिपु आठ मार॥
प्रभु भयो निरंजन निराकार, सब जीवनके आनन्दकार।
उत्पाद ध्रौव्य व्यय गुणन धार, प्रभु वस्यो जाय शिवपुर मझार॥
गुणकीर्ति तुम्हारी नाथ जौन, को गायसके समरथ है कौन।
तुम हो त्रिभुवनपति श्रीजिनेश, तुम जनममरण काटन कलेश ॥१६॥
तुम नाम जपे अरु किये ध्यान, कटिजात कर्मबन्धन महान्।
तुम हो शुभ अतिशयके निकेत, भागत पातक तुम नाम लेत ॥१७॥
तजि जांय सकल दुखद्वंद साथ, पकरैं लक्ष्मी तेहि आय हाथ।
है नगर हस्तिनापुर प्रधान, भे त्रैजिनके द्वैद्वै कल्यान ॥१८॥
है एक तहां मंदिर महान, शुभ बनी तीनि नशियां सुथान।
शुभ तीरथ जगमें है प्रधान, जाहि वंदनको फल है महान ॥१९॥

जे दरश परम पूजन करेत, तिनको अभिमत फल नाथ देत ।
जे करत शांतिकुंथअरह ध्यान, ते पावत दिवशिवको सुथान ॥२०॥
हे शांति कुंथ अरु अरहदेव, भववारिधिसे प्रभु तारिलेव ।
है अर्जी यह भगवानदास, करि मर्जी दीजे शिवनिवास ॥२१॥

घत्ता नन्दाछन्द ।

गुणगणनविशाला, अतिहीआला, जैमाला जिनराजतनी ।
शांतिकुंथअर जिन जे पूजहि ते लहैं आनन्द सुक्खघनी ॥

ॐ ह्रीं श्री हस्तिनागपुर सिद्धक्षेत्रे श्री स्वामी शांति कुंथ अरहनाथ जिनेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

रोला छन्द ।

शांतिकुंथ अरु अरहनाथ जयमाल प्रकासी ।
पढ़ैं गुणैं जे भव्य होय बहु भोग विलासी ॥
अन धन सुत परिवार लहैं जग कीर्ति उजासी ।
नानाविधि सुख भोगि होय शिवसदन निवासी ॥

इत्याशीर्वादः ।

अतिशयक्षेत्र श्री पचरारीकी पुजा ।

अडिल्ल छंद ।

आतिशय अद्भुत क्षेत्र परम शोभा बनी ।
आतम गुण दरसावन अति उपमा घनी ॥
आदीश्वर जिनराज सुधारन काजके ।
पचरारी महाराज जजौं शिवराजके ॥

ॐ ह्रीं श्री पचरारी अतिशयक्षेत्र मध्ये विराजमान चार शतक त्रेपन जिनबिंब अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथाष्टकं ।

चाल छंद नंदीश्वर पूजा ।

हिमवन सरिता जल लाय, निरमल जीव विना ।
त्रय धार दई हरषाय, तीनों रोग छिना ॥
अतिशय जुत छेत्र महान, शोभा को वरनै ।
चतुसैत्रेपन जिन मान, पूजत दुख हरनै ॥

ॐ ह्रीं श्री पचरारी छेत्र मध्ये विराजमान ४५३ जिन-बिंबेभ्यो जन्म जरा मृत्युरोग विनाशनाय जल निर्वपामिति स्वाहा।

गोशीर अगर करपूर, केशर रंग भरी ।
पूजत जिनराज हजूर, भव आताप हरी ॥अति०॥

ॐ ह्रीं श्री पचरारी क्षेत्रमध्ये विराजमान ४५३ जिन-बिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय सुगंधं ॥ २ ॥

भव छुद्र अनेक प्रकार, धारत दुख पायो ।
अक्षयगुण अक्षत सार, पूजत हरषायो ॥ अति०

ॐ ह्रीं श्री पचरारी क्षेत्र मध्ये विराजमान ४५३ जिन-बिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं ॥ ३ ॥

मनमथ दख वेग प्रचंड, खर जग छाय रहो ।
कमलादिक पुष्प करंड, पूजत भक्ति गहो ॥अति०॥

ॐ ह्रीं श्री पचरारी क्षेत्र मध्ये विराजमान १५१ जिन-बिम्बेभ्यो कामवाण विनाशाय पुष्पं ॥ ४ ॥

आकुलता जगत मझार, नानाविध केरी ।
तसु हरन जजों हितकार, नाना चरु ढेरी ॥अति०॥

ॐ ह्रीं श्री पचरारी क्षेत्र मध्ये विराजमान १५१ जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ॥ ५ ॥

इह मोहकर्म जग जाल, संतत भरमायो ।
थिरहरन सुदीपमजाल, आरति गुण गायो ॥अति०॥

ॐ ह्रीं श्री पचरारी क्षेत्र मध्ये विराजमान १५१ जिनबिम्बेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं ॥ ६ ॥

दस गंध धनंजय खेय, दस दिश गंध भरी ।
जिनराज चरण चित देय, वसुविध कर्म हरी ॥अति०॥

ॐ ह्रीं श्री पचरारी क्षेत्रमध्ये विराजमान १५१ जिन-बिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं ॥ ७ ॥

रसना नाना परकार, करणनि सुखकारी ।
विधि विघन निघन करतार, जिनपद उपकारी ॥अति०

ॐ ह्रीं श्री पचरारी क्षेत्रमध्ये विराजमान १५१ जिन-बिम्बेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं ॥ ८ ॥

आठों विध द्रव्य अनूप, आठों अंग नमों।
पूजत गिरवर शिवभूप, आठों बंध दमो ॥अति०॥

ॐ ह्रीं श्री पचराई क्षेत्र मध्ये विराजमान ४१२ जिन बिम्बेभ्यो अर्घं ॥ ९ ॥

चाल।

वसुद्रव्य अनूप महाना, अष्टम पति जिनभगवाना।
चसु वसु वसु दूर करीजे, वसुमाथल वेग ही दीजे॥
तुम हो प्रभु दीन दयाला, मेरे काटो अघ जाला।
इह अरज सुनो जिनराई, मोय लीजे पास बुलाई॥

ॐ ह्रीं श्री पचराई क्षेत्रमध्ये ४१२ जिनप्रतिमाभ्यो पूर्णार्घं ॥ १० ॥

जयमाल।

घत्तानन्द छंद।

अतिशयपचराई, सुखसम्पाई, अतिहितकारी गुणभारी।
भवि प्रेम अपारी, दुरजयकारी, जजतसुधारी अविकारी ॥१॥

चौपाई।

जय जंबूद्वीप महाअनूप, सब द्वीपनिको भाषो सुभूप।
जय आरजखंड दिपै महान, जय कांठरदेश तहां प्रमान ॥२॥
जय पचराई शुभ क्षेत्र जान, अतिशय अनूप आनंद थान।
जय पिपरौदा इक मील दूर, खनियाधाना चतुकोसपूर ॥३॥
जय हूंठ कोस गोला सुकोट, तहं अतिशय क्षेत्र अनंद पोट।

जय सरवर गिर वापी सुरूप, जय मनहर क्षेत्र कहो अनूप ॥४॥
प्रतिबिंब मनोहर दिपत भान, चतुसेत्रेपन आनंद दान ।
जय आदीश्वर जिनराजदेव, जय शांत कुंथ अरनाथ सेव ॥५॥
संवत द्वादश दस पुन्यरूप, कांठी मुनिगण आश्रय सरूप ।
जय जय थंभा इक शतक पांच, जय रत्नत्रयदायक सुसांच ॥६॥
जय भव्यजीव वंदन सुगांय, सुरपति निशगाति संगीतथाय ।
जय अधिक धर्म विश्रामथान, जय जय मनवांछित फलप्रदान ॥७॥
जय वृषशाला वापी अनूप, गिर तट सरोज सरवर सरूप ।
जय जयकर सप्त महा उतंग, जय भक्तिवान आवत अनंग ॥८॥
चक्री बल हर प्रतिवासदेव, जय विद्याधर मिल करत सेव ।
जो जावत नावत भक्ति पूर, जय जय तिनकलमल होत दूर ॥९॥
जय दातादीन दयालवंत, जयजय त्रिभुवनपति नमतवंत ।
सो दुखियाके दुखचूरचूर, आतम अनुभव रस पूरपूर ॥१०॥
गति चार परावरतन निवार, निजगुण दीजे भंडारसार ।
मम नयानंद विस्तारतार, गिरवर सेवा दीजे सवार ॥११॥

आर्या छन्द ।

जो पचरारी पूजै, मन वच तन भाव सुद्धकर प्रानी ।
सो होवे निश्चयसों भुक्ति और मुक्तिसार सुखथानी ॥१२॥

इत्याशीर्वादः ।

श्री चूलगिरि पार्श्वनाथ पूजा।

अष्टक।

गंगाजल नीरं, उज्वल क्षीरं, कुंदशशांकनिभं सुहेमं।
केसर रस युक्तं, निर्मल नीरं, रत्नजटित भृंगार भरं॥
श्रीचूलगिरींद्रं स्थित जिनचंद्रं पूजित इंद्रं भक्तिभरं।
पूजो जिनराजं सौक्ष समाजं पार्श्वदेव वांछित सुखदं॥

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

मलयागिरि गन्धं, चारु शशांकं, अलिकुल मोहित गंध भरं।
तापत्रयछेदं, कर्मविभेदं, चन्दनरस अति सौख्य तरं॥चूल०॥

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

शुन्दीकशुभ पूजां, अलीकुल गुंज्यं, मौक्तिवत्न सुकांति धरं।
जामोद अत्याधिक दशदिग साधित अक्षय पद शिव सौख्य परं॥चू०

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अक्षय-पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

जाती वर चम्पक पाडल पंकज बधू जीव केतकी विमलं।
कुन्दादिक मोदित अलिकुल बोधित कल्पलतादि भवं विमलं॥चू०

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय काम-बाण विध्वंसनाय पुष्पं नि०॥ ४॥

पायस घृत मण्डक, घेवर लड्डुक पाक शाक विंजन सुखदं ।
घेवर वर शारं, शर्कर तारं दाली घृतं पक्व कृतं ॥ श्री चूल० ॥

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

उज्वल अति दीपं अति मकंपं मद्योतित दश दिश वचनं ।
घृत तल रसालं रविगुण हारं, दिव्य कल्पतरु रत्न भवं ॥चू०॥

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि० ॥ ६ ॥

कृष्णागुरु चन्दन, दशविध नन्दन, मेघमालि मिवपन पटलं ।
सौगंध विकासित दशदिग वासित, धूप धूम्र अति सौख्यकरं ॥

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि० ॥ ७ ॥

श्रीफल वर आम्रं, दाडिम कामं, मातुलिंग कर्कट श्रीफणं ।
बादाम विशालं, जंबु रसालं, नानाविधफल अति रस भरं ॥चू०

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० ॥ ८ ॥

जिनवर गंधाक्षत, पुष्पसु चरुवर, दीप सु धूपं गन्धयुतं ।
फल भेद रसालं, अर्घ विशालं, विश्वनाथ वांछित सुखदं ॥चू०॥

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं नि० ॥ ९ ॥

जयमाल।

गुणगण सुखकारं, निर्ज्जितमारं, पाप ताप विनाश करं।
असुरासुरवंदित, त्रिभुवनार्चित, पार्श्वनाथ वांछित सुखदं॥
उन्नतं सुंदरं सर्वशोभाधरं, लक्षणैर्लक्षितं भूरुहैर्वेष्टितं।
चूलगिरि संस्थितं चारु जिनमंदिरं, देववृंदार्चितं किन्नरैर्नार्तितं।१।
मुनिगणैः सेवितं सिद्ध संघान्वितं, भूचरी खेचरी नृत्य संपूजितं।
चूलगिरि० ॥ २ ॥
गान संगीत वादित्र सन्मंगलैः, मंद मंद ध्वनि ध्यान कोलाहलै।
चूलगिरि० ॥ ३ ॥
पार्श्वदेवस्य शुभार्बिंब जगभूषणं, मोहमिथ्यात्वमदमान संदूषणं।
चूलगिरि० ॥ ४ ॥
गो द्विपा सिंघ सारंग घनगर्ज्जितं, केकिमार्ज्जारवैरादिपरि वर्ज्जितं।
चूलगिरि० ॥ ५ ॥
नेमिनाथस्य जिनबिंब शोभाधरं, वाम भागेषु मंदोदरी मंदिरं।
चूलगिरि० ॥ ६ ॥
इंद्रजीत तत्र संप्राप्त मुक्तास्पदं, कुंभकर्णादिलब्धं निर्भयपदं।
चूलगिरि० ॥ ७ ॥
संस्मरेत् क्षेत्रजन दिव्य सुखदायकं, स्वर्गमुक्त्यादि वांछित पददायकं॥
चूलगिरि० ॥ ८ ॥

श्रीचूलपर्वतगतान् मुनिराजवर्यान्।
श्री विश्वनाथ द्विज संप्रणितान् सुभक्त्या॥
ये पूजयंति सततं जिनपादपद्मं।
सौ धर्म मुक्तिपदभाजि भवेत्स नित्यं॥

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्रपूजा गुरुपर्युपास्ति, सत्वानुकंपं शुभ पात्रदानं।
गुणानुरागः श्रुतिरागमस्य, नृजन्मवृक्षस्य फलान्यमूनि॥

इत्याशीर्वादः।

श्री कम्पिलाजी (विमलनाथ) की पूजा।

छंद गीता।

कंपिला नगरी सुकृतवरमा पिता श्यामा मातके।
सुत विमल वंश इक्ष्वाकु अङ्क वराह शुभ जगतातके॥
साठ धनु उन्नत सुकंचन वर्ण देह विराजही।
सहस्रारतें चय साठ लख वर्ष सुआयु लही॥
प्रभु विमल मतिकर विमलमति भो विमलनाथ सुहावने।
गुण वृन्द चन्द अमंद आनन जगत फन्द मिटावने॥
अब लागि भो मनकी सुआसा पाद पूजन की भली।
तसि करो किरपा धरो पगं इह आयजो पाऊं रली॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणं।

मैं ल्याय सुभग कथन्ध चन्दन मंद मंद घसायके।
मिलवाय त्रिषा निकंद कारन झारिका भरवायके॥
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्रदण्ड सुहावने।
पद जजौं सिद्धिसमृद्धि-दायक सिद्धि नायक लो तने॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा।

घसवाय चन्दन अगर जा कर्पूर वासव वल्लभा।
धरि रतन जड़ित सुवर्ण भाजन मांहि जाकी अति प्रभा॥
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अति दीर्घ तंदुल धवल छालि पुञ्ज छाजे थारमें।
धनचंद लाजित शरद ऋतुके कुन्द सकुचे हारमें॥
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहु अमल कमल अनूप अनूपम सहसदल विकसे कहे।
सो धारि कर पर देखि शुभतर भाव कर वर ले लये॥
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शतछिद्रकेनी धवल चन्द्र समान कांति धरे घनी।
वर क्षीर मोदक शालि ओदन मिले खंडा सोहनी॥
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि दीप दीपति जोति दश दिशि झोक लगे न पौनकी
ना बुझत धरि कंचन रकेबी कांति प्रसरित जौनकी॥
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले धूप गंध मिलाय बहु विधि धूमकी सुघटा लिये।
जो खेय धूपायन विषय सब कर्मजाल प्रजालिये॥
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले क्रमुक पिस्ता लांगली अरु दाख बादामे घनी।
शुभ आम्र कदलीफल अनूपम देवकुसुमा सोहनी॥
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ जिवन चंदन अक्षत सुमना प्रवर चरु ले दिया।
और धूप फल इकठे सुकरिके अरघ सुन्दर मैं किया॥
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्रदण्ड० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय सर्वसुख प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द मालती।

जेठ वदी दसमी गनिये प्रभु गर्भावतार लियो दिन आछे।
इन्द्र महोत्सव कर सुसुरी बहु राखि गयो जननी ढिंग पाछे॥
देवि करें जननीकी तहां बहु सेव अभव अनंदही आखे।
मैं अब अर्घ बनाय जजों पद मो मन और भिलाप न राखे॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ कृष्णा दशम्यां गर्भ-कल्याणकाय अर्घम्।

माघ वदी गनि द्वादशि के दिन सुकृत वर्ग धरे सुतिया के।
निर्मलनाथ प्रसूत भये जग भूषण हैं वर मुक्ति प्रिया के॥
जों लग केवल की पदवी नहिं लेत अहार निहार न जाके।
पूजत इन्द्र शची मिलिके सब मैं पद पूजत हों युग ताके॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेंद्राय माघ कृष्णा द्वादश्यां जन्म-कल्याणकाय अर्घम्।

माघ वदी शुभ चौथ कहावत छोड़त यावत राजविभूती।
वास कियो वनमें मनमें लख जानि सबै जगकी करतूती॥

केश उपारि सुधारि भये शिव आस लगी सुखकी सुमखली ।
मैं पदकों न निधारि जजूं अब मोहि खिलावहु सो अमरुती ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय माघ कृष्णा चतुर्थ्यां तप कल्याणकाय अर्घम् ।

केवल घातक जो प्रकृती सो तिरेसठ घात करी तुम नीके ।
माघ वदी छठिमें उपजो पद केवल भे प्रभु दीन दुनीके, ॥
दे उपदेश उतारि भवोदधि काज सिधारि दिये सबहीके ।
पूजत मैं पद अर्घ बनायके तो लखि देव लगे सब फीके ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्णा षष्ठयां ज्ञान कल्याणकाय अर्घम् ।

छांड़ि सयोग सुथान लियो सु अयोग कहो जिहिकी थितिआनी ।
पंचहि ह्रस्व समय तिहि भूरि कहे अवसान समय युगमानी ॥
जानि पचासी अघातियकी प्रकृति तिनमें सुबहत्तरि भानी ।
अन्त समय करि तेरह चूरन सिद्ध भये पद पूजहुं जानी ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय आषाढ़ कृष्णा अष्टम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घम् ।

दोहा ।

शुभ अषाढ़ कृष्णाष्टमी, विमल भये मल दूर ।
भूरि रहे शिवगण विषे जजहुं अरघ ले भूरि ॥

छन्द त्रिभङ्गी ।

जय सुकृत वरमाके शुप धर मा पूरन करमा भे परमा ।
जय करत सुधरमा, रहित अधरमा रहत जगन्मा पदतरमा ॥

ओ गुणतीतरमा नहिंगणधरमा वसतअकरपा शिवसरमा।
आवा ताजिशरमा जोतुअ घरमा फरे न भरमा दर दरमा॥

भुजंग प्रयात।

गुणावास श्यामा भली जासु अम्बा, भये पुत्र जाके दिखाये अचंभा।
रहे जासुके द्वार पे देव देवा, नमो जय हमें दीजिये पाद सेवा॥
छली चाल में नाथ तेरी अनूठी, बिना अस्त्र बांधे करे शत्रु मूठी।
लई जय तिहूं लोकमें जीत एवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
पड़ी कण्ठमें नाथके मुक्ति माला, विराजे सदा एकही रूप वाला।
सकल शास तेरे ल ी देन जेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
लखे रूप तेरो करे शुद्धताई, न लागे कभी ताहि कर्मादि काई।
महा शान्तिता सुरूप हीमें धरेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
प्रभू नाम रूपी दीया जीभ द्वारे, धरे वारि सो बाह्यभ्यंतर निहारे।
पिछाने भलीभांति सो आत्मभेवा, नमो जय हमें दीजिये पादसेवा॥
न देखी कभी सो लखे मुक्तिरामा, तहां जायके वेश पावे असम॥
विराजे तिहूं लोक में जा मथेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
नवावें तुम्हें लोक में माथ जेते, करें पाद पूजा भलीभांति ते ते।
तिन्होंकी सदा त्रास भवकी कटेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०
अतः देव तुभ्यं नमस्कार कीजे, बड़ाई तिहूं लोकमें पाय लीजे।
सबे जन्मकी कालिमा जो मिटावे, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
महा लोभरूपी घटाको हवा तू, बलीमान शुण्डाल कण्ठीरवा तू।
न राखी कतौ दोषकी जानि ठेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
कुतृष्णा महामीनको मीनहा तू, मिथ्यात्वको व्याधि एकं कहा तू।

न दूजा कोऊ और तोसो कहेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
नहीं धर्म कोऊ विना तुम हमारो, तिहुं लोकमें देखिहों देखिहारो।
न पायो प्रभु सा कोऊ सुद्धि लेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
मोह काल को है चवेना बनाई, कछू गोद लीन्हे कछू ले चवाई।
अहो पाद में जानि रक्षा कि टेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
भलो वा बुरो जो कछू हों तिहारो, जगन्नाथ दे साथ मो पै निहारो।
विना साथ तेरे न एको बनेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥
चहूं काल ज्यारी झरे झूठ पानी, नवैया हमारी महाबोझ यानी।
खवैया तुही नाथ मो पार खेवा, नमो जय हमें दीजिये पाद०॥

घत्ता ।

थुति माफ़िक हम करी महत यह विमलनाथ प्रभुकी जयमाल।
पढ़त सुनत मन वच तन नीके नसत दोष दुख ताके हाल॥
सुमति बढ़त नित घटत कुमति मम दुरत रहत दुशमन जो काल।
अघनाशि शुभ शर्म दिखावत करम न पावत जाकी चाल॥

सोरठा ।

विमलनाथ जगदीश, हरहु दुष्टता जगतकी।
तुम पद तर सुखदीश, सो करिये सब जगत पै॥

इत्याशीर्वाद ।

"ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण अर्घ्यं दीयते ।

श्री केशरियाजी (ऋषभदेव)की पूजा।

स्तुति।

श्री आदि जिनेश्वर साहिबारे, विनतडी अवधाररे सुगण नर॥ १॥
सुंदर रूप सो सोहामणुंरे, मुरत मोहन गाररे सुगण नर॥२॥
तुं त्रिभोवन देवतोरे दूरथकी आव्यो, वहिरे दीठे पातक जायरे सुगण नर॥३॥
भवनां दुःख सवि गयांरे, मो मन आनंद थायरे सुगण नर॥४॥
भव अनंता हुं भम्योरे, आव्यो तुम चरणेरे सुगण नर॥ ५॥
बालक जाणी आपजोरे, तुमपद निरवाणरे सुगण नर॥ ६॥
आदि शिखर निहालीयेरे, पूर्वाभिमुखे सोहेरे सुगण नर॥ ७॥
बावन देहरी सोहामणींरे, भवियणना मन मोहेरे सुगण नर॥८॥
नाभिराया कुल उपनोंरे, मारुदेवी मह लाररे सुगण नर॥९॥
वृषभ लांछन दीपतोरे, आयु लाख चोरासी उदाररे सुगण नर॥१०
धनुष पांचसें उचित पणेरे काया श्याम वर्ण मनोहाररे सुगण नर॥
नाटक भावना भावतांरे पाम्यो शिवपद नीरवाणरे सुगण नर॥१२
धुलेव नग्र मांहे प्रगट्योरे श्री केशरिया जिनदेवरे सुगण नर॥१३
रूपसेन शिष्य उचरेरे विजयकीर्ति गुण गायरे सुगण नर॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र धुलेव नगरस्य श्री केशरियाजी (ऋषभदेव) अत्रावतरावतरसंवौषट् आव्हाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव सन्निधीकरणं।

---

* विक्रम सं. १९६० में लिखे हुए एक अप्रवासे . . . (गुजरात) से संग्रहीत।

अष्टक ।

परम शीतल गगन संभव, रलिनरेणु विराजितं ।
रत्नमिश्रित शुद्ध हाटक कलश योजित वारिणां ॥
वृषभ लांछन, कनक वर्णित विघन कोटि विहंडनं ।
पूजोरे भविजन नाभिनंदन धुलेव नयर सुमंडणं ॥

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नयरे श्री केशरियानाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलय संभवतुहिनदिर्धित रुचिर केसर घर्षिणां ।
परिमलाद्भुत भ्रमर गुंजित तापवारन चंदनैः॥ वृषभ०॥

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नयरे केशरियानाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदनं नि० ।

कमल केतकि जाइ चंपक मालतीमचकुंदकैः ।
मदनबाण निवारणाय सुगंध शोभित पुष्पकैः ।वृ०॥

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नयरे श्री केशरियानाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

सलिल जन्म सुवाससवासित कमल जाति समुद्भवैः ।
सकल वर्जित मौलिकामलसरसतांदुल पुंजकैः॥ वृ० ॥

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नयरे श्री केशरियानाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

घृताब्धि पूरित सु घन मोदक सर्करादिक पूरितः ।
रसनतर्पणकार घेवर मिष्टान्न विविध चरुत्करैः ॥वृ०॥

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नयरे श्री केशरियानाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि०।

सुघनसार समुद्भवैरति दीपिताखिल दिङ्मुखैः।
भ्रमविमोह तमोविभेदन दक्ष सुंदर दीपकैः॥ वृ०॥

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नयरे श्री केशरियानाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि०।

असित पांडुर मलय दारु जजो च्छित्ते रज दाहकैः।
निज विभार्भर रक्तताखिल वादलैः बहु धूपकैः॥ वृ०

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नयरे श्री केशरियानाथ जिनेन्द्राय अष्ट-कर्म विध्वंशनाय धूपं नि०।

फणस दाडिम चोच मोच सदाफलैः सहकारकैः।
क्रमुक कर्कटि बीजपूरक नागरं गरु जंबीरकैः॥ वृ०॥

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नयरे श्री केशरियानाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०।

सलिल चंदन पुष्प तंदुल चरु सदीप सु धूपकैः।
फणस कुशाग्रस्वस्तिक धवल मंगल गानकैः॥

जनन सागर भविक तारक दुःखदावघनोपमं।
विजयकीर्ति सदा निसेवित धुलेव नयर निवासितं॥

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नयरे श्री केशरियानाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं नि०।

जयमाला ।

सुरेंद्र नागेंद्र नरेंद्र सिष्ठो, धुलेववासो जगदीश्वरीष्ठो ।
इक्ष्वाकुवंशो वरद वरिष्ठो, भक्तासु तो सो जयमाल ऐष्ठो ॥
नाभिनरेश्वर सुंदरततुजं, संतति-सुखकर सरजं मनुजं ।
धुलेव नयर निवास विराजं, आदि जिनेश्वर नमित सुराजं ॥१॥
पुण्य-पयोनिधि वर्धन चंद्रं, शोभित मोह महामयतेंद्रं ॥धु० ॥२॥
काश्यप गोत्रं गणधर नाथं, मानव दानव देव स नाथं ॥धु०॥३॥
जन्मपुरी विनता सुख वासं, माता मरुदेवी जगत्रासं ॥धु० ॥४॥
कांति कला परिपूरित गात्रं, वांछित दान सुपोसित पात्रं ॥धु०॥ ५
संकट कोटि विनाशन दक्षं, नासित रोग भयादिक यक्षं ॥धु०॥६॥
देश विदेशसे आवत लोकं, संघ चतुर्विध चर्णन नोकं ॥धु०॥७॥
धुलेवपुर किमभर कैलाशं, त्रिभुवन विश्रत नाम निवासं ॥धु०॥८
आदि जिनेंद्रं नादिमनंतं, संतत शिव सुरूप धरंतं ॥ धु० ॥९॥

घत्ता ।

श्री धूलेवपुराश्रितं त्रिभुवनं श्रेष्ठैर्नि सेव्यं मुदा ।
भक्ताप्रेक्षणगतं स्थापितरं काष्ठादि संघोदरं ॥
नीरादि प्रमुखाष्ट द्रव्यनिचयैर्दूर्वादधि स्वस्तिकैः ।
चर्चे श्रीविजयादिकीर्ति सततं लक्ष्मी स सेनातकं ॥

ॐ ह्रीं श्री धुलेव नगरे श्री केशरियानाथ जिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

लक्ष्मीकला कांतिरनंतसौख्यं।
सेनि चतुर्धाधिपचक्रिमुख्यं॥
राजा सुराद्यर्थमनंतरूपं।
धुलेव नयरे श्री वृषभो जिनेंद्रं॥
इत्याशीर्वादः।

श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ पूजा।

दोहा।

महुवा नगर विराजते, पार्श्वनाथ जिनराय।
विघ्नहरण मंगल करण, भव भव होउ सहाय॥

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः प्रतिस्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथाष्टकं॥

चंगा भरि झारी, सुंदर भारी, मीनाकारी सरस भरी।
तामें गंगाजल, भरि अति निर्मल, पूरितमनसे हाथ भरी॥
पूजो प्रभु पारस, देत महारस, विघ्नहरण जिन जग गाया।
कमठा मद मारण, नाग उधारण, संयम धारण वन पाया॥१॥

ॐ श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय, जन्म जरादि रोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर ले चन्दन, चरचत अंगन, विघ्नहरण तन सुख दाता।
श्रीजिनपद वंदन, दाह निकंदन, तपत हरण शीतल जाता ॥पू०

ॐ ह्रीं श्री महुवा नगर विराजित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथाय संसारताप विनाशाय गन्धं ।

सुखदास सुपेती, अखत सुहेती, कलश सु लेती पूज करो।
अखण्ड सु उज्वल, गुण अति निर्मल, देहि अखेपद वासधरो ॥

ॐ ह्रीं श्री महुवा नगर विराजित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं ।

चम्पक ले पूजो, अरु मचकुंदो, वास सुगंधो चुनि आनो।
बहु परिमल जाति, सुगंध सुपाती, मदन हरण तन सुख मानो ॥

ॐ ह्रीं श्री महुवा नगर विराजित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ।

घेवर ले साजे, खुरमा ताजे, सरस मनोहर अति श्याजे ।
कंचन भरि झारी, फेर रसाली, क्षुधा निशाली सुखयाजे ॥पूजो०

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहरणपार्श्वनाथाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ॥

कंचन ले दीपं, ज्योति अनूपम, वाति कपूरं जोय धरं ।
भ्रम ज्ञान उजारण, तिमिर निवारण, शिवमारग परकाशकरं ॥पू०

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहरणपार्श्वनाथाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ॥

कृष्णागुरु धूपं, धूप अनूपम सोवन घट ले जिन आगे।
खेवो भवितारं, कर्मकुठारं, छार उजारं, उड़ि भागे ॥पुजो०॥

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहरणपार्श्वनाथाय अष्टकर्म दहनाय धूपं ॥

श्रीफल नारंगी, खारक पुंगी, चोचमोच बहुभांति लिये।
जिन चरण चढ़ावो, भक्ति वढ़ावो, शिवफल पावो सूरि किये ॥

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथाय मोक्षफलप्राप्तये फलं ॥

जल गंध सु अक्षत, कुसुम चरुवर दीप धूप फल ले भारी।
यह अर्घ सुकीजे, जिनपद दीजे, "विद्याभूषण" सुखकारी ॥

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

जयमाला।

चन्द्रनाथं नमस्कृत्य, नत्वा च गुरुपादकम्।
पार्श्वनाथस्य जयमालां, वक्ष्ये प्राणि-प्रसौख्यप्रदाम् ॥

पद्धरी छन्द।

जय पार्श्व जिनेश्वर अकलरूप, जय इन्द्रचन्द्र फणि नमत भूप।
जय विश्वसेनके पुत्रसार, जय वामादेवि सुत धर्मकार ॥
जय नीलवर्ण वासायर काय, जय नवकर ऊंचो जिनन्दराय।
जय शत एक जिनवर तनु आय, जय खंडित क्रोध निमाल्यमाय॥
जय उग्रवंश उदियो सूर, जय कमठ मान तें कियो दूर।

जय भूत पिशाचा दूर त्रास, डाकिनि साकिनि आवे न पास ॥
जय चिन्तामणि तुम कल्पवृक्ष, जय मन वांछित फलदान दक्ष ।
जय नंत चतुष्टय शुक्लधार, जय "विद्याभूषण" नमत सार ॥

घत्ता ।

जय पारस देवं, सूरीकृत सेवं, नासिय जन्म जरा मरणम् ।
जय धर्म सुदाता, भव जल त्राता, विघ्नहरण सेवित चरणम् ॥

ॐ ह्रीं श्री महुवानगर विराजित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथाय पूर्णार्घम् ॥

कल्याण विजयं भद्रं, चिंतितार्थं मनोरथम् ।
पार्श्वं पूजा प्रसादेन, सर्व कामाथ सिद्ध्यति ॥

इत्याशीर्वाद ।

स्व० कविवर द्यानतरायजी कृत-

चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाणक्षेत्र पूजा ।

सोरठा ।

परम पूज्य चौवीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये ।
सिद्धभूमि निशदीस, मन वच तन पूजा करौं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र अवतर अवतर संवौषट् । ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् ।

अष्टक।

गीता छन्द।

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल, कनकझारीमें भरौं।
संसारपार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौं॥
सम्मेदगिरि गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकौं।
पूजों सदा चौवीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकौं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

केशर कपूर सुगंध चंदन, सलिल शीतल विस्तरौं।
भवतापको संताप मेटौ, जोर कर विनती करौं॥सं०॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति०।

मोतीसमान अखंड तंदुल, अमल आनंदधरि तरौं।
औगुन हरौ गुन करौ हमको, जोरकर विनती करौं॥स०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति०

शुभफूलरास सुवासवासित, खेद सब मनकी हरौं।
दुखधाम काम विनाश मेरो, जोरकर विनती करौं॥स०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

नेवज अनेकप्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।
यह भूखदूखन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौं॥स०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक प्रकाश उजास उज्जल, तिमिरसेती नहिं डरौं ।
संशयविमोहविभरम तमहर, जोरकर विनती करौं॥स०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ धूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरौं ।
सब करमपुंज जलाय दीजे, जोरकर विनती करौं॥ स०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बहु फल मंगाय चढाय उत्तम, चारगतिसों निरवरौं ।
निहचै मुकत फल देहु मोकौं, जोरकर विनती करौं॥स०

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगतमैं, जोरकर विनती करौं ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

सोरठा ।

श्री चौवीसजिनेश, गिरिकैलासादिक नमौं ।
तीरथमहाप्रदेश, महापुरुषनिरवाणतैं ॥ १ ॥

चौपाई १६ मात्रा ।

नमौं रिषभ कैलासपहारं । नेमिनाथ गिरनार निहारं ॥
वासुपूज्य चम्पापुर वंदौं । सनमति पावापुर अभिनंदौं ॥ २ ॥

वंदौं अजित अजितपददाता। वंदौं संभवभवदुखघाता॥
वंदौं अभिनन्दन गणनायक। वंदौं सुमति सुमतिके दायक॥३
वंदौं पदम मुकतिपदमाधर। वंदौं सुपार्श्व आशपासा हर॥
वंदौं चन्द्रप्रभ प्रभु चन्दा। वंदौं सुविधि सुविधिनिधिकंदा॥४
वंदौं शीतल अघतपशीतल। वंदौं श्रियांस श्रियांस महीतल॥
वंदौं विमल विमलउपयोगी। वंदौं अनंत अनंतसुभोगी॥५॥
वंदौं धर्म धर्मविसतारा। वंदौं शांति शांतमनधारा॥
वंदौं कुंथु कुंथुरखवालं। वंदौं अरि अरिहर गुनमालं॥६॥
वंदौं मल्लि कामपल चूरन। वंदौं मुनिसुव्रत व्रतपूरन॥
वंदौं नमि जिन नमित सुरासुर। वंदौं पास पासभ्रमजगहर॥७
बीसौं सिद्ध भूमि जा ऊपर। शिखरसम्मेद महागिरि भूपर॥
एक बार वंदै जो कोई। ताहि नरकपशुगति नहिं होई॥८॥
नरगतिनृप सुर शक्र कहावे। तिहुंजग भोग भोगि शिव पावे॥
विघनविनाशक मंगलकारी। गुणविलास वंदें नरनारी॥९॥

छंद घत्ता।

जो तीरथ जावै पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगति करै।
ताको जस कहिये संपति लहिये गिरिके गुणको बुध उचरै॥१०

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व०।

कविवर भैया भगवतीदासजी रचित—

निर्वाणकाण्ड भाषा।

दोहा।

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिर नाय।
कहूं कांड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय ॥ १ ॥

चौपाई १५ मात्रा।

अष्टापदआदीसुरस्वामि। वासुपूज्य चंपापुरि नामि। नेमिनाथस्वामी गिरनार। वंदौं भावभगति उर धार ॥२॥ चरम तीर्थंकर चरमशरीर। पावापुरि स्वामी महावीर॥ शिखरसमेद जिनेसुर वीस। भावसहित वंदौं जगदीस ॥३॥ वरदतराय रु इन्द्र मुनिंद। सायरदत्त आदि गुणवृंद॥ नगरतारवर मुनि उठकोडि[1]। वंदौं भावसहित कर जोडि ॥४॥ श्रीगिरनारशिखर विख्यात॥ कोडि बहत्तर अरु सौ सात॥ संबु प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय। अनिरुधआदि नमूं तसु पाय ॥५॥ रामचद्रके सुत द्वै वीर। लाडनरिंद आदि गुणधीर॥ पांच कोडि मुनि मुक्तिमझार। पावागिरि वंदौं निरधार ॥६॥ पांडव तीन द्रविड राजान। आठकोडि मुनि मुकति पयान॥ श्रीशत्रुंजयगिरिके सीस। भावसहित वंदौं निश दीस ॥७॥

1-साढ़े तीन कोड़।

जे बलिभद्र मुकतिमें गये। आठकोड़ि मुनि औरहि भये ॥
श्रीगजपंथशिखर सुविशाल। तिनके चरण नमूं तिहुं काल ॥८॥
राम हनू सुग्रीव सुडील। गवगवाख्य नील महानील ॥
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान। तुंगीगिरि वंदों धरि ध्यान ॥९॥
नंग अनंग कुमार सुजान। पंचकोड़ि अरु अर्ध प्रमाण ॥
मुक्ति गये सिहुनागिरशीस। ते वंदों त्रिभुवनपति ईस ॥१०॥
रावणके सुत आदि कुमार। मुक्त गये रेवातट सार ॥
कोड़ि पंच अरु लाख पचास। ते वंदों धरि परम हुलास ॥११॥
रेवानदी सिद्धवरकूट। पश्चिम दिशा देह जहँ छूट ॥
द्वै चक्री दश कामकुमार। ऊठकोड़ि वंदों भवपार ॥ १२ ॥
बड़वानी बड़नगर सुचंग। दक्षिण दिश गिरि चूल उतंग ॥
इंद्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण। ते वंदों भवसायर तर्ण ॥१३॥
सुवरणभद्र आदि मुनि चार। पावागिरिवर शिखरमझार ॥
चेलना नदी तीरके पास। मुक्ति गये वंदों नित तास ॥१४॥
फलहोड़ी बड़ गाम अनूप। पश्चिमदिशा द्रोणगिरिरूप ॥
गुरुदत्तादि मुनीसुर जहां। मुक्ति गये वंदों नित तहं ॥१५॥
बाल महाबाल मुनि दोय। नागकुमार मिले त्रय हो ॥
श्रीअष्टापद मुक्तिमझार। ते वंदों नित सुरत संभार ॥१६॥
अचलापुरकी दिश ईशान। तहां मेढ़गिरि नाम प्रधान ॥
साढ़ेतीन कोड़ि मुनिराय। तिनके चरन नमूं चित लाय ॥१७॥
वंशस्थल वनके ढिग होय। पश्चिमदिशा कुंथुगिरि सोय ॥
कुलभूषण देशभूषण नाम। तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥१८॥
जसरथराजाके सुत कहे। देश कलिंग पांचसौ लहे ॥

कोटि शिला मुनि कोटि प्रमान । वंदन करूं जोर जुगपान ॥१९॥
समवसरण श्री पार्श्वजिनंद । रेसंदीगिरि नयनानन्द ॥
वरदत्तादि पंच ऋषिराज । ते वंदौं नित धरमजिहाज ॥२०॥
तीन लोकके तीरथ जहाँ । नितप्रति वंदन कीजे तहाँ ॥
मन वच कायसहित सिरनाय । वंदन करहिं भविक गुण गाय २१
संवत सतरहसौ इकताल । अश्विन सुदी दशमी सुविशाल ॥
'भैया' वंदन करहि त्रिकाल । जय निर्वाणकांड गुणमाल ॥२२॥

इति निर्वाण कांड भाषा ।

हकीम हजारीलालजी कृत—

श्री नर्मदातटस्थ सिद्ध जिन-पूजा ।

दोहा ।

स्त्रोत स्वाति सोमोद्भवा, युग्म कूल ऋषि जेह ।
पहुंचे वसु विश्वंभरा, त्रिविधि थाप धर नेह ॥

ॐ ह्रीं नर्मदानदी युगमतट, सिद्धजिना अत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं ।

अथ अष्टक ।

छंद गीतिका ।

क्षीराब्धितें ले सर्वतोमुख, पात्र अष्टापद भरूं ।
त्रसा आमय हरण कारण, प्रभु चरण अग्रे धरूं ॥
जे धुनीमें कल कन्यका तट, भये सिद्ध अनंतजू ।
मैं पूजहूं मन वचन तनकर, अष्ट कर्म निकंद जू ॥

ॐ ह्रीं नर्मदानदी युग्मतटसिद्धजिनाय जलं निर्वपामीति० ।

भद्र श्री हिम वालुका घिस, भर कटोरी गंधसों।
तुम पाद अर्चों शुद्ध मनसे, भवाताप निकन्दसों ॥जे धुनि॥

ॐ ह्रीं नर्मदानदी युग्मतटसिद्धजिनाय चन्दनं नि० ।

खण्डवर्जित विमल तंदुल, शुक्ति उसर समान हैं।
जिनपाद पूजों भावसों मैं, अखयपद चितठान हैं ॥जे धुनि॥

ॐ ह्रीं नर्मदानदी युग्मतटसिद्धजिनाय अक्षतं निर्वपामीति०

हेम पुष्पक नलिन भूपदि, मालती रक्तक जया।
रुक्मको भर थार चरचों, भूरिदद्दर्पक गया ॥ जे धुनि ॥

ॐ ह्रीं नर्मदानदी युग्मतटसिद्धजिनाय पुष्पं नि० ।

फेनी गिदोडा आज्य पूरित, शर्करा रस भूरिजी।
अग्र भेटत क्षुधा नासे, मिटे कलमष क्रूरजी ॥जे धुनि॥

ॐ ह्रीं नर्मदानदी युग्मतटसिद्धजिनाय नैवेद्यं नि० ।

रत्न वर घनसार वाती, जोय सर्पिस लायके।
ज्ञान ज्योति प्रकाश कारण, पूज सन्मुख आयके ॥जे धुनि॥

ॐ ह्रीं नर्मदानदी युग्मतटसिद्धजिनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा ।

संकोच जायक कृमिजपिंडक, तनुज मोचा चंदनं।
इन आदि दशधा धूपशुष्मा, अष्टकर्महुताशनं ॥ जे धुनि ॥

ॐ ह्रीं नर्मदानदी युग्मतटसिद्धजिनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलपूर त्रिपुटा चन्द्रवाला, लागली जमीरजी।
भर थार तुम ढिंग धारहो, द्यो धरा अष्टमधीरजी ॥जे धुनि॥

ॐ ह्रीं नर्मदानदी युग्मतटसिद्धजिनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कलम मलयज अक्ष सुमनस, चरु दीप सुगन्धजी ।
फल आदि द्रव्य पूजों, कटैं भव वसु फंदजी ॥ जे धुनि ॥
ॐ ह्रीं नर्मदानदी युग्मतटसिद्धजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द ।

जय गुणगणमंडित त्रिभुवन सुन्दर जजत पुरंदर धर्मधरा।
श्रीमौद्भवतीरा ध्यान गहीरा विधि वसु चूरा मुक्तिधरा ॥

दोहा ।

श्रीमत सिद्ध अनंत ते, होय गये गुणमाल ।
तिनकी वर जयमालका, गाय हजारीलाल ॥

छंद विजयानंदसेठकी चालमें ।

जय जय जय अपगा अमृत पूर है ।
दोहू तट विटपिन छाया भूरि हैं ॥
षट् ऋतुके शाखिन प्रसून सुहावने ।
पिक कीर सु शब्द करत मन भावने ॥
तहां शंखो ऋषनि कुरंव विहार है ।
द्वादश विधि भावना भाव चितार हैं ॥
वसुविंशति मूल गुणोंको सम्हारते ।
षट दुगने उग्र २ तप धारते ॥
एकादश दुगुन परीषह जे सहै ।
तहां कंपें मेरु अचल सम थिर रहैं ॥
केई मुनिको चोंसठ ऋद्धि फुरी तहां।
मति श्रुति सो अवधि ज्ञान धारी जहां ॥

कोऊ मुनिको, ज्ञान चतुर्थ पायके ।
दशमत्रय गुण स्थानको धायके ॥
लह केवल गंध कुटी रचना भई ।
तहां इंद्र आय प्रदक्षिणा त्रय किई ॥
कीनी थुति गद्य पद्य त्रय योगतें ।
कर नृत्य सु तिष्ठे थान मनोगतें ॥
जिन मुखतें दिव्यध्वनि अनक्षरी ।
झेली गणधर द्वादश शाला विस्तरी ॥
जति श्रावक द्विविध धर्म उपदेशतें ।
सुन भव्य सु प्रमुदित भये विशेषतें ॥
गति पंचम पाई चतुर्दश थानतें ।
भये तृप्त सु आतम सुख रस पानतें ॥
यह जान सु प्रणमूं रेवा कूल कूं ।
मेटो अब मेरी मिथ्या भूल कूं ॥
शरणागत सहस्रलाल पद आयके ।
मुझे तारो भव भ्रम भार मिटायके ॥
ॐ ह्रीं नर्मदानदीयुग्मतटसिद्धजिनाय पूर्णार्घं निर्वपामीति० ।

दोहा ।

नदी नर्मदा तीरकूं, जो भवि पूजे नित्त ।
इंद्र चन्द्र धरणेंद्र हो, पावे शिवसुख वित्त ॥

इति आशीर्वादः ।

श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथ पूजा।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य।
द्विष्ठान्तेनो ढंकित स्थापनस्य॥
स्वं निर्नेक्तुं ते वषट्कार जाग्रत्।
सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टिम्॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथ जिनेंद्र! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव२ सन्निधीकरणम्।

विमल दुग्ध पयोनिधि वारिणा, कनककुंभ भृतेन सुगंधिना।
स्तवनिधीश्वर पार्श्व जिनेश्वरं, परियजे शिव सौख्यकरं परम्॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथजिनेंद्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परिमलान्वित कुंकुम चन्दनैः।
भवभृतां भवताप विनाशनैः॥ स्तवनि० ॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप वि० चंदनं।

सुघन शालि सुतन्दुल पुंजकै-
-रखिल सौख्य महाफलदायकैः॥ स्तवनि० ॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपद प्रा० अक्षतं।

विकशिताब्ज सुचंपक केतकी।
प्रवर पुष्प सुगंधि सुमालया॥ स्तवनि० ॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम्।

वटक मंडक लड्डुक पूरिकैः ।
घृतवरैः प्रमुखैश्चरूभिर्वरैः ॥ स्तवनि० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।

मणि तमोत्तम कर्पूर दीपकैः ।
कुमुत्त मोदन मोहन नाशनैः ॥ स्तवनि० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं ।

मलय पर्वत जात सु धूपकैः ।
गगन सिंधु सुधूप घनोपमैः ॥ स्तवनि० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं ।

फणस दाड़िम चोच सु पूगकैः ।
परम पक्व सु द्राक्ष फलोत्तमैः ॥ स्तवनि० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं ।

वार्गंधाक्षत पुष्प चारु विशदैः दीपैस्तथा धूपकैः ।
पक्व सार फलैश्च विसरदितैरर्घैजिनेन्द्रं यजे ॥
श्री भट्टारक सोमसेन यतिपं श्री सेन संघाग्रणी ।
पायात्पार्श्व जिनेश्वरो गुणनिधिं त्रासस्त्रिलोकीपते ॥

ॐ ह्रीं श्री स्तवनिधि पार्श्वनाथजिनेंद्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ।

जयमाला ।

श्रीमद्देव दिनेन्द्र चन्द्र विनुतं, ज्ञानाब्ज सद्भास्करं ।
संसारार्णव पारगं गतभयं घोरोपसर्गापहम् ॥

भास्वन्मौलि भुजंग भूषण धरं विश्वेश्वरं शंकरं।
तं वंदेऽखिल नागनायक नुतं सद्धर्म संसिद्धये ॥१॥

वरबोध निधानमनन्तबलं। गत जन्म जरामय मोहमलं ॥
प्रयजे तव संपति पार्श्ववरं। सुख संपति सागर चंद्रभरं ॥२॥

सुर मानव दानव पादनुतं।
गुण मंडितमद्भुत बोधयुतं ॥ प्रयजे० ॥ ३ ॥

सुखदायक नायक नागधरं।
श्रुतसागर नागर भेदभरं ॥ प्रयजे० ॥ ४ ॥

शुचि भव्य मनोंबुज भानु नवं।
भव कानन दाहन घोर दवं ॥ प्रयजे० ॥ ५ ॥

हयसेन सुतं भुवनेशनुतम्।
हरि देहज दारुण दंभ गतं ॥ प्रयजे० ॥ ६ ॥

वसु मंडित प्राति सुहार्यवरं।
विग संकर संस्तुत पादभरं ॥ प्रयजे० ॥ ७ ॥

कमनीय कलाधर कण्ठनिभं।
रुचिराष घनं रमणीय प्रभं ॥ प्रयजे० ॥ ८ ॥

समवसृति योजन चन्द्रपदं।
हत भव्य जनाश्रित भावगदं ॥ प्रयजे० ॥ ९ ॥

वदनाबुज निर्गत वाग्विमलं।
वरदायक मोक्षतरु प्रफलं ॥ प्रयजे० ॥ १० ॥

जलाद्यष्ट द्रव्येण नित्यं विशुद्ध्या।
सुरैः पूजितोपि त्वहं स्वल्पबुद्ध्या ॥

यजेऽहं सदा गंगदासस्य नाथम् ।
जगज्जन्तु सच्चातके नव्य पाथम् ॥
ॐ ह्रीं श्री स्तवननिधि पार्श्वनाथ जिनेंद्राय महार्घं नि० ।
इत्याशीर्वादः ।

श्री अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ पूजा ।

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य ।
द्विष्टान्तेनो द्दङ्कित स्थापनस्य ॥
स्वं निर्नक्तुं ते वषट्कार जाग्रत् ।
सान्निध्यस्य भारभेयाहृधेष्ठिम् ॥

ॐ ह्रीं श्री अंतरीक्षपार्श्वनाथ जिनेंद्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव२ सन्निधीकरणम् ।

अष्टक ।

पद्म सौन्य मोक्षतीर्थ दिव्य नीर धारया ।
क्षीरवाज्ज पंकताञ्ज गन्ध सार सारया ॥
वज्जित चक्रि चक्रि चक्र चर्चितं समर्चये ।
श्रीमदन्तरीक्ष पार्श्वनाथ पाद पंकजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।

हृद्य गन्ध गन्ध सार सद्रसेन चारुणा ।
पुष्ट चक्रकेशरौघ दिव्य देव दारुणा ॥ वज्जि० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेंद्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं ।

हारतार सत्तुषार चन्द्र पात्र पाण्डुरैः ।
दिव्य गंधि वन्य शालि संभवैः सुतन्दुलैः ॥वज्रि०॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं ।

कैरवाब्ज कर्णिकार सेंदुवार चंपकैः ।
जाति पुष्प कुंद्र पुष्प पुंडरीक हल्लकैः ॥ वज्रि० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेंद्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

दिव्य भव्य हव्य गव्य नव्य भक्ति भूपकैः ।
पंच रत्न संपिनद्ध हेमपात्र संस्थितैः ॥ वज्रि० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेंद्राय क्षुधारोग वि० नैवेद्यं ।

दुर्निवारकांधकार नाशकै रनल्पकैः ।
ज्योति रंग कल्पवृक्ष संनिभैः सुदीपकैः ॥ वज्रि० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ जिनेंद्राय मोहांधकार वि० दीपं ।

वार्दलाभ धूपधूम्र नासिभै रनन्तगैः ।
यक्ष धूप काष्ठ काक कुण्ड धूप संभवैः ॥ वज्रि० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं ।

नालिकेर दाड़िमाम्र मातुलिंग माधवैः ।
घ्राण नेत्र चित्त तोष दायकैः सुनिर्मलैः ॥ वज्रि० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं ।

श्रीभूषण गुतम काष्ठसंघ, योगीश्वराभ्यर्चित पाद पीठ ।
श्री पार्श्वनाथः सततं पुनातु, समर्चितो योऽखिल चन्द्रकीर्तिः ॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं ।

जयमाला ।

धीरं रुद्रस्योपसर्ग प्रवरण गुणयुतं कर्मवल्ली कुठारं ।
लोकालोक प्रकाशं नवनय कलितं प्रातिहार्याष्ट युक्तम् ॥
मज्ञं तं. संसृताब्धौ सकल तनुभृतां नौ समं विश्ववन्द्यं ।
श्रीमन्तं शुद्ध बोधं सुरपति नमितं पार्श्व देवं नमामि ॥१॥

अश्वसेन कुल जलज दिनेशं ।
नील वर्ण वपुषं भुवनेशम् ॥
सुरपति नरपति वंदित चरणं ।
वंदे पार्श्वजिनं सुखकरणम् ॥ २ ॥
वाणारसि पुरवर संजातं ।
वंश विशद इक्ष्वाकु विख्यातम् ॥ सुरपति० ॥ ३ ॥
पद्मावति सेवित पद कमलं ।
वामादेवि तनुज मति विमलम् ॥ सुरपति० ॥ ४ ॥
संसारांबुधि तरण सु नावं ।
व्यसन मान वन दहन सुदावं ॥ सुरपति० ॥ ५ ॥
ग्रह डाकिनि व्यन्तर कृत नाशम् ।
अष्ट महाभयदर्शित त्रासम् ॥ सुरपति० ॥ ६ ॥
मदन विमान विहंडण सूरं ।
शुक्ल ध्यान प्रगटित समपूरम् ॥ सुरपति० ॥ ७ ॥

मुक्ति वधू वशकरण सुयंत्रम् ।
कर्म महा विष नाशन यत्रम् ॥ सुरपति० ॥ ८ ॥
पुण्य पयोनिधि वर्धन चन्द्रम् ।
केवल दर्शन सतत त्रिवंद्रं ॥ सुरपति० ॥ ९ ॥
छत्र त्रय चामरगण सहितं ।
अष्टादश दोषैः परि रहितम्॥ सुरपति० ॥ १० ॥
श्री भूषण वधु सुत दातारं ।
तत्व कथन दर्शित भवपारम् ॥ सुरपति० ॥ ११ ॥
ब्रह्मचर्य जित मार विकारं ।
सुरवर मुनिवर कृत जयकारं ॥ सुरपति० ॥ १२ ॥
कमठ मान मर्दन बलवन्तं ।
सिद्धालय संस्थित मतिसन्तं ॥ सुरपति० ॥ १३ ॥
समवशरण शोभाव्रज युक्तं ।
चिदानंद परमपद युक्तम् ॥ सुरपति० ॥ १४ ॥

घत्ता ।

श्री भूषणं नाम परं पवित्रम्। श्री पार्श्वनाथं धरणेंद्र पूज्यम् ॥
श्री ज्ञान पाथोनिधि पूज्यपादम्। स्तुवे सदा मोक्षपदार्थसिद्ध्यैः॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेंद्राय महाऽर्घम् ।

दशावतारो भुवनैक मल्लो। गोपांगना सेवित पादपद्मम् ॥
श्री पार्श्वनाथः सततं पुनातु। वाणारसी पत्तन मण्डनं च ॥

इत्याशीर्वादः ।

कुलपाक तीर्थ [माणिक्यस्वामी] की पूजा।

विशुद्ध बुद्धिक पयोधि चंद्रम्। प्रबोध मूर्त विमलं जिनेन्द्रम्॥
अनन्त सौख्यक महासमुद्रम्। महामि माणिक्य जिनं वितंद्रम्॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्य स्वामिन् अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक।

महासुरेन्द्रमाकरं स्वरूपनरभास्करं।
अनन्तबोध पूजकं त्रिलोकधाम रंजकं
महामुनिंद्र पंक्ति जन्तो कुमोद खंडितम्।
महामि माणिकेश्वरं महासुधिमसागरम्॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

सुदेव रूपकं वरं सु विष्णु रूपकं परं।
परं विभु प्रशंकरं विशुद्ध चित्त संवरम्॥
सुकुंकुमादिमिश्रितैः सुगन्ध सार सुश्रितैः।
॥ महामि० ॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने संसारताप विनाशनायं चन्दनं।

स्वभाव भाववेदकं परादिभावं नोदकम्।
महाव्रतादिदायकं सुगंधि शालितन्दुलैः॥
रखण्डपुंज मंडकैः शशि प्रभैः मनोज्ञकैः।
॥ महामि० ॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं ।

अनन्त पंडितेश्वरं, महामुनीन्द्रमीश्वरं ।
गुणौघमादि देवकं, महारूपेन्द्र देवकम् ॥
सुमालती वसन्तकैः, सुकुंज पद्म पुष्पकैः ।
॥ महामि० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं ॥

विशुद्ध गन्ध राजकम्, पुसाच राम भासकम् ।
फलैंट मार त्रासकम्, दया प्रदम्म भासकम् ॥
सुसार फेणि मण्डकैः, सुमोदकैः प्रखण्डकैः ।
॥ महामि० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।

त्रैलोक हर्म्य दीपकम्, सु शुद्ध ध्यान दीपकम् ।
कलंक पुंज दाहकम्, सु मुक्ति नारि वाहकम् ॥
सुपंच रत्न दीपकैः सुहेम गर्भ दीपकैः ।
॥ महामि० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने मोहांधकर विनाशनाय दीपं ।

कुकर्म दारु सद्भुतं, महा भवावलिद्भुतं ।
कुबोध धूम वातकम्, कुदेव भाव सातकं ॥
कलंब धूप चन्दनैः दशांग रक्त चन्दनैः ।
॥ महामि० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं ।

सुभोग भूमि भागदं, सो नाक सौख्य सद्धिदं

सु चक्रवर्ति भूपदं, महाफल प्रभुपदम्।
रसाल पुंग चोचकैः, अखोड़ स्वादु मोचकैः ॥
॥ महामि० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने मोक्षफल प्राप्तये फल।

प्रयघ्र गन्ध तन्दुलै र्लतातमोदिकादिभिः।
महाप्रदीप धूपकैः फलोत्तमै र्जिनोत्तमम्॥
महा भयादि चन्दकं दया प्रनंद्यनन्द्रकम्।
॥ महामि० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं।

जयमाला।

कुलुपाख्य जिनेन्द्रं, तिहुयणचन्द्रं, मुनिजननन्दं जग शरणम्।
केवल गुण सिद्धं, मंगल सिद्धं, धर्मसु सिद्धं भव हरणम्॥१॥
माणिक जिनदेव मुनिंद पूजं, माणिक जिनदेव सुबोह सुज्झं।
माणिक्र जिनदेव कुपाप हरं॥ २ ॥
माणिक जिनदेव कुमार मारं, माणिक जिनदेव कुबुद्धि दारं।
माणिक जिनदेव सुबुद्धि मारं, माणिक जिनदेव सुलब्ध भारं॥३॥
माणिक जिनदेव नामे परं सुखं।
माणिक्र जिन नाम इन लहइ दुखं॥
माणिक जिन नामे धर्म होई।
माणिक जिन नामे सुगुण लोई॥ ४ ॥

माणिक जिन नामे वासुदेवं ।
माणिक जिन नामे राम देवं ॥
माणिक जिन नामे चक्र द्वारं ।
माणिक जिन नामे तीर्थ सारं ॥ ५ ॥
माणिक जिन नामे काम रूपं ।
माणिक जिन नामे सेवे भूपं ॥
माणिक जिन नामे इन्द्र भानं ।
माणिक जिन नामे नवः निधानं ॥ ६ ॥
माणिक जिन नामे नारि सारं ।
माणिक जिन नामे पुत्र सारं ॥
माणिक जिन नामे जलधि पारं ।
माणिक जिन नामे सर्प हारं ॥ ७ ॥
माणिक जिन नामे अग्नि शीतं ।
माणिक जिन नामे वैरी मीतं ॥
माणिक जिन नामे सकल रिद्धि ।
माणिक जिन नामे परम सिद्धि ॥ ८ ॥

'घत्ता'।

श्री विद्यानन्दं, मल्लि मुनिंदं, लच्छि चन्द दया चन्द्रं ।
सिरिसुदयानन्दं, परम जिनन्दं सुमई सागर वंदे संदं ॥

ॐ ह्रीं श्री माणिक्यस्वामिने महार्घं० निर्वपामीति स्वाहा ।

इत्याशीर्वादः ।

कवि हजारीलालजी कृत—

सप्तऋषि पूजा ।

छप्पय ।

दुविधि परिग्रह त्याग, पाय यति-पद तुम निरमल ।
तीन रतन करि जतन, जीन रिपु मोह महाबल ॥
श्री नंदराय पितु मात, धारणी सुन्दर नन्दन ।
हो स्वामी इत थाप, करूं मैं पुनि पुनि वन्दन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तऋषीश्वराः अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, ॐ ह्रीं सप्तऋषीश्वराः अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्थापनं, ॐ ह्रीं सप्त-ऋषीश्वराः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अष्टक ।

हिमवन गिर सरिता वार, सुवरण भृंग भरा ।
तुम चरण तले त्रय धार, रोग त्रषादि हरा ॥
जय सप्तऋषीश्वर राय, ऋद्धि अनेक धरी ।
तिष्ठ मथुरा वन जाय, नासे रोग मरी ॥

ॐ ह्रीं सप्तऋषिभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं ।

कदली सुत संग मिलाय, कुमकुम संग घसो ।
मुनि अग्र धरो गुण गाय, विघन समूह नसो ॥जय सप्त०॥

ॐ ह्रीं सप्तऋषिभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं ।

मुक्ता इन्दु उनहार, अक्षत पुंज करो ।
प्रभु देउ मुक्ति पद सार, दुख दालिद्र हरो ॥जय सप्त०

ॐ ह्रीं सप्तऋषिभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं ।

ले सुमन सुगंध सुवास, सुमननको धारे ।
भर थाल धरूं तुम पास, मनमथ जात टरे ॥जय सप्त०॥

ॐ ह्रीं सप्तऋषिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

घृत पक्व शर्करा पूर, खाजे तुरत बने ।
थारे हम निकट हजूर, आकुलता जु हरे ॥जय सप्त॥
ॐ ह्रीं सप्तऋषिभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।

रतनन मय दीपक लेय, आरति तुम आगे ।
जिन केवल ज्ञान सो देय, आरत सब भागे ॥जय सप्त॥
ॐ ह्रीं सप्तऋषिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपम् ।

कृष्णागरु चन्दन लाय, धूप दशांग करी ।
खेऊँ धूपायन माहि, जारत कर्म अरी ॥जय सप्त०॥
ॐ ह्रीं सप्तऋषिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं ।

फल कमरख आम्र अनार, स्वादिक श्रेष्ठ घने ।
मैं पूजूं शिव सुख सार, पूजत पाप हने ॥जय सप्त०॥
ॐ ह्रीं सप्तऋषिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ।

उत्कृष्ट द्रव्य ले अष्ट, आठों अंग नमा ।
दो अष्टम क्षिति सुख श्रेष्ठ, आठों कर्म गमा ॥
जय सप्त ऋषीश्वर राय, ऋद्धि अनेक धरी ।
तिष्ठे मथुरा वन जाय, नासे रोग मरी ॥
ॐ ह्रीं सप्तऋषिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं ।

प्रत्येक अर्घ ।

सुरमन्यू मुनिराय, सुर सुमरें तिनकूं सदा ।
जजों चरण मन लाय, नित प्रति अर्घ चढ़ाइके ॥१॥
ॐ ह्रीं सुरमन्यु ऋषये अर्घं ॥ १ ॥

श्रीमन्यू मुनिराय, श्रीकर्ता तसु दास घर ।

पूजत विघन पलाय, नित प्रति अर्घ चढ़ाइके ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये अर्घं ॥२॥

श्री निश्चय ऋषिराय, भजत मिलत चिंतत अरथ ।
पूजत वंदत पाय, नितप्रति अर्घ चढ़ाइके ॥
ॐ ह्रीं श्रीनिश्चय ऋषये अर्घं ॥३॥

सब सुन्दर शिवराय, सुन्दर मुक्ति सु दीजिये ।
पूजत दालिद्र जाय, नितप्रति अर्घ चढ़ाइके ॥
ॐ ह्रीं सर्व सुन्दर ऋषये अर्घम् ॥४॥

जयवाणे ऋषिराय, पाई जय वसु कर्मते ।
पूजों मन वच काय, नितप्रति अर्घ चढ़ाइके ॥
ॐ ह्रीं श्री जयवान ऋषये अर्घम् ॥ ५ ॥

विनय करूं मन लाय, विनयलाल मुनिरायकों ।
पूजत गुन फलपाय, नित प्रति अर्घ चढ़ाइके ॥
ॐ ह्रीं श्री विनयलाल मुनीन्द्राय अर्घं ॥ ६ ॥

वैर भाव मिट जाय, स्वयंमित्र ऋषिके लखे ।
हर हरि प्रीति उपाय, नितप्रति अर्घ चढ़ाइके ॥
ॐ ह्रीं स्वयंमित्र ऋषये अर्घम् ॥ ७ ॥

छप्पय ।

प्रभु पूरन अर्घ बनाय, तुम सन्मुख कर धर लाया ।
मैं पुजूं हर्षाय, दुख दालिद्र दूर नसाया ॥
जिन पूजा नाहिं रचाई, तिन वृथा जन्म गमाई ।
जे पूजे अष्ट प्रकारा, तिनका धन भाग निहारा ॥
ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो अर्घम् ।

जयमाला ।

जय जय सुख सागर, सुयश उजागर, बोध दिवाकर उदय करा । शिव-मग परकाशक, भ्रमतम नाशक, भविजन मन आनन्द धरा ॥ ६ ॥

पद्धड़ी छन्द ।

जय सुरमन्यू सुर करत सेव । जय श्रीमन्यू सुख दे अभेव । जय श्रीनिश्चय श्री करहु पूर । जय सर्वसुंदर सुंदर सो सूर ॥ १ ॥ जयवान विजय कीनो अनिष्ट । जय विनस्लाल विनवे सो श्रेष्ठ ॥ जय स्वयंमित्र मित्रं धरंत । सव जीव विरोध सदा हरंत ॥२॥ जय द्वादश भावन भाव धार। जय वारा विधि तप तपत सार ॥ जय तेरह विधि चारित्र लीन । जय वीस आठ गुण धर प्रवीण ॥ ३ ॥ जय उत्तर गुण चौरासी लक्ष । पालें मुनीश सर्वांग दक्ष ॥ जय वुद्धि ऋद्धि प्रज्ञा प्रधान । जय सर्वौषधि विक्रिये जान ॥ ४ ॥ अज्ञान महावल काम रूप। जय दीप्त तप्त महिमा अनूप ॥ इन आदि और अनन्त जेय । धारे मुनीश चित शांति देय ॥५॥ जय कर विहार मथुरा पधार । मग वीच एक वटवृक्ष सार ॥ तिस तले ध्यान धार्यो अडोल। सो आतम रस पीवत अमोल ॥६॥ चमरेन्द्र भयंकर मरी भूर। फैलाई नग्र धर भाव क्रूर॥ घर घर दालिद्र दुरभिक्ष कीन । तव लोक भये आकुलित दीन ॥ ७ ॥ तव आप ऋद्धि तपके प्रभाव । सव दूर भये आकुलित भाव ॥ षट ऋतुमय तरु रहे लूम लूम ।जय कुसुम

वेल रहे झूम झूम ॥ ८ ॥ सर वापी भये जल पूर पूर । धन धान्य भये घर भूर भूर ॥ तुम लख प्रभाव भव सर्व सर्व । पूजें वसु विधि ले दर्व दर्व ॥ ९ ॥ धर्मोपदेश दीनों मुनीश । द्वय भेद कहे श्रावक यतीश ॥ तब भव्य श्रवण मन धार धार । करजोड़ भाल नमों वार वार ॥ १० ॥ मुनिसुव्रत स्वामीके सुवार । भावना अंग बाढ्यो अपार ॥ हम जाचत हैं तुमको दिनेश । यह आधि व्याधि दुख हरो हमेश ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं सप्तऋषीश्वरेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सवैया ।

सप्त ऋषीसुरके पदपंकज, जो पूजे भवि मन वच काय ।
जनम जनमके पातिक जाके, तत्क्षण तजके जांय पलाय ॥
मन वांछित सुख पावे सो नर, नाचे भाव भक्ति अति लाय ।
ताते लाल " हजारी " वन्दे, पाप निकन्दे शिवपुर जाय ॥

इत्याशीर्वादः ।

शान्तिपाठ भाषा ।

चौपाई ।

शांतिनाथमुख शशि उनहारी । शीलगुणव्रतसंजमधारी ॥ लखन एकसौ आठ विराजें । निरखत नयन कमलदल लाजें ॥ १ ॥ पंचमचक्रवर्तिपदधारी । सोलम तीर्थंकर सुखकारी ॥ इन्द्रनरेन्द्रपूज्य जिननायक । नमों शांतिहित शांतिविधायक ॥ २ ॥ दिव्य विटप पहुपनकी वरसा । दुंदुंभि आसन वाणी सरसा ॥ छत्र चमर भामण्डल भारी । ये तुव प्रातिहार्य मनहारी

॥ ३ ॥ शांति जिनेश शांति सुखदाई । जगतपूज्य पूजौं सिर नाई ॥ परमशांति दीजे हम सबको । पढ़ैं तिन्हैं पुनि चार संघको ॥ ४ ॥

वसन्ततिलका ।

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके ।
इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ॥
सो शांतिनाथ वरवंशजगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रा ।

संपूजकोंको प्रतिपालकोंको, यतीनको औ यतिनायकोंको ।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले, कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे ॥६

स्रग्धरा ।

होवे सारी प्रजाको सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा ।
होवे वर्षा समैपै तिलभर न रहे व्याधियोंका अंदेशा ॥
होवे चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल मारी ।
सारेही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ॥

दोहा ।

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शांति करैं सो जगतमें, वृषभादिक जिनराज ॥ ८ ॥

मन्दाक्रान्ता ।

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगतीका ।
सद्वृत्तोंके सुगुन कहके, दोष ढांकूं सभीका ॥
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपको रूप ध्याऊं ।
तौलौं सेऊं चरन जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊँ ॥ ९ ॥

आर्या ।

तुवपद मेरे हियमें, ममहिय तेरे पुनीत चरणोंमें ।
तवलों लीन रहैं प्रभु, जवलों पाया न मुक्तिपद मैंने ॥१०॥

अक्षरपद मात्रासे, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे ।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुखसे ॥
हे जगबंधु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण वलिहारी ।
मरणसमाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी ॥

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

विसर्जनपाठ ।

दोहा ।

विन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय ।
तुम प्रसादतैं परम गुरु, सो सब पूरन होय ॥ १ ॥
पूजनविधि जानों नहीं, नहिं जानों आह्वान ।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान ॥ २ ॥
मंत्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन जिनदेव ।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव ॥ ३ ॥
आये जो जो देवगन, पूजे भक्तिप्रमान ।
सो अब जावहु कृपाकर, अपने अपने थान ॥ ४ ॥

भाषास्तुतिपाठ।

तुम तरनतारन भवनिवारन, भविकमन आनन्दनो।
श्री नाभिनन्दन, जगत वंदन आदिनाथ निरंजनो ॥१॥
तुम आदिनाथ अनादि सेऊँ, सेय पदपूजा करूं।
कैलासगिरिपर ऋषभजिनवर, पदकमल हिरदै धरूं ॥२॥
तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली।
यह विरद सुनकर सरन आयो, कृपा कीजे नाथजी ॥३॥
तुम चन्द्रवदन सु चन्द्रलच्छन, चन्द्रपुरि परमेश्वरो।
महासेननन्दन जगतवन्दन, चन्द्रनाथ जिनेश्वरो ॥४॥
तुम शांति पांच कल्याण पूजों, शुद्ध मनवचकाय जू।
दुर्भिक्ष चोरी पापनाशन, विघन जाय पलाय जू ॥५॥
तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्यकमलविकाशनो।
श्री नेमिनाथ पवित्र दिनकर, पाप-तिमिरविनाशनो ॥६॥
जिन तजी राजुल राजकन्या, काम सैन्या वश करी।
चारित्ररथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिवरमणी वरी ॥७॥
कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मद कियो।
अश्वसेननन्दन जगतवन्दन, सकलसंघ मंगल कियो ॥८॥
जिन धरी बालकपणे दीक्षा, कमठमान विदारकैं।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रके पद, मैं नमों शिर धारके ॥९॥
तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थनन्दन जगतवंदन, महावीर जिनेश्वरो ॥१०॥
त्रय छत्र सोहैं सुर नृ मोहैं, वीनती अवधारिये।
कर जोड़ि सेवक वीनवैं, प्रभु आवागमन निवारिये ॥११॥

अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहों ।
करजोरि यह वरदान मांगों, मोक्षफल जावत लहों ॥१२॥
जो एक मांहीं एक राजै, एक मांहि अनेकनो ।
इक अनेककी नहीं संख्या, नमों सिद्ध निरंजनो ॥१३॥

चौपाई ।

मैं तुम चरणकमल गुण गाय। बहुविध भक्ति करी मन लाय ॥
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि। यह सेवाफल दीजे मोहि ॥१४॥
कृपा तिहारी ऐसी होय। जामन मरन मिटावो मोय ॥
बार बार मैं विनती करूं। तुम सेवत भवसागर तरूं ॥१५॥
नाम लेत सब दुख मिट जाय। तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय ॥
तुम हो प्रभु देवनके देव। मैं तुम करूं चरणकी सेव ॥१६॥
मैं आयो पूजनके काज। मेरो जन्म सफल भयो आज ॥
पूजा करके नाऊँ शीस। मुझ अपराध छमहु जगदीश ॥१७॥

दोहा ।

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान ।
मो गरीबकी बीनती, सुन लीजो भगवान ॥ १८ ॥
बिन मतलब बहुते अधम, तार दये स्वयमेव ।
त्यों मेरा कारज सफल, कर देवनके देव ॥ १९ ॥
जैसी महिमा तुम विषैं, और धरै नहिं कोय ।
जो सूरजमें ज्योति है, तारनमें नहिं सोय ॥ २० ॥
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमाहिं पलाय ।
ज्यों दिनकर परकाशतैं, अन्धकार विनशाय ॥ २१ ॥

समाप्त ।